पवित्र वेद
और
इस्लाम
धर्म
कल्कि अवतार कौन हैं?
मक्का या मक्तेश्वर?
हज़रत नूह या मनू?
नराशंस कौन हैं?
पुरूष मेधा या बकरी-ईद?
कुरआन और वेदों में क्या समानता है?

पवित्र वेद
और
इस्लाम धर्म

लेखक : क्यू. एस. ख़ान
B.E (Mech)
(ई.मेलः hydelect@vsnl.com)

Printed by
Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
2158-59, M.P Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phone-011-23289786, 23280786, Fax- 011-23279998
E-mail- farid@ndf.vsnl.net.in
Website:- faridexport.com. / faridbook.com

Mr. Q.S. Khan is also author of following books

1. Law of Success for both the Worlds
2. How to prosper Islamic way
3. Yashachi Gurukilli
   (Marathi Translation of "Law of Success for both the Worlds")
4. Introduction to Hydraulic Presses.
5. Design and Manufacturing of Hydraulic cylinders.
6. Study of Hydraulic Valves, Pumps and Accumulators.
7. Study of Hydraulic Accessories
8. Study of Hydraulic Circuit
9. Study of Hydraulic Seals, Fluid Conductor, and Hydraulic Oil.
10. Essential knowledge required for Design and Manufacturing of Hydraulic Presses.
11. Teachings of Vedas and Quran
12. Hajj. Journey Problems and their easy Solutions.

(This book is translated in Urdu, Hindi, Gujarati, and Bengali languages)

पवित्र वेद और इस्लाम धर्म

ISBN No. 978-93-80778-09-9

प्रकाशक

तनवीर पब्लिकेशन

हायड्रो इलेक्ट्रिक मशीनरी प्रिमाइसेस
ए-13, राम-रहीम उद्योग नगर, बस स्टॉप लेन,
एल.बी.एस. मार्ग, सोनापूर, भांडुप (पश्चिम), मुंबई 400078
फोनः 022-2596 5930
मोबाइलः 932006 4026/ 9842064026
फैक्सः 0091-22-25961682
ई-मेलः hydelect@vsnl.com, hydelect@mtnl.net.in
वेब-साइटः www.freeeducation.co.in,
www.tanveerpublication.com
कीमतः 25 रु.

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

इस पुस्तक के लिखने का उद्‌देश्य मुस्लिम और हिंदू भाइयों के बीच राजनीतिक पार्टियों के द्वारा जो द्वेष (नफरत) पैदा की जा रही है उसे कम करना है।

इस पुस्तक में मैंने ऐसे विषयों के बारे में जानकारी देने का प्रयत्न किया है जो दोनों धर्मों में समान हैं।

अगर हम किसी दूर देश में जाऐं और यदि हमें पता चले की हमारे देश का कोई व्यक्ति वहॉं मौजूद है तो उस से बिना परिचय के भी एक अपना पन, सहानुभूति या दोस्ती का एहसास होता है। और यह एहसास एक समान (common) देश से होने के कारण होता है।

समान (common) चीज़ें दोस्ती बढ़ाती हैं। इसी लिए मैं ने दोनों धर्मों के समान विषयों (common topics) की जानकारी देने की कोशिश की है। मुझे आशा है कि यह समानताएं दोनों समुदायों के बीच नफ़रत (द्वेष) कम करने और भाई-चारा बढ़ाने का ज़रिया बनेंगे।

में इस विषय में तज्ञ (Specialist) व्यक्ति नहीं हुँ। इस पुस्तक को पढ़णे के बाद अगर इसमें कुछ गलतियां आपको नजर आएं तो कृपा करके मुझे अवश्य सुचित किजीएगा।

मुझे आशा है कि शांतता-प्रेमी लोग इस पुस्तक को पसंद करेंगे।

क्यू. एस. खान
hydelect@vsnl.com

हिन्दू धर्म के ईश्वरीय ग्रंथ

- हिन्दुस्तानी लोग सारी दुनिया में अपनी मेहनत, ईमानदारी, उच्च शिक्षा, और शराफत के लिए जाने जाते हैं। इसलिए अमेरीका के नासा (National aeronautic & Space organisation of America) में ३५ प्रतिशत वैज्ञानिक हिन्दुस्तानी हैं। और यही कारण है कि अमेरिका, जर्मनी, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड इत्यादी में नये शहरी के रूप में हिंन्दुस्तानियों को प्राथमिकता दी जाती हैं।

  लेकिन इस महान देश के महान नागरिक धर्म के मामले में सारी दुनिया से बिल्कुल अलग क्यों हैं? हर प्रदेश में या हर मज़हब में एक पैगम्बर और एक धार्मिक ग्रन्थ है। लेकिन हिन्दुस्तानी लोग यह विस्तार से बता नहीं पाते कि उनके पैगम्बर कौन है और उनके ईश्वरी ग्रंथ कौनसे हैं। ऐसा क्यों?

- लेकिन यह सत्य नहीं है। इस महान देश में भी अनेक पैगम्बर आए और उनके पवित्र ग्रंथ भी हैं। लेकिन दुर्भाग्य से उनका धार्मिक ज्ञान आम लोगों तक पहुँचने में बहोत सारी बाधाएं आती रही। इसलिए जैसे-जैसे काल में गुजरते गया आम लोगों का दोनों से (पैगम्बर और ईश्वरी ग्रंथ) संबध टुट गया और वे उनकी पहचान भूल गए।

  इस पुस्तक में हम पैगंबर और ईश्वरी ग्रंथों कि जानकारी लेंगे।

- सन् १८०० ई. तक वेद लिखित रूप में न थे। इसे पंडितों ने ज़बानी (Memorise) याद कर रखा था। धार्मिक ज्ञानपर पुरोहित समाज का पुरा नियंत्रण था। इस कारण सिर्फ उन्हींको धार्मिक ज्ञान सिखने का अधिकार था। उनके व्यतिरिक्त समाज के अन्य लोगों को धार्मिक ज्ञान सिखने का अधिकार नहीं था।

  भारत में पुरोहित समाज कि संख्या केवल ५ प्रतिशत हैं। लेकिन इन पुरोहित समाज कि स्व-संरक्षण प्रणाली (Social Security System) इतनी जबरदस्त और परिणामकारक थी कि ३००० सालों तक हर धार्मिक बातों पर उनका पुरा नियंत्रण था।

  इसमें कोई संदेह नहीं कि 'पुरोहित समाज' को इससे मजबुत आर्थिक और सामाजिक संरक्षण मिल गया। लेकिन ९५ प्रतिशत आम लोग जो उनके उपर निर्भर थी, वह धार्मिक ज्ञान से वंचित हो गए। और अपने धार्मिक ग्रंथ और पैगम्बरों कि पहचान भुल गए। इस कारण पवित्र ग्रंथ उनको याद नहीं रहे। यह बात तो एक विशाल देश की भारी मात्रा में होनेवाली हानी हैं।

  अब जब इस नए युग में 'पुरोहित समाज' आर्थिक रूप से पूजा पाठ पर निर्भर नहीं हैं। तो अब इन्होंने धर्म का सत्य ज्ञान लोगों तक पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए।

हम हिन्दु धर्म की ईश्वरीय ग्रन्थ को कैसे पहचानें ?

- तीन ग्रन्थों को उनके मानने वाले ईश्वरीय ग्रन्थ स्वीकार करते हैं। वह है; पवित्र कुरान, बाइबल और तौरात। इन तीन ग्रन्थों में ईश्वर व्दारा स्वर्ग-नर्क, प्रलय (कयामत) तथा मरने के बाद के जीवन का एक समान विवरण हैं। और इन सभी ग्रन्थों में ७० प्रतिशत एक समान धार्मिक शिक्षा हैं।

  इसी आधार पर यदि हम हिन्दू धर्म के ग्रन्थों का अध्ययन करें, तो ऋग्वेद और अन्य वेदों में भी हमें ईश्वर, स्वर्ग-नर्क, प्रलय (कयामत) तथा मरने के बाद के जीवन का वर्णन भी मिलता है। और भारतीय लोग भी वेदों को आदिज्ञान, आदिग्रंथ, अपुरूषी मानते हैं इसलिए हम ऋग्वेद को ईश्वरी ग्रंथ मान सकते हैं।

उदाहरणतयः

ईश्वर के बारे में ऋग्वेद में है कि,:-

(१) ईश्वर ही पृथ्वी और आकाश का निर्माण कर्ता (मालिक) है।(ऋग्वेद १:१६:७)

(२) हे ईश्वर! तू ही, पहला है और तू ही आखरी है तथा सर्वज्ञानी है।(ऋग्वेद २:३१:१)

(३) हे ईश्वर! तेरा ही प्रत्येक वस्तु पर नियंत्रण है।(ऋग्वेद २:१६:१०)

स्वर्ग-नर्क के बारे में ऋग्वेद में है कि:-

(१) पापियों के लिए अत्यन्त गहरी खाई (नर्क) बनाई गयी है।(ऋग्वेद ४:५:५) आचार्य सयान के अनुसार अत्यन्त गहरी खाई का अर्थ नर्क है।

(२) पाक (शुद्ध) और निष्पाप लोगों के लिए स्वर्ग हैं। शुद्ध होने के बाद जो (नया) शरीर उन्हे प्राप्त होगा उसमे हड्डीया नहीं रहेगी, उनके शरीर को आग नहीं जलाती और ज्ञान प्राप्ती के पश्चात वह प्रकाशमयी दुनीया में प्रवेश करेंगे। स्वर्ग की दुनिया में उनके लिए बहुत आनंद (Pleasure) हैं। (अथर्ववेद ४:३४:२)

(३) तुम्हारे अनुयायी ईश्वर की प्रार्थना उदार हृदय से करेंगे और तुम्हें स्वर्ग में आनंद प्राप्त होगा। (ऋग्वेद १०:६५:१८)

(४) अपनी सत्यनिष्ठा और करूणामय स्वभाव के कारण तुम वह स्थान देखोगे, जो अत्यन्त विस्तृत स्थल है। (ऋग्वेद १:२१:६)। आचार्य सयान के अनुसार अत्यन्त विस्तृत स्थल का अर्थ स्वर्ग है।

मरने के पश्चात के विषय में ऋग्वेद में है कि :-

(१) जैसे शैतान पुराने जमानेसे हैं उसी प्रकार पुर्नजन्म की बात भी पुराने जमाने से कहते आएं है। पुर्नजन्म जैसे गलत श्रद्धा (Wrong belief) रखनेवाले गुन्हगार लोगों पर हावी हो, उनको (मगलुब) (Supress) करो। मृत्यु की देवी उम्र कम कर रही है। (यानी आवागवन पर लोगों का विश्वास प्राचीन काल से है, मगर यह गलत है। इसे रोको और जल्दी करो, जिंदगी का वक्त खत्म होते जा रहा है।)

(मासिक पत्रिका कांती ८-७-१९९९, ऋग्वेद १:९२:१०)

(२) वह कयामत को भुलाकर और ज्ञान और बुद्धी को हकारात से ठुकराकर (Neglect as useless thing) हमारे तय किए हुए हद (Boundry) को फलांग रहें है। (ऋग्वेद १-४-३) (यानी कयामत को और मरने के बाद के जीवन को गलत कहना ईश्वर के कानून को तोड़ने के बराबर है।)

(३) अपने दिल के लिए मीठी जबान हासिल करके लोग अपने शक को गिनते है। (अर्थात लोग ईश्वर का ज्ञान पाकर अपने गुनाहों को गिनते है या पाप न हो इससे बचने कि कोशिश करते है) देवताओं का इन्कार करनेवाले लोगों से कहो, तुम्हें अमर जीवन मिलना यकीनी है। (ऋग्वेद १-४४-६)

तो इस तरह साबित हुआ कि वेदों में भी एक ईश्वर, स्वर्ग, नर्क, मरने के बाद के जीवन का वर्णन है।

हिन्दू धर्म के माननेवाले भी वेदों को आदि ज्ञान, श्रुतिज्ञान अथवा अपुरूषि कहते हैं। अपुरूषि यानी जिसे किसी पुरूष ने नहीं लिखा है। इसलिए हम वेदों को ईश्वर व्दारा अवतरित ग्रन्थ कह सकते हैं।

लेकिन वेदों में ऐसे भी कुछ से श्लोक हैं, जो दुसरे ईश्वरीय ग्रन्थों में नहीं है और ना ही ऐसे श्लोक ईश्वर कि महानता के बराबर है। इसलिए ऐसे श्लोक को हम ईश्वरीय नहीं कह सकते हैं। उदाहरण के तौर पर ऋग्वेद का एक श्लोक है कि 'एक शुद्र को अच्छी सलाह नहीं देनी चाहिए।' (ऋग्वेद १४:५३:३)

इसलिए सामान्यतः(आम तौर पर) हम वेदों को हिन्दू धर्म के ईश्वरीय ग्रन्थ कह सकते हैं, लेकिन इन ग्रन्थों में भी खास करके उन श्लोको को ही हम ईश्वर व्दारा प्रगट किए गए श्लोक कहेंगे, जिसमें एक ईश्वर, स्वर्ग नर्क, मरने के बाद के जीवन, प्रलय (कयामत) और सत्कर्म करने का वर्णन है।

ऐसे श्लोक जो ईश्वरीय नहीं लगते हैं, उन श्लोंकों के बारे में विद्वानों का मत है, कि जब स्मरण शक्ति से वेदों को ग्रन्थ की शक्ल में लिखा जा रहा था, तो उस समय पुरोहितों के भुल (Confusion) के कारण वेदों के असली श्लोक के साथ पुरोहितों के व्यक्तिगत विचार और नियम भी सम्मिलित हो गए।

(Ref. Griffth in his book "Hymns of Rig Ved" Volume-1)

पवित्र वेद एक ज्ञान का सागर है। इस में हजारो ऐसे उपदेश हैं जिस को समझने और अमल करने से जीवन बदल सकता है। आइये, इस महान सागर से कुछ मोती हम भी चुन लें।

१. (उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम)

यह मेरा है, यह तेरा है ऐसी सोच तुच्छ (नीच) लोग रखते है, 'यह दुनिया मेरा परिवार है' ऐसी सोच केवल उच्च्य विचारों से प्रेरित लोग ही करते हैं।

२. सत्य मार्ग बिल्कुल आसान है।(ऋग्वेद १३/३/८)

३. हर सांस जुआरी को श्राप देती है। उसकी पत्नी उसका त्याग करती है। और कोई भी जुआरी को पैसा नहीं देता।(ऋग्वेद १०/३४/३)

४. ऐ जुआंरियों! खेती करो और जुआं खेलना बंद करो और खेत से जो भी आप कमाऐंगे उस पर संतोष करो। (ऋग्वेद १०/३४/१३)

५. दारू पीने वाले शराबी स्वयं अपने पर नियंत्रण खो देते हैं। वे ऐसे कार्य करते हैं जिससे हे ईश्वर! आपको क्रोध आता है इसलिए आप भी ऐसे लोगों की सहायता नहीं करते। (ऋग्वेद ०८/२१/१४)

६. हे ईश्वर! जो लोग ज्यादा सूद प्राप्त करने के उद्देश्य से दुसरों को कर्ज़ देते हैं, उन कर्ज़ देने वालों की सारी संपत्ती आप जप्त कर लेते हैं।

(ऋग्वेद ०३/५३/१४)

७. (ऐ मनुष्यों) तुम अपने से बड़ों का आदर करों और अपने मन में अच्छे विचार उत्पन्न करो। आपस में मतभेद मत करो, दोस्ती करो और एक साथ रहो। अच्छे कर्म करते हुए मेरे पास आओ, मैं तुम में समझ और अच्छे विचार पैदा करूंगा। (ऋग्वेद १०/१६१/३)

८. ईश्वर ने तुम्हें स्त्री बनाया है, इसलिए ध्यान रहे कि तुम्हारी नज़र हमेशा नीची रहें। पांव नज़दीक-नज़दीक रखो और ऐसे कपड़े पहनो जिस से कोई तुम्हारा शरीर ना देख पाए।

(ऋग्वेद ०८/३३/१६)

९. बेटे को अपने पिता का सहयोगी होना चाहिए और माँ का आज्ञाकारी होना चाहिए।

(अथर्ववेद ०३/३०/०२)

१०. दान करनेवाले दानी लोग अमर हो जाते हैं। उन्हें ना किसी चीज़ का ड़र होता है ना दुःख। विनाश से उनको संरक्षण मिल जाएगा। दान करने से ये दानी लोग दुनिया में सफल होते हैं और मृत्यु के पश्चात स्वर्ग प्राप्ति करते हैं।

(अथर्ववेद १०/१६७/०८)

११. ऐ दोस्तों! एक ईश्वर के सिवा अन्य किसी की भी भक्ति न करें, तो आप की हिंसा से रक्षा होगी। (ऋग्वेद ०८/०१/०१)

१२. जो अपनी से मेहनत कमाया हुआ खाना अकेले ही खाते हैं (दुसरों को दान नहीं करते) तब वे गलत मार्ग से कमाया हुआ खाना खाने जैसा ही है। (ऋग्वेद १०/११७/०६)

१३. हे ईश्वर! आप सत्कर्म आचरण करनेवालों को अच्छा उपहार देते है और यही आपकी विषेशता है। (ऋग्वेद ०१/०१/०६)

१४. हे ईश्वर! यह दुनिया आपकी महानता के कारण थर थर कांपती हैं। गलत कर्म करनेवाले मनुष्य तेरे ही प्रकोप के कारण शिक्षा प्राप्त करते है। सदाचारी मनुष्य की आपके आशीर्वाद से प्रशंसा होती है। (अथर्ववेद ०१/८०/११)

१५. ऋग्वेद कहता है, ''ऐ माननेवालो, ईश्वर के अलावा किसी की भी भक्ति मत करो।''

(ऋग्वेद ०८/०१/०१)

१६. अथर्ववेद कहता है, ''ईश्वर एक ही है।''

(अथर्ववेद१०/६/२६)

१७. ''सारे मानवप्राणी मनु की संतान हैं।''

(ऋग्वेद ०१/४५/११)

१८. ''मनुष्य को सत्य के मार्ग पर नम्रतापूर्वक चलना चाहिए।'' (ऋग्वेद १०/३१/०२)

१९. परिश्रम के बिना देवताओं को भी ईश्वर का आशीर्वाद नहीं मिलता।(ऋग्वेद ०४/३३/११)

२०. ईश्वर मानवजात को सुमधुर विचार, सहनशक्ति और द्वेषरहित भावना से पुरस्कृत करेंगे। जैसे गाय अपने बछड़े पर प्रेम करती है वैसा ही प्यार एक दूसरे पर करने की सूचना ईश्वर देता है। (अथर्ववेद ०३/३०/०१)

२१. पत्नी को हमेशा पति से मधुर वाणी में बात करनी चाहिए। (अथर्ववेद०३/३०/०२)

इस पुस्तक में हम पवित्र वेदों के ८० ऐसे श्लोक का अध्ययन करेंगे, जो बिल्कुल कुरआन के श्लोक जैसे है, या समान हैं।

▾ ▾ ▾ ▾ ▾ ▾ ▾

हिन्दू धर्म के पैगम्बर कौन हैं?

हजरत आदम (अलैहिस्सलाम) के विषय में :

भविष्य-पुराण में कहा गया है कि आदम और हव्वा को विष्णु ने गीली मिट्टी से पैदा किया। प्रदान नगर (जन्नत) के पुर्व हिस्से में, ईश्वर द्वारा बनाया गया ४ स्केवर कौस का एक बहुत बड़ा जगंल था।(कौस किलोमिटर से बड़ा होता है) अपनी पत्नी (हव्वा) को देखने की बेताबी से आदम गुनाहवाले वृक्ष के नीचे गए। तभी सांप की शक्ल बनाकर वहाँ कली (शैतान) प्रकट हुआ। उस चालाक दुश्मन के ज़रिए आदम और हव्वावती ठग लिए गए और उस विषवृक्ष के फल को आदम ने खा लिया और उन्होंने विष्णु के हुक्म को तोड़ डाला परिणाम स्वरूप उनको पृथ्वीपर भेज दिया गया। उन दोनों को बहुत सी औलादें हुई। आदम की उम्र ६३० साल थी। (भविष्य पुराण)

यही बात कुरआन में भी लिखी है और बाइबिल में भी। इस लिए हम यह कह सकते हैं, कि हज़रत आदम हिन्दू धर्म के भी पैगम्बर हैं।

हजरत नूह (मनु) के विषय में :

मार्कण्डेय पुराण, भविष्य पुराण, मत्स्य पुराण में है, कि मनु के काल (युग) में एक बहुत बड़ा बाढ़ (Flood) आया था। जिस में केवल मनु और एक ईश्वर को मानने वाले लोगों को छोड़कर सभी लोग इस बाढ़ में डूबकर मर गए थे।

नूह (मनु) ने अपने हाथों से एक नाव बनायी थी और उसमें वह खुद सवार हुए और एक-ईश्वर को मानने वालों को सवार कर लिया और हर जात के प्राणियों के दो-दो जोड़ों को सवार किया। यही लोग जिंदा बचे और सारी दुनिया इस सैलाब में डूब गयी।

यही बात कुरआन में भी लिखी है (पवित्र कुरआन ११-२५-४८) यही बात बायूबल में भी लिखी है (जेनिसिस ६-८)

इसलिए हम कह सकते हैं कि कुरआन में उसी पैगम्बर(मनु) को हज़रत 'नूह' कहा गया है। बायबल में जिसको Prophet Noah कहा गया है और भविष्य पुराण में जिसे नूह कहा गया है, वह एक ही इन्सान हैं और इन्हीं को हिन्दू धर्म की अन्य ग्रन्थों में 'मनु' के नाम से जाना जाता है।

A.J.A. Dubois ने अपनी किताब (Hindu Manners, customs & ceremonies) में कहा है, कि जैसे मुसलमान हज़रत मुहम्मद (स.अ.) के अनुयायी (मानने वाले) हैं और जैसे, इसाई हज़रत ईसा के अनुयायी हैं, वैसे ही हिन्दू धर्म के माननेवाले हज़रत नूह या मनु के अनुयायी हैं।

अपनी बात को साबित करने के लिए वो कहते हैं, हर धर्म के लोग जिस पैगम्बर को मानते हैं वह उनके बनाये हुए नियम को भी मानते हैं। इसाई बाइबल को मानते हैं, मुसलमान कुरआन और हदीस शरीफ को मानते हैं। (हदीस में हज़रत मुहम्मद (स.अ.) के आदेश और उनके जीवन गुज़ारने का तरीका बयान किया गया है।) इसी तरह हिन्दु धर्म में 'मनु स्मृति' ही धार्मिक कानून की ग्रन्थ है और यह मनु द्वारा लिखीत है।

और दूसरा सबूत यह है कि हर धर्म के अनुयायी जिस पैगम्बर को मानते हैं, वह महत्वपूर्ण घटनाओं को उन पैगम्बरों के समय से गिनते हैं, जैसे कि इसाई अपना साल हज़रत ईसा (स.अ.) की जन्मतिथि (पैदाईश) से गिनते हैं। मुसलमान अपना साल हज़रत मुहम्मद (स.अ.) के मक्का से मदीना शहर में हिजरत (प्रवासन, Migration) के समय से गिनते है। इसी तरह हिन्दू धर्म में मनु के समय आये हुए बाढ़ का बहुत महत्व है। वह अपने महत्वपूर्ण घटनाओं को इसी

बाढ़ के बाद से गिनते हैं। उदाहरण के रूप में वह कहते हैं, कि 'कलयुग' की शुरूआत इसी बाढ़ के समाप्त हो जाने के बाद से शुरू हुई।

हजरत इब्राहीम (अ.स.) के विषय में :

- "पुरूष मेधा और बकरा ईद" इस पाठ में हम पढेंगे कि हज़रत इब्राहीम (अ.स.), हज़रत इस्माईल (अ.स.) और हज़रत इसहाक (अ.स.) के बारे में अथर्ववेद में लिखा हुआ है। इस लिए इन तीनों को भी हिन्दू धर्म के मानने वाले अपना पैगम्बर कह सकते हैं।

एक स्पष्टीकरण: -

इस्लाम धर्म में पैगंबरोंको 'नबी' कहा जाता हैं उसी प्रकार हिंदु धर्म के ईश्वरी ग्रंथों में पैगंबरोंको 'मनु' कहा जाता हैं। हिंदु धर्म के ईश्वरी ग्रंथों में १४ व्यक्तियों को 'मनु' कहा गया है। हजरत आदम को भी मनु कहा हैं। (श्लोक १-४५-११) हज़रत आदम प्रथम मनु थे उसके बाद बाढ़ के काल के मनु सातवे मनु थे। दुनीया के सभी धर्मां के ईश्वरी ग्रंथों में एकही बाढ़ का वर्णन है और उस बाढ़ में एकही नांव का वर्णन है जिसमें एक ईश्वर को माननेवाले (अनुयायी) अपने एक पैगम्बर के साथ बच गए थे।

तो इस महान भारत देश के महान लोग भी दुनिया के अन्य लोगों से अलग नहीं हैं, अन्य धर्मों की तरह इस धर्म में भी पैगम्बर हैं और उनकी भी धार्मिक ईश्वरीय ग्रन्थ हैं। मगर यह भी सत्य है, यह लोग इसे स्वयं भी नहीं पहचानते और केवल देवमलाई कथाओं में मग्न हैं।

▼▼▼▼▼▼▼

"Hindu manners, customs and ceremonies"
Written by: Abbe. J.A. Dubois
Publisher: Low Price Publications
B-2, Wardhaman Palace,
Nimri Commercial Centre, Ashok Vihar, Phase-IV,
Delhi - 110052
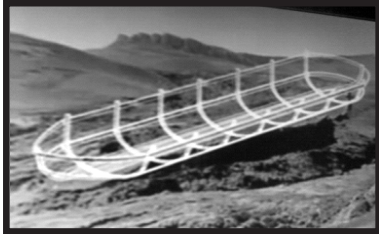
Expert trying to analyse the boat of Manu (Noah)
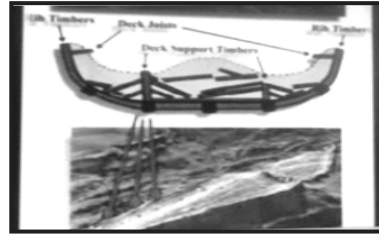
Analysing the boat impression
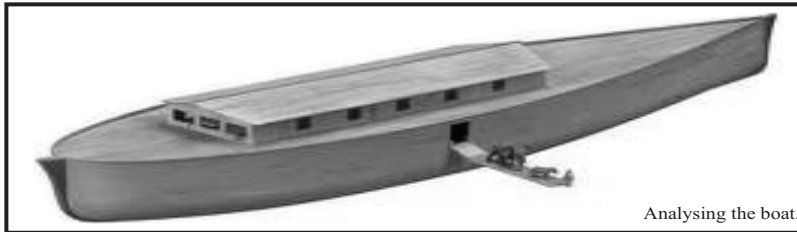
Analysing the boat.

पुरूष-मेधा या बकरी-ईद

एक ईश्वर को लोग अनेक नामों से याद करते हैं जैसे; अल्लाह, मालिक, रहीम, रहमान, इत्यादि। वास्तव में ईश्वर के कुल ९९ नाम हैं। इस में से कुछ नाम उसके विशेष गुणों के लिए हैं। जैसे; 'ख़ालिक़' अर्थात पैदा करने वाला (ईश्वर)। क्योंकि ईश्वर के सिवाय और कोई दुसरा पैदा करने वाला नहीं है। 'मालिक' यानी ईश्वर के सिवाय इस संसार का और कोई मालिक नहीं है।

लेकिन ईश्वर के कुछ ऐसे नाम भी हैं, जो उसकी स्वभाव (Features) के अनुसार हैं जैसे; 'रहीम' अर्थात अत्याधिक दया करने वाला। 'ग़फ़ूर' अर्थात क्षमा करने वाला।

कभी कभी ईश्वर अपने उन नामों से जो उसके गुणों के अनुसार है, उन पैगंबरोंको भी याद करता है, जिनमें वह गुण है। जैसा कि पवित्र कुरआन में हज़रत मुहम्मद (स.अ.) को 'रहीम' और 'ग़फ़ूर' के नाम से याद किया है। (पवित्र कुरान १०:१२८) क्योंकि हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत ही दयालू और क्षमा करनेवाले थे।

इसी प्रकार हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में ईश्वर ने बहुत से पैगंबरों को अपने ही नामों से याद किया है, उदाहरणतः हरिवंश पुराण में उल्लेख है कि ब्रह्मा ने अपने शरीर के दो भाग किए। एक भाग पुरूष का तथा दूसरा भाग स्त्री का बन गया।

यही बात हदिस और बाइबल में भी है, कि हज़रत आदम (अ.स.) के शरीर के बायीं ओर (Left Side) से हज़रत हव्वा को पैदा किया गया।

तो हरिवंश पुराण में जिसे ब्रम्हा कहा गया है, वह वास्तव में ईश्वर स्वयं नहीं, हज़रत आदम (अ.स.) हैं।

इ सी प्रकार अथर्ववेद में हज़रत इब्राहीम (अ.स.) को ब्रह्मा कहा गया है और लिखा है कि ब्रम्हा (अ.स.) ने अपने पुत्र अथर्वा की बलि (क़ुर्बानी) दी। यही बात पवित्र कुरान में है, कि हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने अपने पुत्र हज़रत इस्माईल (अ.स.) की क़ुर्बानी दी थी।(पवित्र कुरान ३७:१०५) और इसी प्रकार बाइबल में भी हज़रत इब्राहीम (अ.स.) के ब्दारा किए गए कुर्बानी का वर्णन है (Genesis-22)। तो अथर्ववेद में जिसे ब्रह्मा कहा गया है वह स्वयं ईश्वर नहीं बल्कि हज़रत इब्राहीम(अ.स.) हैं।

आपको यह पढ़कर बहुत आश्चर्य हुआ होगा इसलिए हम इस प्रसंग पर कुछ और वर्णन प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। हज़रत इब्राहीम (अ.स.) को सभी धर्म के लोग हज़रत आदम और हज़रत नूह के पश्चात बहुत से पैगंबरों के पिता मानते हैं और बहुत आदर करते हैं।

हज़रत इब्राहीम (अ.स.) एक मूर्तिकार के पुत्र थे। बचपन से ही वह एक ईश्वर को मानते थे। एक बार जब शहर के सारे लोग शहर से बाहर मेले में गये हुए थे, तो उस समय हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने सभी देवी, देवताओं की मूर्तियों को तोड़ डाला। इस घटना से क्रोधित होकर राजा ने उन्हें कठोर दण्ड देने का निश्चय किया, तथा एक विशालकाय अग्निकुंड में फेंकने की आज्ञा दी लेकिन ईश्वर ने अपने इस सत्यवान पैगंबर को अग्नि में जलने से बचा लिया और अग्नि उनका कुछ न बिगाड़ सकी।

इस घटना के पश्चात वह फिलिस्तीन शहर में जाकर बस गये। और एक ईश्वर को मानने और उसके बनाये हुए नियम पर चलने का उपदेश लोगों को देने लगे। ८० वर्ष की आयु में, ईश्वर द्वारा उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति हुई। जिसका नाम उन्होंने इस्माईल रखा।

जब हज़रत इस्माईल (अ.स.) बहुत छोटे थे, तब

ईश्वर के आदेश के अनुसार हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने हज़रत इस्माईल (अ.स.) और अपनी पत्नी हज़रत हाजरा (अ.स.) को मक्का शहर में ले जाकर छोड़ दिया। जब हज़रत इस्माईल (अ.स.) कुछ बड़े हुए, तो आप (हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने एक स्वप्न देखा कि आप अपने सबसे प्रिय चीज़ की कुर्बानी ईश्वर की राह में कर रहे हैं। पैगम्बर का स्वप्न कभी झूठा नहीं होता है, इसलिए वह समझ गये कि उन्हें अपनी सबसे प्रिय चीज़ की कुर्बानी करनी ही है और उन की सब से प्रिय चीज़ उन का पुत्र है।

हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने अपने स्वप्न के बारे में हज़रत इस्माईल को कह सुनाया और उनकी राय पूछी। हज़रत इस्माईल ने अपने पिता को उत्तर दिया, ''जो आज्ञा, ईश्वर ने आपको दि है, उसे अवश्य करिये और आप मुझे धैर्य (सब्र) रखने वालों में पाऐंगे। (पवित्र कुरआन ३७:१०२)

जब हज़रत इब्राहीम (अ.स.) अपने साथ हज़रत इस्माईल (अ.स.) को मक्का शहर के बाहर मिना की पहाड़ी पर ले कर चले, तो शैतान ने तीन बार उन्हें भटकाने (बहकाने) की भरपूर कोशिश की, तब तीनों बार हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने उस शैतान को पत्थर मार कर भगा दिया। मिना पहुंचकर हजरत इस्माइल ने कहा की आप मेरे हाथ-पैर बांध दो। वरना मेरे तडपने से आप को मुश्किल होगी। फिर उन्होंने अपने प्रिय पुत्र हजरत इस्माइल (अ.स) के हाथ-पैर को बांध दिया। फिर उन्होंने अपनी आँख पर पट्टी बांध दी क्योंकी वह चाहते थे के पुत्र मोह से उनका हाथ न कांपे। फिर उन्होंने हज़रत इस्माईल के गले पर छुरी चलाने की भरपूर कोशिश की। किन्तु ईश्वर को हज़रत इब्राहीम (अ.स.) और हज़रत इस्माईल की केवल परीक्षा लेनी थी, जान नहीं लेनी थी। इसलीए ईश्वर के आदेश से हज़रत जिब्रील (अ.स.) ने स्वर्ग से एक दुम्बा (मेंढ़ा) लाकर हज़रत इस्माईल की जगह पर लेटा दिया और हज़रत इस्माईल(अ.स.) के बदले दुम्बे की कुर्बानी हो गयी।

इस पूरे घटना क्रम को अथर्ववेद में 'पुरूष मेधा' के नाम से याद किया जाता हैं। इस छोटी सी पुस्तक मैं हम सारे श्लोक नहीं लिख सकते है उसमें से एक श्लोक हम यहाँ लिखते है। इस घटना में हजरत इस्माईल (अ.स.) (अथर्व) ने हजरत इब्राहीम(अ.स.) (ब्रम्हा) की जो बात मान ली थी। वह श्लोक इस प्रकार है।

मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हदयं च यत्।
मस्तिश्कादूर्ध्व पैरयत् पवमानोधि शीर्शतः
(अथर्ववेद १०:२:२६)

अर्थात अथर्वा ने अपने पिता ब्रह्मा की बात दिल और जान से मान लिया और पवित्रता उनके चेहरे पर झलक रही है।

तो अथर्ववेद में जिसे ब्रह्मा के नाम से याद किया गया है वह हज़रत इब्राहीम (अ.स.) हैं। अथर्वा के नाम से जिसे याद किया गया है वह हज़रत इस्माईल(अ.स.) हैं। अंगिरा के नाम से जिसे याद किया गया है वह हज़रत इस्हाक़ (अ.स.) हैं। इसलिए जैसे यह तीनों पैगंम्बर ईसाई, यहूदी और मुसलमानों के पैगम्बर हैं, उसी तरह यह तीनों पैगंम्बर हिंदू धर्म के पैगंम्बर भी हुए। "पुरूष मेधा" अर्थात मनुष्य की कुर्बानी है। इसी को आज मुस्लिम समाज 'बकरा ईद' के नाम से मनाते हैं।

जिस जगह यह घटना घटित हुई वह स्थान मिना (मक्का शहर के नज़दीक) है, जहाँ हाजी हज के लिए जाते हैं और वहॉं पर तीन दिन खैमे (Tent) में रहते हैं और ईश्वर कि प्रार्थना करते है। जिस जगह हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने शैतान को पत्थर मारा था, उसी स्थान पर हाजी आज भी कंकरी (छोटे पत्थर) मारते हैं।

(अधिक जानकारी के लिए A.H. Vidyarthi की पुस्तक Muhammad in Hindu Scripture (Adam Publications) का अध्ययन करें ।)
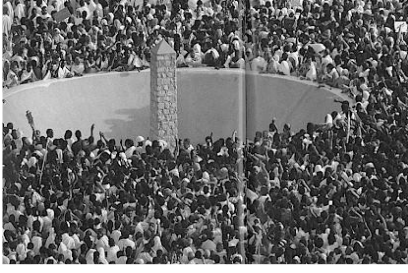
हज यात्री इस विशेष खंभे को पत्थर मारते हुए (इसी जगह शैतान ने हजरत इब्राहीम (अ.स.) को गुमराह करने की कोशिश की थी।)

मीना जिसका वर्णन अथर्ववेद में है और इसी जगह इब्राहीम (अ.स.) ने इस्माईल अथवा अथर्व की कुर्बानी देने की कोशिश की थी।

इसी जगह हज यात्री तीन दिन तंबु में रहकर प्रार्थना करते हैं।

▼▼▼▼▼▼▼

मक्का या मक्तेश्वर

सनातन धर्म (हिंदू धर्म) की धार्मिक किताबों में मक्का शहर और काबा शरीफ को कई नामों से याद किया गया है। इन में से कुछ इस तरह हैंः

१. इलास्पदः

एल, एलिया, इला, इलाया, अल्लाह आदि यह सब नाम अलग-अलग धर्मों में ईश्वर के लिए बोले जाते है। पद यानी जगह (place)। इलास्पद यानी ईश्वर की जगह.

२. इलायास्पदः

इसका अर्थ भी ईश्वर की जगह है। पंडित श्रीराम शर्मा अचार्या ने वेदों के अपने हिंदी अनुवाद में इस का अनुवाद 'पृथ्वी का पवित्र स्थान' किया है।

३. नाभा प्रथिव्याः

नाभि का अर्थ है नाफ (Centre/Naval) और प्रथिव्या यानी धरती। नाभा प्रथिव्या यानी धरती की नाफ या धरती का केंद्र या Centre of earth.

- इलायास्पद पढेवयं नाभा प्रथिव्या अधि ।।

(ऋग्वेद ३-२६-४)

इस का अर्थ है कि धरती का पवित्र स्थान यानी ईश्वर का घर, पृथ्वी के केंद्र पर है।

४. नाभि कमलः

परम पुराण में कहा गया है कि नाभि कमल वह तीर्थ स्थान है जहॉ से सृष्टी का निर्माण हुआ।

हरी वंश पुराण (पंडित श्रीराम शर्मा अचार्या द्वारा अनुवादित, पृष्ठ ४६६-५०१, भाग-२) में भी यही बात कही गई है और यही बात 'हदीस शरीफ' में भी कही गयी है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ी.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि आकाश और पृथ्वी के निमार्ण के ज़माने में पृथ्वीपर चारों तरफ पानीही-पानी था तो उस पानी की सतह (surface) से सब से पहले काबा का स्थान प्रकट हुआ, फिर धरती उस के नीचे से चारों तरफ फैलती गई। (मअ़रिफते काबा, पृष्ठ-५)

५. आदि पुष्कर तीर्थः

पदम पुराण में है कि धरती का सब से प्राचीन, सब से पवित्र और सब से लाभदायक तीर्थ स्थान आदि पुष्कर तीर्थ है। पदम पुराण ने इस पवित्र स्थान की यात्रा का महत्व इन शब्दों में उल्लेख किया है।

- जो दिल से आदि पुष्कर तीर्थ जा कर सेवा की चाह करता है उस के तमाम पाप धुल जाते हैं।
- जो आदि पुष्कर तीर्थ की यात्रा करता है वह अनंत पुण्य (Too Much Eternal Blessings) का हक़दार होता है।
- सब तीर्थों में आदि पुष्कर ही प्राचीन तीर्थ स्थान है। आदि पुष्कर तीर्थ जा कर स्नान करने से मुक्ति मिलती है।

(ज़म ज़म का कुआँ काबा शरीफ से ५० फुट की दूरी पर है और रोज़ाना लाखों लीटर पानी सऊदी हुकूमत इस से निकालती है । जिसे हाजी पीते हैं और देश-वापसी के समय अपने साथ ले जाते हैं।)

६. दारूकाबनः

ऋग्वेद में लिखा है कि, "ऐ ईश्वर की प्रार्थना करने वालो! दूर देश में समुद्र-तट के करीब जो दारूकाबन है वह इन्सान का बनाया हुआ नहीं हैं।

इस में ईश्वर की प्रार्थना कर के उस की कृपा से स्वर्ग में दाखिल हो जाओ।"(ऋग्वेद १०-१५५-३)

(पवित्र काबा को पहली बार फ़रिश्तों ने बनाया था। मक्का शहर भारत देश से दूर और समुद्र तट के पास है।)

७. मक्तेश्वरः

Sir M. Monier Willium की संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी में मक्तेश्वर का अर्थ है The city of Makkah/Yagya यानी मक्का शहर और कुर्बानी की जगह।

मक्का में ईश्वर का घर तो है ही, इस जगह हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने हज़रत इस्माईल (अ.स.) की कुर्बानी भी दी थी, जिसे अथर्ववेद में 'पुरूष मेधा' के नाम से लिखा गया है और हर साल हज के दिन लाखों जानवरों की कुर्बानी भी दी जाती है।

- अब तक हम ने अलग अलग ग्रंथों में मक्का शहर और पवित्र काबा को किस नाम से याद किया गया है, इस का अध्ययन किया। अब अथर्ववेद में काबा शरीफ के बारे में क्या लिखा है इस का अध्ययन करते हैं।

अथर्ववेद में काबा शरीफ की प्रशंसा और वर्णन इस प्रकार है।

- ऊर्ध्वो नु सृष्टा ३ स्तिर्यंङः नु सृष्टा ३ः सर्वादिशः पुरूष आ वभूवॉं३।
  पूरं यो ब्रह्मणों वेद यस्याः पुरूष उच्यते ।। (अथर्वेद १०:२:२८)

अर्थातः चाहे उस की दीवारें ऊंची और सीधी हों (या ना हों), मगर ईश्वर उस की हर दिशा में नज़र आता है। जो ईश्वर की प्रार्थना करते हैं वह यह जानते हैं।

काबा शरीफ Cubical नज़र आता है। मगर यह perfect cubical नही हैं। इस के हर दिवार का size अलग अलग है। मगर यहाँ ईश्वर की ऐसी कृपा है की जो इसे देखता है वह बस देखते रह जाता है। और उसे इसको देखने में आनंद मिलता है और लोगो का इस के चारों तरफ परिक्रमा करने का मन होता है और उस में भी वह आनंद महसूस करते हैं।

- यो वै तां ब्रह्मणों वेदामृतेनावृतां पुरम।
  तस्मै ब्रह्म च ब्राह्माश्च चक्षुः प्राण प्रजां ददुः
  (अथर्वेद १०:२:२९)

अर्थातः जो इस घर को पहचानता है (और इस के पास प्रार्थना करता है) उस पर ईश्वर की कृपा होती है, और हज़रत इब्राहीम (अ.स.) (ब्रम्हा) की दुआ उसके साथ रहती है। उसे ईश्वर ज्ञान, सम्मती, खुश्हाली और संतान देते है।

- अष्टाचक्रा नवव्दारा देवानां पूरयोध्या।
  तस्यां हिररायः कोशः स्वर्गो ज्योतिषवृतः
  (अथर्वेद १०:२:३१)

अर्थात फ़रिश्तों के रहने की इस जगह के चारों तरफ़ आठ सर्कल (Circle) हैं और नौ दरवाज़े हैं, इसे कोई विजय नहीं कर सकता। इस में अमर जीवन हैं और दिव्य ज्योती इस से हर तरफ़ फैलती रहती है।

श्लोक में जिसे सर्कल कहा हैं वह वास्तव में पहाड़ है। काबा शरीफ के चारों तरफ आठ पहाड़ हैं। उन के नाम इस तरह हैंः

(१) जबले खलीज, (२) जबले क़ीक़ान, (३) जबले हिंदी, (४) जबले लाला, (५) जबले कादा, (६)जबले अबू-हदीदा, (७) जबले अबी-काबिस, (८) जबले उमर

नोटः- अरबी में 'जबले' का अर्थ पहाड़ है।

काबा शरीफ के चारों तरफ जो इमारत है उस में नौ दरवाज़े थे। उन के नाम इस तरह हैः

(१) बाबे इब्राहीम , (२) बाबे अल-विदा, (३) बाबे सफा, (४) बाबे अली, (५) बाबे अब्बास, (६) बाबे नबी, (७) बाबे सलाम, (८) बाबे ज़ियाद,

(६) बाबे हरम

नोटः- अरबी में 'बाबे' का अर्थ दरवाज़ा है।

काबा शरीफ को विजय नहीं किया जा सकता। एक बार ५३० A.D. में यमन के राजा अब्राहा ने हाथियों का लश्कर ले कर मक्का पर चढ़ाई कर दिया था, ताकि वह काबा शरीफ को ढा दे। जब वह मक्का शहर के क़रीब पहुँचा तो अबाबील नाम की बहुत सी छोटी चिडीयाऐं अपनी चोंच में कंकरी (small stones) ले जा कर उन सैन्निकों पर फेंकने लगी। और कंकरी लगते ही सैन्निक अपने हाथियों समेत भूसा की तरह सड़-गल गये। इस तरह पूरी सेना का विनाश हो गया। इसका पूरा वर्णन आप कुरआन शरीफ़ के 'सूरह फ़ील १०५' में पढ़ सकते हैं। इस लिए इस शहर को विजय करना असम्भव है।

- तस्मिन हिररायये कोशे त्र यरे त्रिप्रतिष्ठते।

तस्मिन यद यक्षमात्मन्वत तद वै ब्रह्मविदो विदुः

(अथर्वेद १०:२:३२)

अर्थातः प्रार्थना के लायक उस ईश्वर के घर में तीन स्तंभ (Column) और तीन बीम (Beam) हैं और यह घर अमर जीवन का केंद्र है। ईश्वर की प्रार्थना करने वाले इस बात को जानते हैं।
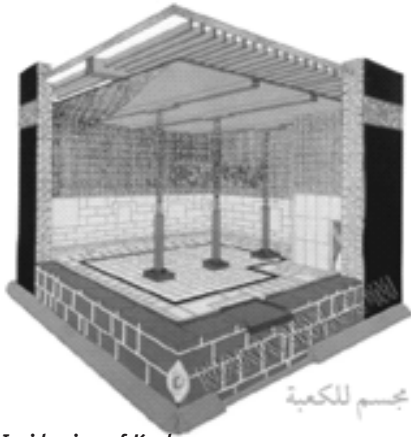
Inside view of Kaaba

ऊपर का चित्र काबा शरीफ़ के अंदर का है। इस में आप तीन स्तंभ और तीन बीम (Beam) देख सकते हैं। (इंटरनेट पर भी यह चित्र खोजा और देखा जा सकता है।)

(www.youtube.com पर काबा शरीफ के अन्दर का दृश्य, इसमें तीन स्तंभ (Column) साफ नज़र आते है।)

प्रभ्राजमानां हरिरीं यशसा संपरीवृताम।

पुरं हिररायर्यीं ब्रह्मा विवेशापराजिताम

(अथर्वेद १०:२:३३)

अर्थात ब्रह्मा (हज़रत इब्राहीम अ.स.) इस जगह रहे। यहॉ ईश्वर की दिव्य ज्योति (नूर) बरस्ता है। यहॉ की प्रार्थना लागों को अमर बना देती है।

मक्का शहर या काबा शरीफ धरती का केंद्र (Naval of Earth) **कैसे है?**

इलायास्तवा वयं नाभा प्रार्थव्या आधि।

(ऋग्वेद ३-२६-४)

ऋग्वेद में कहा गया है कि, ईश्वर का घर धरती के नाभ (केन्द्र) पर है। इसलिए हम इस बात का पता करते है कि धरती का केन्द्र कहा है और इस समय उस केन्द्र पर क्या है।

Equator o° Latitude है। यानी Horizontal Plane या Direction में यह पृथ्वी के मध्य में है।

मगर धरती की वह जगह जहाँ मनुष्य बसते हैं वह Equator से 80° Latitude उत्तर और 40° दक्षिण के बिच में हैं। यानी Equator धरती के मध्य से तो गुजरता है। मगर धरती की वह जगह जहाँ इन्सान बसते है उस मध्य से नही गुज़रता है। अगर हमें बसी हुई धरती के मध्य स्थान से गुज़रना है, जहाँ इन्सान बसते है, तो हमें अंदाज से 20° Latitude उत्तर की तरफ हटना पड़ेगा।

इसी तरह ०° Longitude ग्रीन वीच (एक शहर) से गुज़रता है। मगर यहाँ भी इन्सानों द्वारा बसी हुई धरती के Vertical direction में मध्य से नही गुज़रता। अगर हमें Vertical direction में इन्सानों से बसी हुई धरती के मध्य से गुजरना है तो अंदाज से 40° पूरब की तरफ हटना होगा।

यानी वह धरती जिस पर इन्सान बसते है उस का केन्द्र अंदाज से 20° Latitude and 40° Longitude पर है। अब हम अगर धरती के नक्शे में इस जगह पर कौन सा शहर बसा है इस की तलाश करें तो इस मकाम पर हम मक्का शहर को पाते है।

मक्का शहर 21°Latitude and 39° Longitude पर है।

ऋग्वेद में है की धरती के केन्द्र पर ईश्वर का घर है। तो मक्का शहर ही धरती के केन्द्र पर है, और काबा शरीफ ही ईश्वर का घर है।

ऋग्वेद में यह भी लिखा है,

‘ऐ ईश्वर कि प्रार्थना करनेवाले लोगों! दूर देशो में समुद्र किनारे द्वारकाबन है जिसका निर्माण किसी मनुष्य ने नहीं किया। वहाँ प्रार्थना करके ईश्वर के आशीर्वाद से स्वर्ग में दाखील हो जाओ। (ऋग्वेद १०-१५५-३)

(इस श्लोक में ‘काबा’ को दारूकाबन कहा गया है। और काबा शहर समुद्र किनारे से अंदाजन ४० कि.मी. दुरी पर है।)

तो अगर हम स्वर्ग में जाना चाहते है, तो ईश्वर के इस शहर और घर जाकर जरूर प्रार्थना करनी चाहिए।

मक्का (धरती का केंद्र)

एक गलत विश्वास:-

‘क्या मुसलमान काबा शरीफ को पूजते हैं’?

‘नहीं,! मुसलमान काबा शरीफ को नहीं पूजते।

काबा शरीफ एक पवित्र घर की तरह है। जिसे ‘काबातुल्लाह’ यानी ‘ईश्वर का घर’ कहते हैं। आज भी मुस्लिम धर्म के अनुयायी वहाँ नमाज़ पढ़ते हैं। यह अंदर से बिल्कुल खाली है, इस के अंदर कुछ भी नहीं है। इस के अंदर का भाग आप www.youtube.com पर देख सकते है। इसकी छत पर चढ़ कर हज़रत बिलाल ने अज़ान दी थी। मुसलमान अगर काबा शरीफ को ईश्वर मानते तो इस की छत पर खड़े रहकर कोई अज़ान क्यों देगा? इस से साबित होता है कि मुसलमान काबा शरीफ की पूजा नहीं करते, बल्कि एक अत्यंत पवित्र स्थान की तरह आदर करते है। इस की सिर्फ परिक्रमा की जाती है जिसे ‘तवाफ’ कहते हैं। पहले नमाज फिलिस्तीन के शहर ‘येरूस्लम’ की एक मस्जिद ‘मस्जिद-ए-अक्सा’ की तरफ मुँह करके पढ़ी जाती थी। लगभग **624 A.D.** के बाद से पवित्र कुरआन के आदेशानुसार नमाज़ ‘काबा शरीफ’ की तरफ मुँह करके पढ़ी जाने लगी। (पवित्र कुरआन २:१४४) पहली बार काबा शरीफ को फरिश्तों ने बनाया था। उसके बाद हज़रत नुह (मनु) के काल में बाढ में यह गिर गया था। फिर हज़रत इब्राहीम ने (अथर्ववेद में

जिसे ब्रम्हा कहा गया है।) उसे फिर से बनाया था। उसके बाद कई बार इसकि मरम्मत (Repairing) की गई। यदि भविष्य में किसी भुकंप में यह गिर भी जाता है तो इसके गिरने से इस्लाम धर्म खत्म नहीं होगा। ईश्वर हमेशा था, है, और रहेगा। और मुसलमान सिर्फ एक ही निराकार ईश्वर की पूजा करते हैं, और उसके द्वारा भेजी गयी इश-वाणी जो कुरआन के रूप में संग्रहित है उसका अनुकरण करते हैं।

शिवलिंग (Symbol of God)

शिव का अर्थ है, ईश्वर! लिंग का अर्थ है, निशानी या चिन्ह (Symbol) शिव लिंग का अर्थ है ईश्वर का चिन्ह या ईश्वर की निशानी या (Symbol of God).

काबा के पूरबी कोने की दिवार में एक काला पत्थर लगा हुआ हैं। यह पत्थर स्वर्ग से फरिश्तों ने लाकर काबा शरीफ की दिवार में स्थापित किया था। इसे 'हिज्र-ए-अस्वद' कहते हैं। 'हिज्र' यानी पत्थर 'अस्वद' यानी काला। 'हिज्र-ए-अस्वद' यानी काला पत्थर।

काबा शरीफ के चारों तरफ तवाफ (परिक्रमा) इसी पत्थर के चिन्ह से आरंभ कि जाती है और इसके पास पहुँच कर समाप्त हो जाती है।

''इस पत्थर में किसी का भला बुरा करने की शक्ति नहीं है। सिर्फ आदर के तौर पर लोग इसे चूमते हैं।'' (कौलः हज़रत उमर)

यह पत्थर स्वर्ग से लाया गया था इसलिए लोग इसे भी ईश्वर की निशानी या चिन्ह या (Symbol of God) मानते हैं।

कुछ विद्वान इसी काले पत्थर को शिव लिंग मानते है। (पुस्तक ''अब भी ना जागे तो.....'' लेखकः शम्स नवेद उस्मानी)

▼▼▼▼▼▼▼

हम किस किस को पूजें ?

भारत देश में हजारो दर्गाह है। और उर्स के अवसर पर लाखो लोग दरगाह के दर्शन करते है। मगर इस्लाम इस की तालीम (शिक्षा) नहीं देता। यह लोगों की श्रद्धा और इस देश की परंपरा है। मगर श्रद्धा और परंपरा से धर्म नहीं बदलता। जो गलत है वह गलत ही रहेगा।

हज़रत मोहम्मद(स.) ने पक्की मज़ार या कब्र बनाने से मना किया है और इससे भी मना किया है की कब्र पर कोई स्मारक या कमरा बनाया जाए।

(Muslim, Maruful Hadees, Vol.-3, Page-486)

खुद हज़रत मोहम्मद (स.) की कब्र शरीफ भी कच्ची है। यानी ईंट पत्थर से नहीं बनी है और ना मज़ार पर कोई शानदार कमरा या गुम्बद है। हज़रत मुहम्मद की कब्र शरीफ के चारों तरफ बगैर खिड़की दरवाज़े की चारदिवारी है। सीधी(Flat) छत गिर जाया करती थी इसलीए उन पत्थरों की दीवार पर गोल छत है। यह एकदम सादा कमरा है जो पत्थरों से बना है। यह पुरा कमरा मस्जिद के अंदर है। और मस्जीद की छत जो कब्र शरीफ के कमरे के उपर है, उस पर गुम्बद है। *

और कब्र शरीफ के चारो तरफ बगैर खिड़की दरवाजे की इमारत इस लिए बनानी पढ़ी क्योंकि यहुदियों ने कई बार कब्र मुबारक को नुकसान पहुचाने की साज़िशें रची थी।

हजरत मुहम्मद (स.) के कब्र शरीफ का कमरा पिछले ७०० सालों से बंद रखा गया है।

इसलिए हजरत मुहम्मद (स.) के कब्र शरीफ के चारो तरफ एक कमरा और गुम्बद के अलावा जो तुर्की ने अपने राज में बनवाया था, सउदी अरब में आप को और कोई पक्की मज़ार और उस पर शानदार स्मारक या गुम्बद वगैरा कुछ भी नज़र नहीं आऐगा।

तो जो इस्लाम में नहीं हैं वह अगर हिन्दुस्तान के लाखों मुसलमान करने लगें तो भी वह सही नहीं हो जाएगा। बल्कि गलत गलत और गलत ही रहेगा।

किसी हिन्दु भाई को अगर धन चाहिए, तो वह 'लक्ष्मी देवी' की पूजा करता है, बुद्धी चाहिए तो 'गणेश जी' की पूजा करता है, शिक्षा चाहिए तो 'सरस्वती देवी' की पूजा करता है। भावनिक समस्या (Spritual Problem) है या शनि की तकलीफ से परेशान है तो 'हनुमान जी' को पूजा जाता है।

हम हिन्दु धर्म के कुछ ग्रंथों का अध्ययन करके देखते है, की उसमें मुर्ती पुजा के बारे में कुछ लिखा है या लोग अपने मन से करते हैं। यानी हिन्दू धर्म के ग्रंथों में मुर्ति पूजा की शिक्षा है या यह भी एक परंपरा है।

हिन्दू धर्म की किसी भी Authentic ग्रंथ में मुर्ति पूजा की शिक्षा (तालीम) नहीं है। बल्कि उससे रोका गया है। ऐसे कुछ श्लोक निम्नलिखीत है:

१. ईश्वर ना तो लकड़ी में हैं ना पत्थर में ना मिट्टी से बनी मुर्ति में। वह तो एहसासात (Feelings) में मौजूद है। उस का एहसास (Feel) होना ही उस के वजूद (existence) की दलील (Proof) है। (गरूड पुराण धर्म कान्ड परेत खंन्ड ३८-१३)

२. मिट्टी, पत्थर वगैरा की मुर्तियाँ ईश्वर नहीं

* "Masjide Nabvi Shareef"
By Dr. Mohammad Ilyas Abdul Gani. Address: 447 Madina Munawwarah K.S.A
Published by: Fahrasat Maktaba Al-Malik Fahadul Wataniya Asna-en-Nashar)

होतीं। (श्रीमद भगवत महापुराण ११:८४:१०)

३. मेरे गुणों (Features) को ना जानने वाले मुर्ख लोग मुझे शरीर वाला समझ कर मेरा अपमान करते है। (गीता ६:११)

४. सभी जानदार मुझ में नहीं रहतें। मेरी कुदरत है की मैंने ही सभी जानदार को पैदा किया और उनको पालता हूँ। फिर भी में उन में रहता नहीं। (गीता ६-५)

५. ईश्वर हर जगह मौजुद रहने वाला नूर (प्रकाश) है। (यजुर्वेद ४०:१)

६. ईश्वर की कोई मुर्ति नहीं उस का नाम ही महान है। (यजुर्वेद ३:३२)

७. वह लोग अंधेरो की गहराईयों में डुब जाते है जो असमभुती (Material in basic form) जैसे आग, पानी वगैरा की पूजा करते है। वह लोग इस से भी गहरे अंधेरे में डूब जाते है। जो समभुती से बनी चीज़ों की पूजा करते हैं। (जैसे मुर्ति वगैरा) (यजुर्वेद अध्याय-३२:३)

८. पवित्र वेद हिन्दू धर्म के सब से Authentic ग्रंथ है। चारों वेदों में मुर्ति पूजा को सख़्ती से रोका गया है।

९. पवित्र वेदों के बाद उपनिषद को Authentic माना गया है। कुल १०८ उपनिषद है। उन में से दस उपनिषद को सभी आचार्य और विद्वान मानते है उनके नाम इस तरह है।

ऐश, केंसुप, कठ, प्रशन, मंडक, मांडोक्या, एत्रेया, तेत्रया, छांदोग्या और बृहद आर्ड़िक। यह सब भी मुर्ति पूजा से रोकते है।

१०. वेद और उपनिषद प्राचीन ग्रंथ है। पुराण ऋषियों ने लिखा है। और यह प्राचीन भी नहीं है। कुछ पुराणो में मुर्ति पूजा के लिए कहा गया है। इस की वजह स्वामी विवेकानंद इस तरह बताते है।

"ऋषियों ने मुर्ति पूजा की परंपरा (Tradition) शुरू की। ताकि वह उस मुर्ति को सामने रखकर निरंकार ईश्वर कि कल्पना कर सके" (विष्णु ऋशि पृष्ठ क्र. १४६, विवेकानंद साहीत्य अदोहोत आश्रम, पथ्थोरा गढ, दुसरी आवृत्ती १९७३)

११. मगर गीता के इस श्लोक से ईश्वर पर ध्यान लगाने (Concentration) के लिए मुर्ति की जरूरत नहीं है।

इबादत (प्रार्थना) करने वाले को चाहिए कि अपने शरीर, गर्दन और सर को एक सीध में कर ले। और अपनी नाक के अगले सिरे (Tip of Nose) पर निगाह जमा कर ईश्वर का ध्यान करे और किसी भी दिशा पर उनका ध्यान विचलित न हो। (गीता ६:१३)

तो वास्तव में मुर्ति पूजा की शिक्षा हिन्दू धर्म में नहीं है। जो ऐसा करते है शायद उन्हें धर्म का ज्ञान नहीं है।

देवी देवता या वली-अल्लाह, या महापुरूष कौन हैं।

- ऋग्वेद में लिखा है की,

  यो देवष्वधि देव एक आसीत्। (ऋग्वेद १०:१२१:८)

  अर्थातः सभी देवताओं का एक ही ईश्वर है।

- पवित्र कुरआन में लिखा है की,

  "जिनको ये लोग पुकारते हैं (यानी देवी देवता या कोई पैगम्बर या वली-अल्लाह या कोई महापुरूष), वे तो खुद अपने रब के पास पहूँच प्राप्त करने का वसीला ढुंढ रहे है कि कौन उससे अधिक निकट हो जाए और वे उसकी दयालुता के उम्मीदवार और उसके अज़ाब से डरे हुए हैं। वास्तविकता यह है कि तेरे रब का अज़ाब है ही डरने के योग्य।"(पवित्र कुरआन १७:५७)

- यजुर्वेद में लिखा हैः

  "न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देग।।"(यजुर्वेद ३३:११)

अर्थातः बिना परिश्रम के देवताओं को भी ईश्वर की कृपा नहीं मिलती।

तो देवी देवता या पैगम्बर या वली-अल्लाह या कोई भी महापुरूष खुद ईश्वर नहीं है और ना ही वह खुद से अपना और ना किसी और का भला कर सकते है। वह भी एक ईश्वर की प्रार्थना करते है। और वह भी एक ईश्वर को खुश करने के लिए परिश्रम करते है।

अवतार ईश्वर क्यों नहीं?

- यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत अद्भुतथानाय अर्धमस्य तदात्म्यम् सृजानम्यहम्। (गीता)

  इस श्लोक में लिखा है की जब जब पृथ्वी पर अधर्म फैलेगा तो अधर्म को खत्म करने के लिए मैं (ईश्वर) जन्म लूँगा। यह श्री कृष्ण जी ने कहा था। तो श्री कृष्ण जी ईश्वर क्यों नहीं?

- पवित्र कुरआन (९:१२८) ने हज़रत मुहम्मद (स) को रऊफ और रहीम कहा है और यह दोनों नाम ईश्वर के है। जिसे कुरआन के साहित्य (Literature) का ज्ञान नहीं होगा। वह यही समझेगा कि मोहम्मद स्वयं ईश्वर है। (ईश्वर ऐसा कहने पर हमें माफ करे।)

- इसी तरह हदीस शरीफ में है कि, "ईश्वर ऐसा कहता है, ''जब कोई व्यक्ति मेरे आदेश का पालन करता है और मेरी बहुत प्रार्थना करता हैं तो में उसके हाथ पांव और आंख बन जाता हूँ।" (जमा-अल-फवाइद)

  ईश्वर निराकार है, कभी किसी ने किसी वली या महापुरूष को निराकार होते नहीं देखा।

- एक हदीस शरीफ है कि कयामत में ईश्वर एक इन्सान से पुछेगा "में प्यासा था, भूखा था, बीमार था, मगर तू ने मुझे खाना नही खिलाया, पानी नहीं पिलाया, और ना ही मेरी सेवा की।" इन्सान पूछेगा कि "हे ईश्वर, तू ही सब को खिलाता पिलाता है, तो आप भूखे, प्यासे और बीमार कैसे हो सकते हो?" ईश्वर कहेगा की मेरा वह बन्दा भूखा, प्यासा और बीमार था। अगर तू उसकी सेवा करता तो तू मुझे वहीं पाता। (मुस्लिम, तर्जुमाने हदीस नं.२४५)

- मंदिर और मस्जिद के दरवाजे पर हजारों भूखे प्यासे और बिमार पड़े रहते है। आप उन की सेवा करो और फिर उन के पास ही, उन में किसी व्यक्ति के रूप में ईश्वर को ढूंढोगे तो क्या ईश्वर आप को मिलेगा?

- जब कोई बच्चा परीक्षा में बहुत अच्छे मार्क से पास होता है, तो बाप गर्व से कहता है, 'यह मेरा बेटा है' तब उस बाप का अपने दूसरे बेटे के बारे में क्या खयाल है जो फेल हो गया। क्या वह पड़ोसी का था? (क्षमा याचना)

- जो लोग भाषा के साहित्य (Literature of Language) को समझते है। वह इस वाक्य (Sentence) से कि 'यह मेरा बेटा है' इस से नसल (वंश) का अर्थ नहीं लेंगे बल्कि गुण का अर्थ लेंगे। यानी उस बाप का यह कहना है कि मेरा यह बेटा मेरे जैसा ही बुद्धिमान हैं।

  वैसे ही जो पवित्र कुरआन के साहित्य का ज्ञान रखते है वह पवित्र कुरआन में हज़रत मुहम्मद (स.) को रऊफ और रहीम कहे जाने पर हज़रत मोहम्मद (स.) को ईश्वर नहीं मानेंगें। बल्कि ईश्वर की तरह 'रऊफ' (क्षमा करनेवाला) और 'रहीम' (दयालू) मानेंगे।

- इसी तरह जब ईश्वर कहता है कि मैं महापुरूष (वली) के हाथ पांव और आँख बन जाता हूँ तो इस का अर्थ है वह महा पुरूष अपने हाथ पांव और आंख वैसे ही इस्तेमाल करता है जैसा में (ईश्वर) चाहता हूँ।

- इसी तरह जब ईश्वर कहता है कि तू मुझे भुखे प्यासे और बिमार के पास पाता, तो इस का अर्थ है उन की सेवा करके तू मुझे पाता, तू मेरा प्रिय

बनता और तुझ पर मेरी कृपा होती।

- इसी तरह से जो पवित्र गीता के श्लोक में है, की अधर्म का नाश करने के लिए मैं जनम लूंगा (तो इसका अर्थ यह नही कि ईश्वर स्वयः जन्म लेगा)। तो इस का अर्थ है की वह पैगम्बर जिसे मैं भेजूंगा वह मेरा प्रतिनीधी (Representative) होगा और मेरे आदेश के अनुसार मेरे धर्म को स्थापित करेगा।

  अतः यहीं मत हिन्दू धर्म के विद्वानों का भी है। जैसे स्वामी विवेकानंद, गुरूनानकजी और हिन्दू धर्म के महान विद्वान पंडित सुन्दरलाल, श्री बलराम सिंग परिहार, डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय, डॉ. पी.एच चौबे, डॉ. रमेश प्रसाद गर्ग, पंडीत दुर्गा शंकर सत्यार्थी, श्री केशरी लाल भगत (हज़रत मोहम्मद और भारतीय धर्म ग्रंथ, डॉ. एम.ए. श्रीवास्तव)

- चौदह साल के वनवास में जब हनुमानजी ने श्री रामजी से पूछा कि मैं ईश्वर की प्रार्थना कैसे करू? तो श्री रामजी ने ऐसा उत्तर नहीं दिया कि 'तुम खुद ईश्वर हो। क्योंकि आने वाले ज़माने में लोग तुम को पूजेंगें। ना उन्होंने कहा कि तुम मेरी प्रार्थना करो क्यों कि मैं भी ईश्वर हूँ। बल्कि उन्होंने यह कहाः

  प्रथमः ताराकः चयवादितिय दंड मुच्यते तीतय कुंडला।

  कारम चतुर्थ अर्द्धे चन्द्रक पंच बिन्दु संयुक्त

  ओउ्म मित्यज्योती रूपक। (श्री राम तत्वामृत)

  अर्थातः पहले सीधे खड़े हो जाओ। फिर दंडवत (सजदा) करो, फिर सीधे बैठ जाओ। फिर आधे चांद की तरह सामने झुक जाओ। फिर सीधे बैठ जाओ और ईश्वर के स्मरण में ध्यान लगाओ।

- यानी एक निराकार ईश्वर की प्रार्थना करो। वह ईश्वर महान है। निरंकार है। उस की कोई प्रतिमा नहीं। उस ने सब को पैदा किया और वही सब को एक दिन मौत देगा। वही इस संसार को चलाता है। हर एक को रोज़ी देता है। उस एक के अलावा और कोई प्रार्थना के लायक नहीं।

  ईश्वर के अलावा जो पूजे जाते हैं, वह ईश्वर नहीं। वह फरिश्ते, जिन्न, महापुरूष, पैग़म्बर, वली अल्लाह वगैरह हो सकते हैं।

  अगर हमें मुक्ति चाहिए तो सिर्फ एक ईश्वर को ही पूजना चाहिए। इस के अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼

कुरआन में हिंदु धर्म का उल्लेख

- क्या कुरआन में हिन्दु धर्म के बारे में कुछ लिखा है?
- हां लिखा है!

• पहली बात तो यह है की इस्लाम धर्म कोई नया धर्म नहीं है। पवित्र कुरआन में है किः

- मुसलमानो कहो कि, 'हम ईमान लाए (हम सच मानते है) अल्लाह और उस मार्गदर्शन (पवित्र कुरआन) पर जो हमारी ओर उतरा है। और जो ईब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब, और अय्यूब की सन्तान की ओर उतरा था। और जो मूसा और ईसा और दूसरे सभी पैगम्बरों को उनके रब (प्रभु) की ओर से दिया गया था। हम उनके बीच कोई अन्तर नहीं करते और हम अल्लाह के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं। (पवित्र कुरआन २:१३६)
- "ऐ मुहम्मद! ईश्वर ने तुम को जिस धर्म का पालन करने का आदेश दिया है, यही आदेश उस ने मनू (हज़रत नूह) को दिया था और यही आदेश उस ने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा को दिया था। और उस ने सभी को यह भी आदेश दिया था कि धर्म का (अच्छी तरह) पालन करो और एक दूसरे से मतभेद ना रखो।" (पवित्र कुरआन ४२:१३)
- फिर ऐ नबी मुहम्मद! हमने तुम्हारी ओर यह किताब (पवित्र कुरआन) भेजी जो हक (सत्य) लेकर आई है। और मूल किताब (प्राचीन ग्रंथों) में से जो कुछ उसके आगे मौजूद है उसकी पुष्टी करनेवाली और उसकी संरक्षक है। अतः तुम अल्लाह के उतारे हुए कानुन के अनुसार लोगों के मामलों का फेसला करो और जो हक् (सत्य) तुम्हारे पास आया है उससे मूँह मोड़कर उनकी इच्छाओं का पालन न करों। हमने तुम (इनसानों) में से हर एक के लिए एक धर्म-विधान और कार्य प्रणाली निर्धारित की। यद्यपि तुम्हारा अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक उम्मत (समुदाय) भी बना सकता था, लेकिन उसने यह इसलिए किया कि जो कुछ उसने तुम लोगों को दिया है उसमें तुम्हारी आज़माइश (परीक्षा) करे। अतः भलाइयों में एक दूसरे से आगे बढ़ जाने की कोशिश करो। आख़िरकार तुम सबको अल्लाह की ओर पलटकर जाना है, फिर वह तुम्हें असल हक़ीकत बता देगा जिसमें तुम मतभेद करते रहे हो। (पवित्र कुरआन ५:४८)

उपरोक्त कुराण के तीन श्लोक से यह साबीत होता हैं कि,

- तो इस्लाम कोई नया धर्म नहीं है। यही धर्म शुरू में हज़रत नुह (मनु) का था। यही धर्म शुरू में हज़रत ईसा और मूसा (Christian & Jews) का था। या हर पैगंबर ने बस इस धर्म को अपने मानने वालों को सिखलाया था। मगर उनके बाद उनके मानने वाले बदल गऐ। उन्होंने एक ईश्वर को छोड़ कर बहुत सारे महापुरूषों को एक ईश्वर के साथ मानना शुरू कर दिया। और अब मुसलमानों के भी कुछ गट (समुदाय) एक ईश्वर के साथ बहुत सारे बाबा और पैगम्बर को भी ईश्वर (अल्लाह) की तरह महत्व देते है। यह सब गलत है। हर युग में इसी वजह से धर्म बदल गए और अब भी बदल रहें हैं। और इसी वजह से बार-बार धरती पर पैगम्बर आए। मगर हज़रत मोहम्मद (स.) के बाद अब कोई पैग़म्बर या प्रेषित नहीं आऐगा। और धर्म सुधार का काम अब साधारण लोगों को ही करना है।
- तो कुरआन के मुताबीक चार हजार साल पहले हज़रत नुह या मनु ने लोगों को जिस धर्म की शिक्षा दी थी वह यही इस्लाम धर्म है और हर युग में यही धर्म ईश्वर का धर्म रहा है। इसलीए आज भी ईश्वर ने पुराने धर्म के मानने वालों को नाम

लेकर कहा है की अगर तुम इस्लाम के मूल श्रद्धा (Basic Concept) को मानोगे तो तुम अब भी सफल हो सकते हो।

कुरआन के वह श्लोक इस तरह हैः

- "जो लोग मुसलमान हैं या यहूदी या ईसाई या साबी (हिंदू), अर्थात कोई व्यक्ति किसी भी धर्म और समुदाय का हो जो एक ईश्वर और कयामत के दिन को मानेगा (अर्थात इस बात को मानेगा कि मरने के बाद कयामत के दिन अपने कर्मों का हिसाब किताब देना है) और नेक आमाल करेगा जो ऐसे लोगों को उन के सत्य कामों का बदला ईश्वर के पास मिलेगा। और कयामत के दिन उन को ना किसी तरह का डर होगा और ना ही वह उदास (गमनाक) होंगे। (पवित्र कुरआन २:६२)
- (विश्वास रखो कि हज़रत मोहम्मद (स.) को माननेवाले हो (यानी मुसलमान) या यहूदी, ईसाई हों या साबी(हिंदू), जो भी अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाएगा और अच्छा कर्म करेगा, उसका बदला उसके रब के पास है और उसके लिए किसी ड़र और रंज का मौका नहीं है।(पवित्र कुरआन ५:६९)
- यानी हर धर्म का Basic Concept तो यही था कि १) ईश्वर एक है २) सत्कर्म करना चाहिए ३) कयामत(अंतिम दिन) को मानना चाहिए (यानी यह मानना चाहिए कि कयामत के दिन हमें अपने कर्मों का हिसाब किताब देना है)। ४) मरने के बाद के जीवन को सत्य मानना चाहिए। ५) ईश्वर द्वारा भेजे गए सारे पैगम्बर और उनके ग्रंथों को सत्य मानना चाहिए। और जो कोई भी मन से ऐसे विश्वास रखेगा, वह धार्मिक रूप से सफल होगा। और वह लोग जो इस Basic Concept पर ऐसी श्रद्धा रखते हैं वह मनु (नुह) के काल से आखरी पैगंबर तक एकही धर्म पर श्रद्धा रखनेवाले हैं यानी मुसलमान हैं।

इन श्लोक (२:६२ और ५:६९) में हिन्दु धर्म के मानने वालों को 'सबाईन' या 'साबी' कहा गया है। इस युग के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (स.) हैं, और सारे उपदेशों को ईश्वर ने हज़रत मुहम्मद (स.) द्वारा पुनरावृत्त (revise) किया है। इस लिए इस युग में उन को पैग़म्बर मानना और उन के आदेशों को मानना भी मुक्ति के लिए ज़रूरी है।

- पवित्र वेद ई. सन १८०० तक (यानी चार हजार साल तक) लिखीत रूप में न थे। बल्कि पंडीतो ने इसे याद कर रखा था। अलग अलग खंडो को अलग अलग तरह से अलग अलग ऋषियों ने लिख रखा था। वेद पुस्तक के रूप में न थे और ना इन का किसी पुस्तक की तरह नाम था। इसलिए यह जिस हालात में थे उसके अनुसार कुरआन में वेदों को याद किया गया है।
- कुरआन के एक श्लोक ने वेदों को 'सुहफे ऊला' कहा गया है। (पवित्र कुरआन २०:१३३)। जिस का अर्थ है (ईश्वर द्वारा प्रकट किए गए प्राचीन ग्रंथ या आदि ग्रंथ)। दूसरे श्लोक में वेदों को 'जाबराल अव्वलीन' कहा गया है (पवित्र कुरआन २६:१९६)। इस का अर्थ है प्राचिन ग्रंथ के बिखरे हुए पन्ने (Ancient Scattered divine pages). क्योंकि वेद एक ग्रंथ के रूप में ना थे बल्कि वेदो के सुक्ति और खंड अलग अलग जगह पर अलग अलग ऋषियों के पास था। (आज भी उन ऋषियों के नाम हर सुक्त के शुरूवात में है।) (पुस्तक "अब भी ना जागे तो ....", लेखकः शम्स नवेद उस्मानी)
- कुरआन के ऐसे भी कुछ श्लोक है जिनमे वेदोंको 'सुहफे ऊला' और 'जाबराल अव्वलीन' कहा गया है वह श्लोक निम्नलिखीत हैं।:
- कुरआन के श्लोक (२६:१९६) में कहा गया है किः

  "और वे कहते हैं कि 'यह (पैग़म्बर) अपने रब (परमेश्वर) की ओर से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाता?' (अपनी पैगंबरी साबीत करने के लिए)

उनके सवालों का जवाब देने के लिए ईश्वरद्वारा निम्नलिखित श्लोक प्रकट हुवा।

''क्या उन के पास उसका स्पष्ट प्रमाण नहीं आ गया, जो कुछ कि सुहफे ऊला (आदिग्रंथो) में उद्‌लिखित है।'' (आदिग्रंथो में हजरत मुहम्मद (स.) इनकि भविष्यवाणी ३१ बार कि गयी है क्या यह ठोस सबुत नहीं है?)

इस आयत (श्लोक) के प्रकट होने की एक वजह यह हो सकती है कि, अरब देश का हज़ारो साल से भारत देश से व्यापार संबध रहा है। और भारतीय लोगों के बहुत सारे कबीले यमन, सउदी अरब, बहरेन इ. में बसे हुए थे। और वहा बसे भारतीय लोगों ने जब यह सवाल मुहम्मद (स.) से किया तो ईश्वरने उपरोक्त श्लोक द्वारा उनको जवाब दिया।
(''मुहम्मद (स.) के जमाने का हिन्दूस्तान'', लेखकः क़ाज़ी मुहम्मद अतहर मुबारक पूरी)

(वेदो में ३१ बार हज़रत मुहम्मद(स.) के नाम से भविष्यवाणी है। और हिन्दु धर्म में अनेक ग्रंथों में भी मुहम्मद(स.) की भविष्यवाणी अहमद, महामद, महामे ऋषि, नराशंस और कलकी अवतार के नाम से आयी है। उस में से दो श्लोक इस तरह हैं।)

- एतस्मिन्नन्तिरे म्लेच्छ आचार्य्येण समन्वितः।।
  महामद इति ख्यातः शिष्यशाखा समन्वितः।।
  (भ.पू. पर्व-३, खण्ड-३ अध्याय ३, श्लोक-५)

भविष्य पुराण के अनुसार, ''किसी दूसरे देश में एक नबी अपने साथियों के साथ आएगा। उसका नाम 'महामद' होगा, और वह एक मरूस्थलीय (desert) जगह पर प्रकट होगा''

- अज्ञान हेतु कृत मोहमदान्धकार नांश विधांय हित दो दयेत विवेक।(श्रीमद भगवत पुराण २:७२)

मोहम्मद के ज़रिए (अज्ञान का) अंधेरा दूर होगा और ज्ञान और spirituality परवान चढ़ेगी।

तो कुरआन में वेदों और हिन्दु धर्म के बारे में भी लिखा हुआ है। मगर वह अरबी भाषा में होने के कारण साधारण लोग जान नहीं पाते है।

▼▼▼▼▼▼▼

पवित्र वेद और पवित्र कुरआन के एकसमान श्लोक

ईश्वर से प्रार्थना संबन्धि श्लोक

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• होतारं सत्ययजं रोदस्योरूत्तान हस्तो नमसा विवासेत। (ऋगवेद. ६:१६:४६) पुजनीय, आकाश व पृथ्वी को सत्य के मार्ग से चलाने वाले परमेश्वर से विनम्रता पूर्वक हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थना करो।	• उद्ऊ रब्बुकुम् त-जर्उअं वू-व खुफ्य इन्नहू लायुहिब्बुल-मुअ-तदीन (कुरआन ७:५५) अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके, यक़ीनन वह सीमा का उल्लंघन करनेवालों को पसन्द नहीं करता।
• तस्य ते भक्तिवांसः स्याम (अर्थवेद ०६:७८:३) 'हे प्रभू! हम तेरे ही भक्त हों।'	• इय्या-क नअ़बुदु व इय्या-क नस्तअीन (कुरआन १:४) हम तेरी ही बंदगी करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं।
• अवनो वृजिना शिषी हि (ऋगवेद १०:१०५:८) 'हे परमेश्वर आप हमारे पापों को हमसे दूर किजीए।'	• रब्बना फागफिरलना जुनूबना व कफ्फ़िर अन्ना सय्यिआतिना (कुरआन ३:१६३) ऐ हमारे मालिक, जो अपराध हमसे हुए हैं उनको क्षमा कर दे, जो बुराइयाँ हममें हैं उन्हें दूर कर दे और हमारा अन्त नेक लोगों के साथ कर।
• अवशसा निःषसा यत् पराशसोपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः। (अर्थववेद०६:४५:२) 'जो पाप विश्वासघात, घृणा या अपवाद से और जो पाप जागते या सोते हुए हमने किए हैं। हे परमेश्वर उन सभी अप्रिय दुष्कर्मों को हम से दूर कर दे।'	• रब्बना ला तुआखिज्ना इन् नसीना अव् अखताना। रब्बाना वला तह्मिल अलैना इसूरन कमा हमल्तहु अलल् लज़ीना मिन क़ब्लिना, रब्बना वला तुहम्मिल्ना मा ला ता-कता लना बिहि। वअ़फ़ुअन्ना वग़्फिर लना वर् हम्ना अन्-त मौलाना (कुरआन २:२८६) ऐ हमारे रब, हमसे भूलचूक में जो ख़ताएँ हो जाएँ, उनपर पकड़ न कर। मालिक, हमपर वह बोझ न डाल, जो तूने हमसे पहले लोगों पर डाले थे। ऐ हमारे रब, जिस बोझ को उठाने की ताक़त हममें नहीं है, वह हमपर न रख। हमारे साथ नरमी कर, हमें माफ़ कर दे, हमपर दया कर, तू हमारा स्वामी है, इनकार करनेवालों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• इन्द्र ऋतु न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा। शिक्षा णो अस्मिन् पुरूहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि।। (अर्थवेद.१८:३:६७) 'परमेश्वर इस मार्ग में हमें शिक्षा (ज्ञान) दे। हम जीते हुए प्रकाश को पायें।	• युअतिलु-हिकम-त मंय्यशा-उ व मंय्युअतलु-हिक्मु-त फ-कद ऊति-य खयरन् कसीरन् व यज्जक्करू इल्ला उलूल-अलबाब (कुरआन २:२६६) जिसको चाहता है हिकमत (तत्वदर्शिता) प्रदान करता है, और जिसे हिकमत (तत्तज्ञान) मिली, उसे वास्तव में बड़ी दौलत मिल गई। इन बातों से सिर्फ़ वही लोग शिक्षा ग्रहण करते है, जो बुद्धिमान हैं।
• शनः कुरू प्रजाभ्यः (यर्जुरवेद. ७:८६:०३) हे प्रभु! हमारी संतान का कल्याण करो।	• व अस्लिह ली फी जुर्रिय्यती (कुरआन ४६:१५) मेरी सन्तान को भी नेक बनाकर मुझे सुख दे
• यत्रानन्दाशृच मोदाषृच मुदः प्रमुद आसते। कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं कुधी।। (ऋगवेद. ६:११३:११) हे प्रभु! आनन्द और स्नेह जहां वर्तमान रहते हैं, जहां सभी कामनाएं इच्छा होते ही पूर्ण हो जाती हैं उसी अमर लोक में मुझे निवास दो।	• वफ़ीहा मा तश्तहीहिलु-अन्फ़ुसु व त-लज्जुलु-अअ-युनि व अन्तुम् फ़ीहा खालिदून (कुरआन ४३:७१) उनके आगे सोने की थालिआँ और जाम-साग़र फिराए जाएँगे और हर मनभाती और निगाहों को लज़्जत देनेवाली चीज़ वहाँ मौजूद होगी। उनसे कहा जाएगा, ''तुम अब यहाँ हमेशा रहोगे।
• श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यंदिनं परि। श्रद्धां सूर्यस्य जिम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः।। (ऋग्वेद. १०:१५१:०५) श्रद्धा का हम प्रातः काल में श्रद्धा का दिन के मध्य में, और सूर्य के अस्त होने पर आव्हान करते है। है श्रद्धे हमें लोक में श्रद्धा युक्त करे।	• व सब्बिह बिहम्दि रब्बि-क कब्-ल तुलअिश -शम्सि व कब्-ल गुरूबिहा व मिन् आनाइल्लयलि फ- सब्बिह व अत-राफन्नहारी ल-अल्लक-क तर्जा। व-ला तमुद्-दन्-न ऐनय-क इला मा मत्तअ -ना बिही अज्वाजम् मिन्हुम् जह्-र-तलु -हयातिददून्या। लिनफतिनहुम् फीहि। (कुरआन २०:१३०-१३१) अतः ऐ नबी, जो बातें ये लोग बनाते हैं उनपर सब्र करो, और अपने रब के गुणगान एरां प्रशंसा के साथ उसकी बड़ाई बयान करो सूरज निकलने से पहले और सूरज डूबने से पहले, और रात की घड़ियों में भी तसबीह करो और दिन के किनारों पर भी, शायद कि तुम राज़ी हो जाओ।
• वयं देंवानां समतौ स्याम (अथर्ववेद. ६:४७:०२) हम सत पुरूषों की शुभ मति में रहें।	• व अद्ख़िल्नी बिरह्मति-क फी अ़िबादिकस् -सालिहीन (कुरआन २७:१६) अपनी दयालुता से मुझको अपने अच्छे बन्दों में दाख़िल कर।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र क़ुरआन के श्लोक
• नय सुपथा राय अस्मान (यर्जुरवेद ४०:१६) 'हमको हमारे कल्याण के लिए सद्मार्ग पर ले चल!'	• इह्दनस-सिरातूल्मुस्क़ीम (क़ुरआन १:५) हमें सीधा मार्ग दिखा,
• इन्द्र ऋतुं न आ भर (अर्थवेद १८:०३:६७) हे परमेश्वर तू हमें तत्वदर्शिता से भर दे।' • सं श्रुतेन गमेमहि (अर्थवेद ०१:०१:४) हे परमेश्वर! हम ब्रम्हज्ञान से युक्त हों!	• रब्बि जिदनी अिल्मा (क़ुरआन २०:११४) ऐ पालनहार! मुझे और अधिक ज्ञान प्रदान कर
• अग्निः प्रातः सवने पात्वस्मान् वैश्चानरो विश्वशंभुः। (अर्थवेद ०६:४७:०१) सब मनुष्यों के प्रिय, जगदुत्पादक, सबके कल्याण कारी परमेश्वर प्रातः काल की उपासना में हमारी रक्षा करें।	• वलायुहीतू-नबिशैइम्मिन् अिल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्अर्ज (क़ुरआन २:२५५) अल्लाह, वह जीवन्त शाश्वत सत्ता, जो सम्पूर्ण जगत् को सँभाले हुए है, उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है। वह न सोता है और न उसे ऊँघ लगती है। ज़मीन और आसमानों में जो कुछ है उसी का है। • व क़ुरआनल्-फजिर इन-न-क़ुरआनंल्-फजिर का-न मश्हूदा (क़ुरआन १७:७८) नमाज़ क़ायम करो सूरज ढलने से लेकर रात के अँधेरे तक और फ़ज्र के क़ुरआन को भी आवश्यक ठहराओ क्योंकि फ़ज्र का क़ुरआन साक्षात् होता है।
• तस्य वयं हेडिसि मापि भूम सुमृडीके अस्य सुमतो स्याम्। (अर्थवेद ०७:२०:३) हम उस परमेश्वर के क्रोध में कभी न होवें, उसकी करूणा और सुमति में बने रहें।	• रब्बना ला तुजिग़ कुटूबना बअ्दा इज़ हदैतना व हब लना मिल् लदुन्का रह्मा। इन्नका अन्तल वहाब (क़ुरआन ३:८) ''पालनहार, जब तू हमें सीधे रास्ते पर लगा चुका है, तो फिर कहीं हमारे दिलों में टेढ़न पैदा कर देना। हमें अपने दयानिधि से दयालुता प्रदान कर कि तू ही वास्तविक दाता है।
• ऋत्वः समहदीनता प्रतीपं जगमा शुचे मृला सुक्षत्र मृलय।। (ऋगवेद. ७:८६:०३) हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर! हम अपनी अज्ञानता से पथभ्रष्ठ होते हैं। हम पर कृपा करें।	• इन्नल्ला-ह ला यज्लिमुन्ना-स यशअंव्-व ला किन्नन्ना-स अन्फुसहुम् यज्लिमून (क़ुरआन १०:४४) यह है कि अल्लाह लोगों पर ज़ुल्म नहीं करता, लोग ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं।

ईश्वर की उपासना से संबन्धित श्लोक

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• भुवनस्य यस्पतिके एव नमस्यो विक्ष्वीडयः (अथर्ववेद २:२:१) सब ब्रम्हाण्डका वह एक ही स्वामी सभी प्रजाओं व्दारा सिर झुकाने व उपासना करने योग्य है।	• रब्बुस्समावाति वलूअर्जि व मा बयनहुमा फअ्-बुदहु वस्तबिर् लिअिबादतिही हल् तअ्-लमु लहू समिय्या (कुरआन १९:६५) वह रब है आसमानों का और ज़मीन का और उन सारी चीज़ों का जो आसमानों और ज़मीन के बीच में हैं, अतः तुम उसकी बन्दगी करो और उसी की बन्दगी पर जमे रहो। क्या है कोई हस्ती तुम्हारे ज्ञान में उसकी समकक्ष?
• य एक इ त्तमुष्टु हि कृष्टिनां विचर्षणिः। (ऋग्वेद ६:४५:१६) जो मनुष्यों को देखने वाला एक ही है उसी की स्तुति करो।	• हु-वल्लाहुल्लजी ला इला-ह इल्ला हुव आलिमुल गयबि वश्शहादति (कुरआन ५९:२२) वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, अदृश्य और प्रकट हर चीज़ का जाननेवाला, वही सर्वोच्च करुणामय और दयावान् है।
• न भवत्विद्रं ऊती (ऋग्वेद १:१००:१) वह ईश्वर हमारी सहायता करें।	• कबीरूलू-मु-अत-आल (कुरआन १३:९) वह छिपे और खुले हर चीज़ को जानता है। वह महान है और हर हाल में सर्वोच्च रहनेवाला है।
• अध्दा देव महा (अथर्ववेद २०:५८:३) ईश्वर निश्चय ही महान है।	• अ-लम् तअ-लम् अन्नल्ला-ह-लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि व मा लकुम् मिन् दुनिल्लाहि मिव्वलिय्यिंव-व ला नसीर (कुरआन २:१०७) क्या तुम्हें पता नहीं कि धरती और आकाशों का शासन अल्लाह ही के लिए है और उसके सिवा कोई तुम्हारा संरक्षक और तुम्हारा मददगार नाहीं है?
• मही देवस्य सवितः परिष्टुतिः (ऋग्वेद ५:८१:१) इस संसार के बनाने वाले के लिए स्तुति है।	• इय्या-क नअ्बुदु व इय्या-क नस्तअीन (कुरआन १:४) हम तेरी ही बंदगी करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं।
• वसुर्दयामान (ऋग्वेद ३:३४:१) जो देने वाला और दयावान है।	• अलूहम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आ़लमीन अर्रहमानिर्रहीम (कुरआन १:१) प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे जहान का रब है

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• महेचन त्वामद्रिवः पराशुल्काय देयाम। न सहस्त्राय नायुताय बज्रि वो न शताय शतामध।। (ऋग्वेद ८:१:५) हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर! तू इतना मूल्यवान है कि में तुझको किसी शुल्क के लिए भी नहीं छोड़ सकता। न हजारों के लिए न अरबों के लिए न सैंकड़ो के लिए।	• व ला तश्तरू बि आयाती स-म-नन् कलीलंव् (कुरआन २:४१) अतः सबसे पहले तुम ही उसके इनकार करनेवाले न बनो। थोड़े मूल्य पर मेरी आयतों को न बेच डालो और मेरे प्रकोप से बचो। असत्य का रंग चढ़ाकर सत्य को संदिग्ध न बनाओ और न जनाते-बूढते सत्य को छिपाने का प्रयास करो।
• यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम। (ऋग्वेद १०:१२१:४) हिम से ढके पर्वत जिसकी महिमा कहते हैं, नदियों सहित समुद्र जिसकी महिमा कहते हैं, समस्त दिशाएं जिसकी भुजाएं समान हैं उसके अतिरिक्त हम किस देव की भक्ति पूर्वक उपासना करें।	• अम्म्न् ज-अ-लल् अर-ज करांरव-व ज-अ-ल खिलालहा अन्हारंव-व ज-अ-ल लहा खासि-व ज-अ-ल बयनल्-बहरयनि हाजिजन् अ इलाहुम-म अल्लाहि बल् अक्सरूहुम ला यअ-लमून् (कुरआन २७:६१) और वह कौन है जिसने ज़मीन को ठहरने का स्थान बनाया और उसके अन्दर नदियाँ प्रवाहित कीं और उसमें (पहाड़ों की) मेखे गाड़ दीं और पानी के दो भण्डारों के बीच परदे डाल दिए? क्या अल्लाह के साथ कोई और पूज्य-प्रभु भी (इन कामों में सहभागी) है? नहीं, बल्कि इनमें से ज़्यादातर लोग नादान हैं।

पवित्र वेद और पवित्र कुरआन के हज़ारों एक समान श्लोक उन ग्रन्थों में तलाश किए जा सकते हैं। मगर हमारा उद्देश्य आप को सारे एक समान श्लोकों से परिचित कराना नहीं है बल्कि केवल आप को इस बात का यकीन दिलाना है कि सभी पवित्र ग्रन्थों में एक ईश्वर की प्रार्थना करने और सत्य के मार्ग पर चलने के आदेश ही हैं। अगर कोई व्यक्ति यह कहता है कि किसी धार्मिक ग्रन्थ में लोगों की हत्या करने और दंगा फसाद फैलाने के आदेश हैं तो उस व्यक्ति को या तो उस ग्रन्थ का सम्पुर्ण ज्ञान नहीं है, या वह व्यक्ति खुद उग्रवादी गुटों से है और समाज में नफरत फैलाना चाहता है।

आप की अधिक जानकारी के लिए हम ५० से अधिक एक समान श्लोक इस पुस्तक के आखरी अध्याय (chapter) में प्रस्तुत कर रहे हैं।

पवित्र नराशंस कौन हैं ?

- नराशंस के बारे में सभी चार वेदों में भविष्यवाणी है। लेकिन पिछले चार हज़ार साल से यह एक रहस्य था। बीसवीं सदी तक कोई आश्वस्त (Confident) होकर उनके व्यक्तित्व के बारे में नहीं कह सकता था। २० वीं सदी में जब साहित्य और ज्ञान अन्य धर्मों के बारे में आसानी से उपलब्ध होने लगे, और जब संस्कृत के विद्वानों ने अन्य धर्मों के साहित्य का अध्ययन किया। केवल तभी वे सबसे अधिक सम्मानित धार्मिक व्यक्तित्व की पहचान की पहेली को सुलझा सके।
  जिन विद्वानों ने यह शोध कार्य किया वे है, डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय, (शोध विद्वान, संस्कृत विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय), डॉ. एम. ए. श्रीवास्तव, पंडित धर्म वीर उपाध्याय आदि।

- पवित्र वेदों में उपलब्ध पवित्र नराशंस के बारे में लिखीत जानकारी मिलती हैः

- सभी चारों पवित्र वेदों में इस रहस्य में हस्ती को नराशंस नाम से याद किया गया है । उदाहरण के लिएः
  नराषंसः सुषूदतीमं यज्ञदाभ्यः । कविर्हि मधुहस्तः ।
  (ऋग्वेद हिंदी भाष्य २५, आर्य समाज द्वारा प्रकाशित)

- पवित्र वेदों ने उनके बारे में बहुत-सी बातों की भविष्यवाणी की है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैः

१.पवित्र वेदों का कहना है कि वह मधुर भाषी होगा, या उसका भाषण सम्मोहित करने वाला होगा (His talk will be extremely sweet and mesmerizing)
नराशंसः मिहप्रियम स्मिन्यज्ञ उप ह्ये। मधुजिहं हविष्कृतम् । (ऋग्वेद संहिता १.१३.३)

२.पवित्र वेदों में उल्लेख है कि वह भविष्य का पूर्वानुमान करेगा।

नराशंसः सुदूषूदतीमं यज्ञमदाम्यः। कविर्हि मधुहस्त्यः। (ऋग्वेद संहिता ५/५/२)

३.पवित्र वेदों का कहना है कि वह अत्यंत सुंदर व्यक्तित्व वाला होगा ।

नराशंसः प्रति धामान्यञ्जन तिस्त्रो दिवः प्रति मह्ना स्वर्चिः।(ऋग्वेद संहिता २/३/२)

४.पवित्र वेदों का कहना है कि नराशंस इंसानों के पापों को धो देगा ।

नराशंसः वाजिनं वायजयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे।
रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवो विश्वास्मान्नो अहंसो निष्पिपर्तन।। (ऋग्वेद १/१०६/४)

५.पवित्र वेदों में उल्लेख है कि पवित्र नराशंस ऊंट की सवारी करेगा । उसकी १२ पत्नियां होंगी।

उष्ट्रा यस्य प्रवाहिणो वधूमन्तो द्विर्दश ।
वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते दिव ईषमाण उपस्पृशः।
(अथर्वेद, कुन्ताप सुक्त : २०/१२७/२)

६.पवित्र वेदों का कहना है कि पवित्र नराशंस की लोग (जनता) हर युग में प्रशंसा करेंगे ।

इदं जना उप श्रुत नराषंसः स्तविष्यते ।
(अथर्वेद, हिंदी भाष्य १४०१)

७.पवित्र वेदों में भविष्यवाणी की गई है कि ईश्वर पवित्र नराशंस को निम्नलिखित चीज़ें देगाः

(१) १० फूल-मालाएँ (२) १०० सोने के सिक्के
(३) ३०० घोड़े और (४) १०,००० गाएं
एश इशाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः।
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रादश गोनाम्।।
(अथर्ववेद २०,१२७,३)

८.पवित्र वेदों का कहना है कि ईश्वर पवित्र नराशंस को ६०,०९० शत्रुओं से बचाएगा।

अनस्वन्ता सतपतिर्मामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघानः। त्रैवृष्णों अग्ने दशभिः सहस्रैर्वैश्वानरः त्र्यरूणाश्चिकेत।। (ऋग्वेद म.५, सू.२७, मंत्र १)

- पिछले ४००० वर्षो से उपर दि गई जानकारी के आधारपर विद्वान नराशंस को पहचान में असफल थें।

- वर्तमान समय में जब विद्वानों ने अन्य धर्मो का अध्ययन किया तब उन्हें मालूम हुआ कि इस्लाम के हज़रत मुहम्मद (स.) ही वे पवित्र नराशंस हैं, जिनकी ४००० वर्ष पूर्व वेदों में भविष्यवाणी की गई थी।

- पवित्र वेदों में पवित्र नराशंस के बारे में कि गई भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद (स.) से इस प्रकार मेल खाती हैः

'नराशंस' दो शब्दों का मिश्रण है, 'नर' और 'आशंस'। 'नर' का अर्थ है 'मनुष्य' और 'आशंस' का अर्थ है 'जिसकी प्रशंसा की जाए'। महान विद्वान सायन जिसने वेदों कि व्याख्या की, कहता है 'नराशंस' का मतलब है जिसकी इंसान प्रशंसा करें। संस्कृत में इसे ऐसे कहेंगेः
नराशंसः यो नरैः प्रयशस्यते।
(सायण भाष्य, ऋग्वेद संहिता ५/५/२)

श्री दयानंद सरस्वती भी इसी अर्थ को सही मानते हैं।

(ऋग्वेद, हिन्दी भाषा, पेज २५, आर्य समाज द्वारा प्रकाशित)

- डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय कहते हैं, 'नर' शब्द का प्रयोग केवल मनुष्य के लिए किया जाता रहा है। इसे कभी भी देवताओं के लिए प्रयोग नहीं किया गया। इसलिए पवित्र नराशंस को देवता नहीं माना जा सकता। अतः पवित्र नराशंस, मनुष्य ही है।
अरबी भाषा में 'हम्द' का अर्थ है 'प्रशंसा', तथा 'मुहम्मद' का अर्थ है 'जिसकी प्रशंसा की जाए'। अतः अरबी भाषा में मुहम्मद का अर्थ वही होता है जो संस्कृत में नराशंस का अर्थ होता है।

पवित्र नराशंस के बारे में भविष्यवाणी :

१.वेदों की प्रथम भविष्यवाणी कहती है कि 'पवित्र नराशंस' मधुर (Sweat) भाषी होगा, या उनकी बात मृदुल होगी।

इतिहासकार कहते है कि हज़रत मुहम्मद (स.) की बातचीत की शैली बहुत कोमल और मधुर थी। और अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित पुस्तकों का अध्यन करें।

a) "Life of Muhammad." By Sir Willan Muir. (Published by: Smith Elder and Co. London)
b) "Introduction to the speeches of Muhammad." By Lane Poole (Published by: MacMillan & co. London)

- दिव्य कुरान भी इसी तथ्य की पुष्टि निम्नलिखित आयत में करता है।
"(तुमने तो अपनी दयालुता से उन्हें क्षमा कर दिया) तो अल्लाह की ओर से ही बडी दयालुता है जिसके कारण तुम उनके लिए नर्म रहे हो, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो यह सब तुम्हारे पास से छंट जाते।"
(पवित्र कुरान ३:१५९)

२.पवित्र वेदों में दूसरा उल्लेख है कि पवित्र नराशंस भविष्यवाणी करेगा।
पैगंबर होने की वजह से ईशदूत जिब्रील समय-समय पर हज़रत मुहम्मद (स.) के पास आते थे। दिव्य कुरान के सीधे अवतरण के द्वारा या ईशदूत जिब्रील के द्वारा हज़रत मुहम्मद (स.) को भविष्य के बारे में समय-समय पर जानकारी मिला करती थी, जिसे हज़रत मुहम्मद (स.) लोगों तक पहुँचा देते थे।
रोमन लोगों कि ईरानीयोंपर जीत की भविष्यवाणी, उनकी प्रसिद्ध भविष्यवाणियों में से एक है, ६४८ ईसवी में रोमनों ने अपनी हार के बाद ६५७ ईसवी में ईरानियों को नैनवा नामक

स्थान पर हराया, इस तरह हज़रत मुहम्मद (स.) की भविष्यवाणी सत्य साबित हुई।

३.पवित्र वेदों का तीसरा उल्लेख है कि पवित्र नराशंस का व्यक्तित्व अत्यन्त मोहक होगा।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि हजरत मुहम्मद (स.) का व्यक्तित्व अत्यंत मोहक था। न केवल हज़रत मुहम्मद (स.) बल्कि सभी पैगंबर और अवतार मोहक व्यक्तित्व के थे, प्रतिष्ठित परिवार से थे, सुचरित्र, धैर्यवान और दूर-दृष्टि वाले थे, आदि। इसलिए ईश्वर को न मानने वाले लोग भी पैगंबर के बारे में व्यक्तिगत स्तर पर उन्हें बदनाम नहीं कर सकते थे। श्री कृष्ण और श्री राम के बारे में कहा जाता है के वे भी अत्यंत मोहक व्यक्तित्व वाले थे। श्री राम को 'आदर्श पुरुष' (अर्थात पुरूषोत्तम) भी माना जाता है।

४.पवित्र वेदों में चौथा उल्लेख है कि पवित्र नराशंस मनुष्यों को उनके पापों से मुक्त कर देगा।

पैगंबरों का मूल कर्तव्य है कि इंसानों को पाप-मुक्त कर दे, और ऐसा हज़रत मुहम्मद (स.) ने किया भी।
दिव्य कुरान में ईश्वर कहता है किः
हमने तुम्हें सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता (Blessing for mankind) बना कर भेजा है। (पवित्र कुरान २१:१०७)
इसका अर्थ यह है कि उन्हें इसलिए भेजा गया है, ताकि मानव जाति मोक्ष प्राप्त कर सके ।

५. पवित्र वेदों में पाँचवाँ उल्लेख है कि नराशंस की १२ पत्नियां होंगी।

यह उल्लेख केवल हज़रत मुहम्मद (स.) के लिए ही सही है, क्योंकि किसी भी धर्म के किसी धर्मगुरु की १२ पत्नियाँ नहीं थी। किसी धर्मगुरु को १२ से कम पत्निया थी तो किसी धर्मगुरू को १२ से ज्यादा भी पत्नियाँ थी। उदा. हजरत इब्राहीम को २ पत्नियाँ थी। हजरत सुलेमान को ३०० और श्री कृष्णजी को १६००० से अधिक पत्नियाँ थी। केवल हज़रत मुहम्मद (स.) को १२ पत्नियाँ थी। उनके नाम इस प्रकार हैं:
(१) हज़रत ख़दीजा (र.अ.), (२) हज़रत सौदा (र.अ.),
(३) हज़रत आयशा (र.अ.),(४) हज़रत हफ्सा (र.अ.),
(५) हज़रत उम्मे सलमा (र.अ.),
(६) हज़रत उम्मे हबीबा (र.अ.),
(७) हज़रत जैनब बिन्ते हजश (र.अ.),
(८) हज़रत जैनब बिन्ते खज़ीमा (र.अ.),
(९) हज़रत जुवैरिया (र.अ.),(१०) हज़रत सूफ़िया (र.अ.)
(११) हज़रत रेहाना(र.अ.) और
(१२) हज़रत मैमूना (र.अ.)

६.पवित्र वेदों में छठा उल्लेख है कि नराशंस ऊँट की सवारी करेंगे।

चूँकि हज़रत मुहम्मद (स.) मक्का/मदीना में रहते थे, जिसके चारों ओर रेगिस्तान है और जैसा कि ऊँट रेगिस्तान में यात्रा करने के लिए सर्वोत्तम साधन है। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने भी उँटों की सवारी की।
ब्राह्मण को ऊँट की सवारी करने की अनुमति नहीं है। इसलिए इससे यह भी पता चलता है कि पवित्र नराशंस ब्राह्मण नहीं थे और न ही भारत वासी हैं। (राजस्थान प्राचीन काल में रेगीस्तान (Desert) नही था)।

७. पवित्र वेदों में सातवां उल्लेख है कि पवित्र नराशंस की लोग प्रशंसा करेंगे।

माइकल एच. हार्ट द्वारा लिखित पुस्तक "The most 100 influential persons in history." में लेखक ने हज़रत मुहम्मद (स.) को पहले स्थान पर रखा है। अर्थात ऐसी ऐतिहासिक व्यक्ति जिनसे दुनिया के सभी लोग सबसे अधिक प्रभावित हुए वे एकमेव व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (स.) ही हैं।
अज़ान (मस्जिदों में नमाज़ को बुलाने के लिए दी जाने वाली पुकार), में मुसलमान, दिन भर में पाँच निर्धारित समय पर, सारी दुनिया में लाउड

स्पीकर पर बुलंद आवाज़ में हज़रत मुहम्मद (स.) का नाम लेते हैं।

जैसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर समय धीरे-धीरे परिवर्तन होता है उसी प्रकार नमाज और अजान का समय भी बदलते रहता हैं, इस कारण हर मिनट और हर सेकेंड को विश्व में कही कही अजान दि जाती हैं। और उनका (हज़रत मुहम्मद (स.)) नाम पुकारा जाता है। अतः मानव वंश में हज़रत मुहम्मद (स.) ही सर्वाधिक प्रशंसनीय व्यक्ति हैं।

८.पवित्र वेदों में भविष्यवाणी की गई है कि ईश्वर पवित्र नराशंस को निम्नलिखित चीजें देगाः
(अ) १० फूल. मालाएँ (ब) १०० सोने के सिक्के
(क) ३०० घोड़े और (ड) १०,००० गाएं

पिछले ४००० वर्ष से वेदों की यह भविष्यवाणी विद्वानों के लिए एक अनबूझ पहेली ही बनी रही। सब इसे समझ पाने में असमर्थ थे। हज़रत मुहम्मद (स.) पर ध्यान केंद्रित करने से इसका हल इस प्रकार से मिला :

अ) हज़रत मुहम्मद (स.) के पास १० समर्पित अनुयायी थे जिन्हें 'अशरए मुबश्शिरह' कहा जाता है। 'अशरा' का अरबी भाषा में अर्थ है १०, और 'मुबश्शिरह' का अर्थ है 'जिन्हे खुश खबरी दे दी गई' (स्वर्ग की)

इन दस भाग्यशाली लोगों के नाम इस प्रकार हैः

(१) हज़रत अबू बक्र (र.अ.), (२) हज़रत उमर (र.अ.), (३) हज़रत उस्मान (र.अ.), (४) हज़रत अली (र.अ.), (५) हज़रत तल्हा (र.अ.), (६) हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास (र.अ.), (७) हज़रत सईद बिन जैद (र.अ.), (८) हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ (र.अ.), (९) हज़रत अबू ओबैदा बिन जर्राह (र.अ.), और (१०) हज़रत जुबैर(र.अ.)

यह १० व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (स.) के अत्यंत समर्पित अनुयायी थे और उनके लिए प्राण त्यागने के लिए उत्सुक रहते थे और हमेशा उनके पास रहने की कोशिश करते थे। इसलिए इनकी तुलना दस फूल-मालाओं से की गई हैं।

ब) हज़रत मुहम्मद (स.) के लगभग १०० अनुयायी ऐसे थे जिन्होंने अपना सब कुछ छोड़ दिया, अपना देश, अपना परिवार, अपना व्यापार आदि, और पैगंबर मुहम्मद (स.) की मस्जिद के निकट बसेरा किया। इन्हें 'असहाबे सुफ्फह' (चबूतरे वाले) कहा जाता है।

इन १०० लोगों ने इस्लाम की शिक्षाओं को सीखने और दूसरों को सिखाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। चुँकि, इस्लाम की शिक्षाओं को फ़ैलाने में यह लोग बहुत महत्वपूर्ण थे इसलिए इनकी 'सोने के सिक्कों' से तुलना की गई।

क) शुरू में मक्का के लोगों ने इस्लाम और मुसलमानों को व्यक्तिगत स्तर पर समाप्त करने का प्रयास किया। अतः हज़रत मुहम्मद (स.) मदीना नामक एक सुरक्षित स्थान को प्रवास कर गये, और वहां से ईश्वर का संदेश फैलाने की ज़िम्मेदारी को पूरा करते रहे। इस चरण में, मुसलमानों और इस्लाम का विनाश करने के लिए मक्का के लगभग एक हजार सैनिकों ने मदीना पर आक्रमण कर दिया । स्वयं का बचाव करने के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके ३१३ अनुयायियों ने १००० आक्रमणकारियों का मुकाबला किया और उन्हें परास्त कर दिया।(इस युद्ध में १४ अनुयायी मारे गए थे।) इन ३१३ लोगों के साहस और बहादुरी को देखते हुए इनकी घोड़ों से तुलना की गई है, जो कि साहस और बहादुरी का प्रतीक माना जाता है। इस लिए वेदों के उल्लेख में इनकी ३०० घोड़ों से उपमा दी गई है (यानी तश्बीह दी गई है)।

ड)हज़रत मुहम्मद (स.) के मक्का से मदीना प्रवासन (Migration) के आठ वर्षों के बाद, जब मक्का के लोगों ने हज़रत मुहम्मद (स.) के साथ की गई अपनी शांति-संधि को तोड़ा तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने १०,००० अनुयायियों को एकत्रित

किया और मक्का की ओर कूच (प्रस्थान) किया। बिना किसी युद्ध या रक्तपात के, उन्होंने मक्का पर जीत प्राप्त कर लिया। चूंकि इन १०,००० अनुयायियों ने कभी भी किसी व्यक्ति को नुकसान नहीं पहुँचाया जैसा कि गायें किसी को नुकसान नहीं पहुँचाती इसलिए वेदों में इनका गायों के रूप में उल्लेख किया गया है।

- जैसा की पैगंबर सिर्फ सदुपदेश ही दे सकता है, वह इस्लाम की शिक्षाओं को समझने और उन पर नियमित रूप से अनुसरण करने के लिए बुद्धि नहीं दे सकता, परंतु ईश्वर ऐसा कर सकता है। इसलिए जो भी कर्म १० अशरए मुबश्शिरह, १०० असहाबे सुफ्फह, ३१३ रक्षकों और १०,००० अनुयायिओं ने किए, वह सब ईश्वर द्वारा दी गई समझ की ही देन है। इसलिए हम ऐसा कह सकते हैं कि ईश्वर ने उन्हें उपहार के रूप में हज़रत मुहम्मद (स.) या पवित्र नराशंस को दिया।

९. पवित्र वेदों में उल्लेख है कि ईश्वर पवित्र नराशंस को ६०,०६० शत्रुओं से बचाएगा।

जब मक्का के लोग इस्लाम के प्रसार को रोकने में असफल रहे, तो उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) की हत्या करने की योजना बनाई। एक रात, चालीस परिवारों से चालीस योद्धाओं ने हज़रत मुहम्मद (स.) के घर को घेराव किया ताकि सुबह के समय जब वह बाहर आते हैं, तो वे उन्हें मार सकें।
उस रात, हज़रत मुहम्मद (स.) अपने घर से बाहर निकले लेकिन दुश्मन उन्हें नहीं देख सके। हज़रत मुहम्मद (स.), उनके बीच से होते हुए निकले और मदीना प्रवासन कर गये।
उस समय मक्का की जनसंख्या लगभग ६०,००० की थी और वे सभी हज़रत मुहम्मद (स.) के शत्रु थे। यह एक चमत्कार ही था के हज़रत मुहम्मद (स.) अपने दुश्मनों के बीच से होते हुए सुरक्षित मदीना पहुँच गये। इसलिए ईश्वर ने यह कहा कि वह पवित्र नराशंस को ६०,०६० शत्रुओं से बचाएगा।

- ऊपर दिए गये (Facts & Figure) को देखते हुए, डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय, डॉ. एम. ए. श्रीवास्तव, पंडित धर्मवीर उपाध्याय और कई अन्य विद्वान इस बात से सहमत हैं कि पवित्र नराशंस और हज़रत मुहम्मद (स.) एक ही हैं।

- नराशंस, कल्कि अवतार और हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में और विस्तृत जानकारी के लिए कृपया निम्न पुस्तकों का अध्ययन करें:

1. Kalki Autar and Hazrat Muhammad (pbuh),
by Dr. Ved Prakash Upadhyay,
Publisher:-Jamhoor Book Depot,
DEOBAND.(U.P) Pin: 247554
2. Narashansa aur Antim Rishi,
by Dr. Ved Prakash Upadhyay
Publisher:-Jamhoor Book Depot,
DEOBAND. (U.P) Pin: 247554
3. Muhammad (s) aur Bhartiya Dharm Granth, by Dr. M.A. Shrivastav
Publisher:- Madhur Sandesh Sangam,
E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar,
New Delhi-110025.
E-mail:
madhursandeshsangam@yahoo.com
4. Muhammad (pbuh) in World Scripture,
by A. H. Vidyarthi
Publisher: Adam Publishers &
Distributors, 1542, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-110002.
www.adambooks.com

▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼

इस्लाम क्या है ?

पवित्र कुरआन में ईश्वर, अपने पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (स.) को आदेश देता है किः

''ए मुहम्मद! ईश्वर ने तुम को जिस धर्म का पालन करने का आदेश दिया है, यही आदेश उस ने मनू (हज़रत नूह) को दिया था और यही आदेश उस ने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा को दिया था। और उस ने सभी को यह भी आदेश दिया था कि धर्म का (अच्छी तरह) पालन करो और एक दूसरे से मत भेद ना रखो।''

(पवित्र कुरान ४२:१३)

तो इस्लाम धर्म कोई नया धर्म नहीं है। यही धर्म मनु (हजरत नुह) का था, यही धर्म हज़रत इसा और मुसा का था। और यही धर्म हर पैगम्बर का रहा है। तो यह धर्म कोई नया धर्म नहीं है बलके ईश्वर के आदेश के अनुसार है। यह शुरू से था और आखिर तक रहेगा। जब जब इस में परिवर्तन हुआ तो ईश्वर ने नये अवतार (पैगम्बर) भेजे ताकि धर्म के बिगाड़ को दूर कर दें। हज़रत मुहम्मद (स.) इसी सुधार की आखरी कड़ी हैं। अब इस कलयुग के यही कल्कि अवतार हैं। हज़रत मुहम्मद (स.) के बाद अब कोई पैग़म्बर या अवतार नहीं आएगा।

इस्लाम क्या सिखाता है?

इस्लाम पांच बातों का आदेश देता है।

१. ईश्वर को एक मानो और हज़रत मुहम्मद (स) को ईश्वर का आखरी पैग़म्बर मानो।

२. ईश्वर की दिन में पाच बार भक्ति करो। (नमाज़ पढ़ो।)

३. साल में एक़ धनवान हैं तो साल में एक बार आप के नफा (Profit) का २.५% ग़रीबों को दान करो।

५. अगर आप धनवान हैं तो जीवन में एक बार मक्का शरीफ की यात्रा करो।

ईश्वर को एक मान कर सिर्फ उसी की भक्ति क्यों की जाए?

हिन्दु धर्म के अनुसारः-

१. अथर्ववेद में है कि,
"स एक एक एकवृदेक एव।"
"ईश्वर एक है, अकेला है, अमर है।"
(अथर्ववेद १:५२:१४)

२. ऋग्वेद में
ईश्वर ही जीवन देता है, मृत्यू देता है और इसी की कृपा से सब प्राणि जीवित हैं।"
(अथर्ववेद १३:०३:०५)

३. उपनिषद में लिखा है,
"एकम् एवम अद्वितीयम्"
"किसी भी साझेदारी के बिना वह अकेला है।"
(चंडोग्य उपनिषद ६:०२:०१)

४. वेदों में लिखा है,
"ऐ (ईश्वर को) माननेवालों, ईश्वर के सिवा किसी और की भक्ति न करों। ईश्वर एक ही है।"(ऋग्वेद ८:०१:०१)

५. वेदान्त के मुताबीक ब्रम्हसुत्र इस तरह है।
"एकम् ब्रम्ह व्दितीय नास्ते नेह ना नास्ते किंचन।"
"ईश्वर एक है, उसके सिवा कोई नहीं है। जरासा भी (पूजने के लायक) नहीं।"

६. अथर्ववेद में कहा हैं,
"ईश्वर एक ही है, जो मणुष्यों के मन कि सारी छुपी बातों को जानता है।" (अथर्ववेद १०:०६:२६)

मुस्लिम धर्म के अनुसारः-

पवित्र कुरआन कहता है, एक ईश्वर के सिवाय कोई भी पुजा के योग्य नही है।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब के पहले खंड में,

सिख धर्म के अनुसार:-

श्री गुरू ग्रंथ साहिब के पहले खंड में, जीपोजीच्या साहब का पहला पद है- एक ही ईश्वर अस्तित्व रखता है, जो वास्तविक रचनाकार है, वह डर और द्वेष रहित है, इसे किसीने जन्म नहीं दिया, वह आदि है और वह (पालता) संभालता है। वह महान तथा दयालु है।"

सिख अपनी प्रार्थना में 'वाह हे गुरू' का पाठ करते हैं। इसका अर्थ है, एक सच्चा ईश्वर।

पारसी धर्म के अनुसार:-

पारसी ईश्वर को अहुरा-मजदा के नाम से पुकारते हैं। उनकी धार्मिक पुस्तक दासातीर कहती है, ईश्वर एक है और कोई भी उसके बराबर नहीं है।

ईसाई और यहूदी धर्म के अनुसार:-

पवित्र बाइबल कहती है;

१. "ओ! इजरॉइल (याकुब पैगम्बर) के बच्चो सुनो, हमारा मालिक ईश्वर है, वह एक है।" (पवित्र बायबल ६:४)

२. "मैं ईश्वर हूँ, मेरे सिवाय कोई भी तुम्हारा बचाव नहीं कर सकता है।" (पवित्र बायबल ४३:११)

३. "मैं ही ईश्वर हूँ, मेरे सिवाय कोई दूसरा ईश्वर नहीं है।" (पवित्र बायबल ४६:६)

४."(मालिक) हमारा ईश्वर एक है" (ड्युटरोनोमी ६:४, मार्क १२:२९:३२)

५. "तुम एक ईश्वर की पुजा करो और उसी के आदेश के अनुसार धार्मिक सेवा करो।"(मॅथ्यु ४:१०)

६. "तुम्हें ये वस्तुएँ इसलिए दिखाई गई थी, ताकि तुम्हें मालूम हो कि हमारा मालिक ईश्वर ही है। उसके अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं। आज के दिन तुम इस बात को स्वीकार करो (मानलो) की हमारा मालिक ईश्वर ही है। स्वर्ग में ऊपर और पृथ्वी पर नीचे, कोई दूसरा नहीं" (ड्युटरोनोमी ४:३५,३९)

तो ईश्वर एक है उसी ने ही हमें पैदा किया। वही हमें पालता है तो हम उसे क्यों ना मानें? उसे छोड़ कर उन देवी देवताओं की पूजा करना जिन्हों ने ना हमें जीवन दिया ना हमें पालते हैं, यह पाप नहीं तो और क्या है?

नमाज़ क्या है?

चौदह साल के वनवास के दौरान एक बार श्री हनूमान जी ने श्रीराम जी से पूछा कि मैं ईश्वर की प्रार्थना कैसे करू तो श्रीराम जी ने श्री हनुमान जी को इस तरह ईश्वर की प्रार्थना करने का तरीका सिखाया।

प्रथमः ताराकः चयवादितिय दंड मुच्यते तीतय
कुंडला कारमचतुर्थ अर्धे चंन्द्रकः
पंचं बिन्दू संयुक्तः ओम मित्यजयोती रूपक

(श्रीराम तत्व अमृत)

पहले सीधे खड़े हो जाओ। फिर दंडवत (सजदा) करो, फिर सीधे बैठ जाओ, फिर आधे चांद की तरह सामने झुक जाओ। फिर सीधे बैठ जाओ और ईश्वर की याद में ध्यान लगाओ।

वेदों के अनुसार ईश्वर कि भक्ति का सर्वश्रेष्ठ तरीका 'अष्टांग' हैं। अष्ट का अर्थ है आठ। अंग का अर्थ है शरीर के आठ भागों से जमीन को छुकर ईश्वर कि प्रार्थना करना। शरीर के आठ भाग इस प्रकार है। माथा, नाक, दोनों हात, दोनों घुटने, दोनों पैर के पंजे, अष्टांग को अरबी में सजदा कहते है और अंग्रेजी में Postration कहते है। बायबल में भी इस प्रकार कि भक्ति को सर्वोत्तम माना गया है। (जेनीसीस १७:३, नंबर २०:०६, जोशो ५:१४, मॅथ्यु २६:३९)

भक्ति का जो तरीका श्रीरामजीने श्री हनुमानजीं को बताया था और वेदों मे 'अष्टांग' के नाम से जाना जाता है, मुसलमानों कि नमाज इन्हीं दो

भक्ति के तरीकों का मिला जुला रूप है। ऊपर बताए गए तरीके और नमाज़ में सिर्फ इतना फर्क है कि नमाज़ में खड़े होने के बाद पहले झुकते हैं फिर सजदा करते हैं। और श्रीराम जी ने पहले दंडवत (सजदा) करने और फिर झुकने के लिए कहा। बाकी सीधे खड़े होना और धरती पर बैठ कर ईश्वर का ध्यान करना एक जैसा है।

तो नमाज़ कोई नया इबादत का तरीका नहीं है। यह तो सदियों से ऋषी मुनी करते रहे हैं।
ऋग्वेद में है कि "हे ईश्वर! हम तेरी प्रार्थना सुबह, दोपहर और सूरज डूबने के बाद करते है। तो हमें अपना सच्चा भक्त बना।"

(ऋग्वेद १०-१५१-६५)

वेदों में 'त्रिकालसंध्या' के बारे में लिखा है यानी दिन में तीन बार ईश्वर कि भक्ति करनी चाहिए। सुबह, दोपहर, शाम। तो दिन में तीन बार ईश्वर को याद करने का शताब्दीयों से नियम रहा है। इस्लाम में इसे पांच बार कर दिया है। जो दो वक्त अतिरिक्त हैं वह शाम (ईशा) और रात (असर) का है।

मेरी अपनी समझ से (जो ग़लत भी हो सकती है) इस के दो कारण हैं। पहला कारण यह है कि अब प्रार्थना एक दम आसान कर दी गई है। सिर्फ पांच से दस मिनट में यह खतम हो जाती है। जबकि पहले ध्यान लगाने में बहुत समय लग जाता था। और दुसरी वज़ह यह है कि पहले ज़माने में शाम को अंधेरा छाते ही लोग खा-पी कर सो जाते थे। अब लोग आधी रात तक जागते हैं।

कुरान शरीफ़ में ईश्वर कहता है कि हम नें मनुष्य को सिर्फ अपनी प्रार्थना (इबादत) के लिए ही बनाया है। (पवित्र कुरान ५१:५६) कुरान में यह भी है कि ईश्वर की याद से ही मन को शांति मिलती है (पवित्र कुरान १३:२८)। इसलिए हर मनुष्य को ईश्वर की दिन में पांच बार प्रार्थना जरूर करनी चाहिए।

साल में एक महीने का उपवास क्यों करें?

लोगों को शराब की लत क्यों होती है? क्योंकि उन का अपने आप पर नियंत्रण (Control) नहीं होता। इसी लिए एक शराबी इस बात को जानता है कि वह ग़लत कर रहा है। फिर भी अपने आप से हार कर शराब पीता है।

शराब, सिगरेट, जुआ और ऐसे बहुत से गलत काम वही छोड सकता है जिसका अपने आप पर और अपनी इच्छाओं पर मज़बूत नियंत्रण (Control) होगा।

भूख इन्सान कि सबसे बड़ी कमज़ोरी है। भूख से बेताब हो कर लोग चोरी करते है, डाका डालते है, और औरतें भीक मॉंगती है या अपनी इज्ज़त बेचती है। जो इन्सान भूख लगने पर भी अपने आप पर नियंत्रण रख सकता है और साधारण इन्सानों की तरह दिन गुजार सकता है। वह अपनी हर इच्छा पर नियंत्रण कर सकता है।
रोज़ा या उपवास यह विधी अपने आप पर नियंत्रण करने की एक ट्रेनिंग है।

मनु ने हिन्दू धर्म के मानने वालों को एक महीने का उपवास रखने का आदेश दिया था।

(मनुस्मृती पाठः६-श्लोक क्र. २४)

हज़रत ईसा (स.) ने खुद ४० दिन का उपवास रखा और ईसाइयों को भी उपवास रखने का आदेश दिया था। (Mathew 17:21, Mark 9-29) और हज़रत मुहम्मद (स.) तो खुद बहोत ज्यादा रोजा रखते थे। मगर ईश्वर ने साधारण लोगों के लिए सिर्फ एक महिने का रोजा फर्ज (Compulsory) किया।

मुक्ती पाने और अपने इच्छाओं पर नियंत्रण करने के लिए पहले ज़माने में लोग घोर तपस्या करते थे। और समाज से कट कर सन्यास ले लेते थे। मगर ईश्वर ने अब इसे सरल कर दिया है। समाज में रहते हुए एक महिने का रोजा रखने से हमारे अंदर अपने आप पर नियंत्रण

रखने कि, उतनी ही शक्ति पैदा होती है, जितनी एक तपस्वी घोर तपस्या करके अपने आप में पैदा करता है। इसलीए इस सरल उपाय पर अवश्य अमल करना चाहिए। और अपनी इच्छाशक्ति (Will Power) को मज़बूत बनाने और सत्य के रास्ते पर मज़बूती के साथ चलने के लिए हमें एक महिने का उपवास जरूर रखना चाहिए।

हज क्यों करे?

मनु के युग में भयंकर बाढ़ आया था। इस में मनु और उसके कुछ साथी बच गए थें। और सारी दुनिया के लोग मारे गए थे।

उस के बाद यह दुनीया मनु के बेटों से फिर बसी। हम सब मनु की ही संतान है। मनु कि संतान धरती के चाहे जीस क्षेत्र में बसे हो, उसने उस भयंकर बाढ़ को जरूर याद रखा। आप इंटरनेट पर सर्च करके पता करे तो आप को मालुम होगा के विश्व के हर देश में इस बाढ़ की कथा जरूर मौजूद है। मगर इस बात से आश्चर्य भी होता है की हर देश की कथा में कुछ ना कुछ असमानता (Difference) जरूर है। ऐसा क्यों?

जब एक पिता के सब संतान है। और बाढ़ भी एक ही था। तो इस कथा में मतभेद क्यो हुआ? इस का कारण है Communication error.

आप अगर दस लोगों को एक सर्कल के रूप में बैठा दें। फिर एक व्यक्ति के कान में चुपके से कुछ कहें और उसे कहें कि आप कि कहीं हुई बात वह अपने पड़ोसी व्यक्ति के कान में चुपके से कह दे। इस तरह हर व्यक्ति अपने पड़ोसी व्यक्ति के कान में आप कि बात कहता रहें। जब दसवे व्यक्ति तक बात पहुंचेगी और आप उस से वही बात सुनेंगे जो आप ने पहले व्यक्ति के कान में कहा था। तो आप को यह सुनकर बहोत आश्चर्य होगा की दसवाँ व्यक्ति आप की बात बिल्कुल तोड़मरोड कर बताऐगा। और ऐसी बात कहेगा जिस का अर्थ आप की कही हुई बात से बिल्कुल अलग होगा।

यह एक सत्य है, और मैनेजमेंट का नियम भी। इसीलीए मैनेजमेंट में Verbal Communication से मना किया जाता है।

बाढ़ कि कथा के साथ भी यही हुआ और विश्व के अन्य धर्मों के साथ भी यहीं हुआ। हज की एक वजह यह भी है कि इस्लाम धर्म के साथ भी ऐसा न हो।

ईश्वर ने विश्व के सभी लोगों को जिवन में एक बार धरती के केन्द्र (Center of Earth) पर जमा होकर एक साथ इबादत (Prayer) करने का हुक्म दिया है। इसी को हज कहते है। विश्व के लोग जब तक एक जगह जमा होते रहेंगे। और एक दूसरे की गलती तथा धर्म के बिगाड़ को दूर करते रहेंगे तो फिर धर्म के कानून कभी नहीं बदलेंगे।

इसी लिए बायबल में भी हज यात्रा का उल्लेख है।(Pslam 84-1-12). और हमने मक्का और मक्तेश्वर के पाठ में पढ़ा था कि वेदों में भी मक्का, काबा शरीफ का वर्णन है और इस की यात्रा के लिए भी कहा गया है। मगर वह लोग जिन्हें धर्म का ज्ञान था उन्होंने साधारण लोगों को हमेशा देव मालावी कथाओं में बहलाए रक्खा। और पवित्र वेदों के (Basic Concept) को कभी समझने नहीं दिया।

हज के और कई कारण (Reason), लाभ (Benefit) तत्वज्ञान (Philosophy) है। उनका इस छोटी सी पुस्तक में विवरण करना मुश्किल है। ▼▼▼▼▼▼▼

पवित्र कल्कि अवतार कौन हैं ?

कल्कि अवतार का तथ्य क्या हैं ?

- पवित्र पुराण के अनुसार कुल २४ अवतार हैं उनमें गौतम बुद्ध २३ वें अवतार हैं। भगवत पुराण के अनुसार २४ वें अवतार का नाम कल्कि होगा।

- गौतम बुद्ध ने अपने शिष्य 'नन्दा' से कहा, ''ऐ नन्दा! न मैं पहला बुद्ध हूँ और न आखरी। मेरे बाद एक और बुद्ध आएगा, उसका नाम 'मैत्रेय' होगा।''(गोस्पेल ऑफ बुद्ध-लेखकः केरस, पृष्ठ-२१७)

- स्वामी विवेकानंद, गुरू नानक जी और हिन्दू धर्म के अनेक बड़े विद्वान, जैसे पंडित सुन्दरलाल, श्री बलराम सिंह परिहार, डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय, डॉ. रमेश प्रसाद गर्ग, पंडित दुर्गा शंकर सत्यार्थी, श्री. किशोरी लाल भगत यह मानते हैं कि अवतार का अर्थ यह नहीं है कि ईश्वर खुद धरती पर जन्म लेगा। अवतार का अर्थ है, ईश्वर का प्रतिनिधि (Representative), ईश्वर का संदेशवाहक या पैगम्बर।''
  (हज़रत हज़रत मुहम्मद और भारतीय धर्म ग्रन्थ, लेखकः डॉ. एम. ए. श्रीवास्तव)

अवतार किस लिए आते हैं ?

- यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
  अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृज्याम्यहम् । (गीता)

  गीता के अनुसारः जब पापी लोगों का समाज पर प्रभुत्व हो जाता है, और दुनिया में अराजकता फैल जाती है, उस समय अवतार आ कर पापी शक्तिओं का नाश करता है। और दुनिया में पुनः शांति और भाईचारा स्थापित (establish) करता है, और भक्तों की प्रतिष्ठा को बहाल करता है।

अन्तिम अवतार किस युग में आएगा ?

- Osborne द्वारा लिखित "Encyclopedia of history" के अनुसारः धरती की आयु ४५५ करोड़ साल है।

- हिन्दू धर्म के अनुसार काल को 4 युगों में बांटा गया है।

- पहला युग सतयुग है, इसे कृत युग भी कहते हैं। यह 17 लाख 28 हज़ार साल लम्बा है।

- दूसरा युग त्रेता युग है, यह १२ लाख ९६ हज़ार साल लम्बा है।

- तीसरा युग है द्वापर युग। यह ८ लाख ६४ हज़ार साल लम्बा है।

- आखरी युग कलयुग है। यह ४ लाख ३६ हज़ार साल लम्बा है।

- वर्तमान युग कल युग है, और इसके लगभग ५१०० साल बीत चुके हैं।

- इत्थ कलौ गतप्राये जनेषु खर धर्मणि-१
  धर्म त्राणाय सत्वेन भगवानवतरिष्यति-२

  अंतिम अवतार जिनका नाम कल्कि अवतार है, कल युग में जन्म लेंगे। (भगवत पुराण १२:२:२७)

कल्कि अवतार किस साल में जन्म लेगा ?

- पणछस्सयं वस्संपण मासजंद गमिय वीर णिवुइ दो
  सगराजो सो कल्कि चतुणवतिय महिप सगमासं
  (त्रिलोक सागर पृष्ठ ३२)

  जैन धर्म के 'त्रिलोक सागर ग्रन्थ' (लेखक नेमी चंद) के अनुसार महावीर स्वामी की मृत्यु के ६०५ साल ५ महीने बाद कल्कि अवतार ने जन्म लिया।
- उत्तर पुराण के अनुसारः महावीर स्वामी के मृत्यु

के १००० साल बाद कल्कि अवतार ने जन्म लिया.
(Gunbhadra Antiquary Vol x UP. 143)

- महावीर स्वामी की मृत्यु की अनुमानित वर्ष ५०० B.C. (इसा पुर्व) है। इसलिए कल्कि अवतार के जन्म की अनुमानित तिथि ५०० A.D (इसवी) है।

कल्कि अवतार किस दिन जन्म लेंगे?

- द्वादश्यां शुक्ल पक्षरस्य माघवे माघवमः-१
  जातो दद्दशुतुः पुत्रं पित्रौहश्टमानसौ-२
  (कल्कि पुरान, २:१५)

कल्कि अवतार का जन्म माधव महीने की १२ तारीख अर्थात पुर्णीमा से दो दिन पहले होगा।

कल्कि अवतार कहाँ जन्म लेंगे?

- शम्भले विष्णुयशसो गृहे प्रादुर्भविष्याम्यहम्।
  (कल्कि पुराण, २:४)

कल्कि अवतार का जन्म संभल ग्राम में होगा।

कल्कि अवतार का किस परिवार से संम्बन्ध होगा?

- शम्भल ग्राम मुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः-१
  भवने विष्णुयशसः कल्कि प्रादुर्भाविष्यति-२
  (कल्कि पुराण, १२:१८२)

कल्कि अवतार प्रमुख पुजारी के घर में पैदा होगा। उसके पिता का नाम विष्णुयश होगा।

- सुमत्या विष्णुयशसा गर्भधत्त वैष्णवम् ।
  (कल्कि पुराण २:४ एवं २:११)

कल्कि अवतार के माँ का नाम सुमति होगा।

कल्कि अवतार की विषेशताएं क्या होंगी?

- अश्वमाशुगमारूमह्य देव दत्तं जगगत्पतिः-१
  असिनासाधु दमनमष्टैश्वर्य गुणान्वितः-२ ।
  (भगवत पुराण, १२ अस्कंध, २:१६)

भागवत पुराण के अनुसारः आठ गुणों से सजा कर ईश्वरदूतों ने उसे एक तेज रफ्तार घोड़ा और तलवार उसके हाथ में दी, ताकि वह दुनिया की रक्षा सभी उपद्रवी तत्वों से कर सके।

- भागवत पुराण के अनुसारः कल्कि अवतार, अंतिम अवतार होगा। (१:३:२४ भागवत पुराण)
- कल्कि पुराण के अनुसारः परशुराम एक पहाड़ी पर कल्कि अवतार को ज्ञान देंगे।
- कल्कि पुराण के अनुसारः कल्कि अवतार उत्तर दिशा की ओर जायेगा और फिर वापस आ जायेगा।
- कल्कि पुराण (२:५) के अनुसारः कल्कि अवतार के चार साथी होंगे, जो शैतानों को काबू करने में कल्कि अवतार की मदद करेंगे।
  चतुर्भिभ्रातृभिर्देव करिष्यामि कलिक्षयम्।
  (कल्कि पुराण, २:५)
- कल्कि पुराण (२:७) कहते हैं कि कल्कि अवतार की ईशदुतों के व्दारा सहायता की जाएगी।
- भागवत पुराण का कहना है कि, कल्कि अवतार अति उत्तम व्यक्तित्व का होगा।
  विचरन्नाशुना क्षोण्यां हयेनाप्रतिमद्युतिः-१
  नृपालिंगप्तछदो दस्युन् कोटिशोनिहनिष्यातिः-२
  (भगवत पुराण १२, अस्कंध २, १:२०)
- अथतेषां भाविष्यन्ति मनांसि विशदानिवै ।
  वसुदेवांगरागति पुण्यगंधा निलस्पृशाम ।
  (भगवत पुराण १२:२:२६)

भगवत पुराण का कहना हैं कि, कल्कि अवतार का शरीर सुगन्धित होगा, और उसके चारों ओर सुगंधित हवा हो जाएगी।

- अष्टा गुणाः पुरूषं दीप्यन्ति
  प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुत च
  पराक्रमश्‍ च बहुभाषिता च
  दानं यथा शक्ति कृतज्ञता च ।।
  (भागवत पुराण १२:२)

भागवत पुराण में यह उल्लेख किया हैं कि कल्कि अवतार आठ निम्न लिखित गुणोंवाला होगाः ज्ञान (knowledge), सम्मानित वंश (honoured family), आत्मसंयम (Self control), दिव्य ज्ञान (Divine knowledge), बहादुरी (Braveness), संयत भाषण (balanced speech), सबसे बड़े दानी (extremely charitable), और अत्याधिक आभारी (great obliged)। कल्कि अवतार वैदिक धर्म की स्थापना करेगा।

अब जब हमें कल्कि अवतार के बारे में बहुत सी जानकारियां हैं, तो आइये हम यह पता करें कि कल्कि अवतार कब आने वाले हैं या आ कर चले भी गए।

विश्लेषण (Analysis):

- जब अमेरिका ने अफ़ग़ानिस्तान पर B-52 बम वर्षक विमानों से हमला किया था तो वे अफ़ग़ानिस्तान की भूमि को बिना छुए वापस लौट गए थे। अमेरिका ने सफलतापूर्वक कई बार पाकिस्तान में तालिबान के ठिकानों पर उपग्रह-निर्देशित प्रक्षेपास्त्रों (Satellite guided missiles) के साथ हमला किया था।

तो हम एक ऐसे युग में हैं, जहाँ एक आदमी दुनिया के दूसरी तरफ हमला कर के धरती पर बगैर कदम रखे वापस आ सकता है। और एक मानव रहित उपग्रह-निर्देशित मिसाइल (Satellite guided missiles) ३००० किलोमीटर की दूरी से सटीकता के साथ दुश्मन के ऊपर गिराया जा सकता है।

अनुसंधान और विकास का काम इतना तेज़ है कि थोड़े समय के बाद लोग आकाश में उपग्रह पर रखे लेज़र बंदूकों के माध्यम से लड़ेगे। क्या हम अभी भी उम्मीद करते हैं कि दुनिया के रक्षक ''अंतिम अवतार'' जन्म लेंगे और घोड़े और तलवार से दुश्मन से लड़ेंगे?

ऐसा होने के लिए, पहले पूरी मानव जाति को उसकी वैज्ञानिक प्रगती के साथ नष्ट होना होगा। और फिर जो लोग बचेंगे उन्हें अपना जीवन पुनः शुन्य की स्थिति से फिर से आरंभ करना होगा और फिर उन कुछ लोगों में जो बच गए, उन के बीच में यदि कोई दुष्ट व्यक्ति है, तो वह तलवार से समाप्त हो सकता है।

लेकिन क्या अगर ऐसा होता है तो, दुनिया के उद्धारक के आने का क्या फ़ायदा है? इसलिए अगर हम एसा सोचते हैं तो हम ग़लत हैं।

- अरबी लोग ११०० ई. से सोडा और कोयले के मिश्रण से विस्फोटक बनाते और प्रयोग करते आ रहे हैं। विस्फोटक के बनते ही तलवार का महत्व कम हो गया था। इसलिए कल्कि अवतार का जन्म ११०० A.D के पहले ही हुआ होगा।

- उत्तर पुराण और त्रिलोक सागर के अनुसार महावार स्वामी की मौत के १००० वर्षों के बाद कल्कि अवतार को जन्म लेना है, जो कि लगभग ५०० ई. है। अब हमें यह पता करना चाहिए कि किसी संत या प्रसिद्ध धार्मिक व्यक्तित्व ने भारत में ५०० ई. में जन्म लिया या नहीं?

- २४ वां अवतार कोई अज्ञात व्यक्ति नहीं हो सकता, उसे प्रसिद्ध होना ही चाहिए, जैसे गौतम बुद्ध, श्री राम और श्री कृष्ण बहुत प्रसिद्ध हैं, और हर कोई उन्हें जानता है। लेकिन दुर्भाग्य से हम ऐसे किसी प्रसिद्ध व्यक्ति अथवा अवतार को नहीं जानते जिन्होंने भारत में ५०० ई के आसपास जन्म लिया हो।

- यह एक संयोग है कि कल्कि अवतार और हज़रत मुहम्मद साहब के जन्म का समय एक ही है। चलिए पुष्टी के लिए कल्कि अवतार को जानने और हज़रत मुहम्मद साहब की पहचान कल्कि अवतार के रूपमें करने के लिए, हम निम्नलिखित जानकारियां और दिव्य पुराणों में की गई भविष्यवाणियों का मिलाप करते हैं।

- जन्म तिथि
- जन्म स्थान
- पारिवारीक पृष्ठभुमि
- पिता का नाम
- माता का नाम
- उनके शिक्षक या ज्ञान के स्त्रोत (Their teacher or source of knowledge)
- उनकी जिम्मेदारियां
- उनके सहयोगि
- उनका बुनियादी व्यक्तित्व
- आखरी अवतार होना
- अन्य संम्बधित पूर्वानुमान

जन्म का दिन:

कल्कि पुराण (२:२५) के अनुसार कल्कि अवतार माधव महीने की १२ तारीख अर्थात चौदहवी के (पूर्णिमा) चॉद से दो दिन पहले जन्म लेगा। हज़रत मुहम्मद (स.) के जन्म का दिन १२ रबी उल अव्वल है। यह दिन भी चौदहवीं के चॉद से दो दिन पहले है।

जन्मस्थान:

हिंदुस्तान में संभल नाम का कोई स्थान नहीं है। दो स्थानों के नाम इससे मिलते जुलते हैं जो हैं संभलपुर और संभार झील। लेकिन वहॉ कोई नहीं जानता कि अवतार या पैगंम्बर जैसे किसी बड़े व्यक्ति ने वहॉ जन्म लिया है। डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय (संस्कृत विव्दान प्रयाग विश्वविदयालय) कहते हैं के 'संभल' स्थान की विशेषता है, स्थान का नाम नहीं। वैदिक संस्कृत में 'सम' का अर्थ है 'शांति' अर्थात संभल वह स्थान है जहॉ हर किसी को शांति मिले। हज़रत मुहम्मद (स.) मक्का में पैदा हुए जिसका नाम 'बलदिल अमीन' है (कुरआन ६५:३)। बलद का अर्थ है शहर और अमीन का अर्थ है शांति। प्रसिद्ध पुस्तक 'Encyclopedia Britanica' एक प्रसिद्ध पुस्तक में भी मक्का को अमन (शांति) का शहर कहा गया है। मक्का शहर में इन्सान और जानवर सब के लिए शांति है। धार्मिक कानून के मुताबिक कोई भी मक्का शहर में इन्सान और जानवर किसी की भी हत्या नहीं कर सकता है, और ना पेड़ -पौधे तोड़ सकता है।

परिवारिक पृष्ठभूमि:

भगवत पुराण के अनुसार कल्कि अवतार का जन्म पुरोहित के घर में होगा। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब जो हज़रत मुहम्मद (स.) के दादा हैं, मक्का के मुख्य धर्मगुरू और काबा के न्यासी (trusty) भी थे।

माता पिता का नाम:

कल्कि अवतार के पिता का नाम विष्णुयश होगा। जिसका अर्थ है विष्णु या ईश्वर के उपासक। हज़रत मुहम्मद (स.) के पिता का नाम अब्दुल्लाह है, जिसका भी अर्थ है ईश्वर का उपासक या आज्ञाकारी। कल्कि पुराण के अनुसार, कल्कि अवतार की मॉ का नाम 'सुमति' होगा अर्थात शांतिपूर्ण (peaceful) और विचारशील। हज़रत मुहम्मद (स.) की मॉ का नाम था 'आमना', जिस का अर्थ भी शांतिपुर्ण, और विचारशील है।

- कल्कि पुराण के अनुसार, कल्कि अवतार अपने शहर से उत्तर की ओर जाएंगे और फिर वापस आएंगे। हज़रत मुहम्मद (स.) अपने पैतृक शहर 'मक्का' से उत्तर की तरफ 'मदीना' चले गए थे, और आठ साल बाद वह फिर से 'मक्का' विजयी हो कर लौटे।

- कल्कि पुराण का कहना है कि कल्कि अवतार पहाड़ पर जाएंगे वहॉ परशुराम से ज्ञान प्राप्त करेंगे। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि हज़रत मुहम्मद (स.) 'ग़ार-ए-हिरा' नामक गुफा में शांति और चिंतन के लिए जाते थे। ४० साल की उम्र में उन्हें ईश्वरदूत 'हज़रत जिब्रईल' के द्वारा पहाड़ की गुफा में पहली बार कुरआन का ज्ञान

प्राप्त हुआ।

- भगवत पुराण (१२:२:६) का कहना है कि कल्कि अवतार दुनिया के रक्षक होंगे। पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता है कि ''हमने हज़रत मुहम्मद (स.) को 'रहमत-उल-लिल आलमीन' के रूप में भेजा है।'' (कुरआन २१:१०७)। 'रहमत' का अर्थ है 'कृपा (blessing)', और 'आलमीन' का मतलब है 'दुनिया' (सम्पूर्ण सृष्टि)। इस का मतलब है कि हज़रत मुहम्मद (स.) से दुनिया को शांतिपूर्ण जीवन, मुक्ति, मोक्ष, और सफलता के लिए मार्गदर्शन मिलेगा।

- कल्कि पुराण (२:५) के अनुसारः कल्कि अपने चार साथियों की मद्‌द से 'काली' अर्थात शैतान को परास्त करेंगे। डब्लू. एल. लैंगर (Encyclopedia of world history page :184) का कहना है कि हज़रत मुहम्मद और उनके चार साथियों हज़रत अबू-बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, और हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने इस्लाम के संदेश को आम किया और पुरानी अमानवीय परंपरा की समाप्ति की।

- कल्कि पुराण कहते हैं, ''कल्कि अवतार की युद्धक्षेत्र में स्वर्गदूतों के द्वारा सहायता की जाएगी।''

  हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके साथी बद्र की लड़ाई में ३१३ थे, जबकि दुश्मन के पास १००० सैनिक थे। खंदक की लड़ाई में मुसलमान ३००० थे, जबकि दुश्मन सैनिक २५००० से अधिक थे। इन दोनों ही लड़ाईयों में, और अन्य कई बार दुश्मन पर विजय के लिए स्वर्गदूतों के द्वारा सहायता की गई। पवित्र कुरआन भी इसकी पुष्टि करता है। देखें अध्याय (३:१२३:११५), (८:६), (२३:६) आदि।

- भगवत पुराण (१२:२२१) के अनुसार कल्कि अवतार के शरीर की गंध सुगंधमय होगी, जिस की वजह से उनके चारों ओर हवा सुगंधित हो जाएगी।

  हदीस में है कि एक बार जब हज़रत मुहम्मद (स.) सो रहे थे, तब हज़रत उम्मे सलमा (रज़ी) ने आपका पसीना जमा कर लिया। जब हज़रत मुहम्मद (स.) जागे तो उन्हों ने पूछा, मेरे पसीने के साथ तुम क्या करोगी? हज़रत उम्मे सलमा ने कहा, हम इसे एक खुश्बू के रूप में इस्तेमाल करेंगे। जो भी हज़रत मुहम्मद (स.) से हाथ मिलाता था उसका हाथ दिनभर सुगंधित रहता था। (शमाइले तिरमिज़ी पृष्ठः२०८)।

  हज़रत मुहम्मद (स.) के दास, हज़रत अनस (रज़ी.) ने कहा, हम हमेशा जान जाते थे, कि हज़रत मुहम्मद (स.) कब अपने कक्ष से निकलते हैं, क्योंकि तब सारी हवा भी सुगन्धित हो जाती थी।

  ("Life of Mohammad" By Sir William Muir - page No. 342)

  भगवत पुराण के अनुसारः (खंड २, अध्याय २) में है कल्कि अवतार आठ विशेष गुण, अर्थात बुध्दिमत्ता (wisdom), सम्मानित वंश (honoured family), स्वंय पर नियंत्रण (Self control), दिव्य ज्ञान (divine knowledge), वीरता (braveness), अत्यंत दानशीलता (extremely charitable), मृदु भाषी (balance/sweet speech) और कृतज्ञता (gratefulness) आदि से सुसज्जित तथा संम्पन्न होंगे।

- गैर मुस्लिम लेखकों के व्दारा लिखित पुस्तकें भी हज़रत मुहम्मद (स.) के आठ गुणों की पुष्टि करती हैं;

1. Life of Mohammad by Sir William Muir. Published by Smith elder & co.(London)
2. Introduction of the speeches of Mohammad by Lane Poole. Published by MaCmillan & Co. (London)
3. Mohammad and Mohammad by R. Bos Worth Smith.

• भगवत पुराण (१२:२:१९) में है कि कल्कि अवतार को आठ गुणों के साथ तेज रफ्तार घोड़ा और तलवार भी दी जाएगी, जिससे वे दुराचारीयों का नाश करेंगे।
ईश्वर-दूत हज़रत जिब्रईलन (अ.स.) ने हज़रत मुहम्मद (स.) को बुर्राक नामक तेज़ रफ्तार घोडा दिया था। हज़रत मुहम्मद (स.) के पास ७ घोड़े और ९ तलवारें थीं और उन्हें वह इस्लाम का सन्देश लोगों तक पहुँचाने तथा अत्याचारियों से लढ़ने के लिए इस्तेमाल करते थे।

• भगवत पुराण (१:३:२४) में है कि कल्कि अवतार अंन्तिम अवतार होंगे।
दिव्य कुरआन में भी हजरत हज़रत मुहम्मद (स.) को आखरी पैंगम्बर कहा गया हैं।
(कुरआन ३३:४०)

• पुराण के अनुसारः कल्कि अवतार वैदिक धर्म की स्थापना करेंगे।

• जब मनु (हज़रत नुह) के लोगों ने उनकी बात नहीं मानी तो एक बहुत बडे सैलाब ने सारी दुनिया को घेर लिया और इसमें सिर्फ मनु के अनुयायी ही बच पाए। अगर मनु और उनके अनुयायी बाढ के बाद वैदिक धर्म को मान रहें हैं तो इस्लाम एक वैदिक धर्म ही है और कुरआन की यह आयत इसकी पुष्टि करती हैं:

• ''ए मुहम्मद! ईश्वर ने तुम को जिस धर्म का पालन करने का आदेश दिया है, यही आदेश उस ने मनू (हज़रत नूह) को दिया था और यही आदेश उस ने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा को दिया था। और उस ने सभी को यह भी आदेश दिया था कि धर्म का (अच्छी तरह) पालन करो और एक दूसरे से मत भेद ना रखो।''
(पवित्र कुरआन ४२:१३)

• कल्कि अवतार के बारे में वर्णित सारी विशेषताएँ हज़रत मुहम्मद (स.) से मेल खाती है, इसलिए संस्कृत विव्दान जैसे डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय, डॉ. एम.ए.श्रीवास्तव और पंडीत धर्मवीर उपाध्याय का कहना है कि हज़रत मुहम्मद (स.) ही वे कल्कि अवतार हैं जिनकी सभी लोग अब तक प्रतिक्षा कर रहे है। अधिक जानकारी के लिए कृपया निम्न लिखित पुस्तकों का अध्ययन करें।

१. ''कल्कि अवतार और हज़रत मुहम्मद''
(डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय)
२. ''नराशंस और अंतिम ऋषि''
(डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय)
३. ''हज़रत मुहम्मद(स.) और भारतीय धर्म ग्रंथ''
(डॉ. एम.ए.श्रीवास्तव)
४. "Muhammed in world scripture"
(ए.एच. विद्यार्थी.)

• हमने जो भी चर्चा यहाँ की वह कल्कि अवतार और हज़रत मुहम्मद (स.) के बीच का रिश्ता बताती है। लेकिन कोई यह कह सकता है कि हमने जो भी चर्चा की वह हमारी कल्पना मात्र थी, और यह कोई ठोस सबूत नहीं है कि कल्कि अवतार ही हज़रत मुहम्मद (स.) हैं या हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में पवित्र पुराणों में भविष्यवाणी की है।

• अतः कल्कि अवतार की पहचान की पुष्टि करने के लिए और हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में पुराणों की भविष्यवाणी को समझने के लिए हम हिंदू धर्म की और कुछ पुस्तकों का हवाला देते हैं, वह इस तरह है:

१.अज्ञान हेतु कृत मोहमदान्धकार नांश विधांय हित दो दयेत विवेक। (श्रीमद भगवत पुराण २:७२)
अर्थातः मोहम्मद के ज़रिए (अज्ञान का) अंधेरा दूर होगा और ज्ञान और spirituality परवान चढ़ेगी।

२.एतस्मिन्नन्तिरे म्लेच्छ आचार्य्येण समन्वितः।।
महामद इति ख्यातः शिष्यशाखा समन्वितः।।
(भ.पू. पर्व-३, खण्ड-३ अध्याय ३, श्लोक-५)

अर्थातः भविष्य पुराण के अनुसार, ''किसी दूसरे देश में एक नबी अपने साथियों के साथ आएगा। उसका नाम 'महामद' होगा, और वह एक मरूस्थलीय (desert) जगह पर प्रकट होगा''

३.पंडित धरमवीर ने एक प्रसिद्ध किताब 'अन्तिम ईश दूत' लिखी जो १६३२ में ''नैश्नल प्रिंटिंग प्रेस, दरयागंज, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई। अपनी इस पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि काग-बुसंडी और गरुड़, श्री राम के साथ काफी समय तक रहे, और न वह केवल उनकी शिक्षाओं का पालन करते थे बल्कि वह श्री राम की इन शिक्षाओं को आम लोगों तक पहुँचाते भी थे। तुलसी दास जी ने उन्हीं शिक्षाओं का अपने संग्राम पुराण के अनुवाद में उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है कि शंकर जी ने अपने पुत्र से भविष्य के धर्म के बारे में इन शब्दों में बताया:

तुलसी दास जी की भविष्यवाणी:

यहां न पक्षपात कछु राखहुं वेद पुराण, संत मत भाखहुं	बिना किसी भेदभाव के में संतों, वेदों और पुराणों की शिक्षाएं बता रहा हुँ।
सवंत विक्रम दोऊ अनङा। महाकोक नस चतुर्पतङा	वह सातवी शताब्दी संवत में जन्म लेगा और उसके साथ चार चमकते सितारे होंगे।
राजनीति भव प्रीती दिखावै आपन मत सबका समझावै	वह तर्क (बुद्धि और प्रेम) के साथ शासन करेगा और अपनी शिक्षाओं से लोगों को सहमत (Convince) करेगा।
सुरन चतुसुदर सतचारी। तिनको वंश भयो अति भारी	उसके चार खलीफा होंगे जिनके द्वारा उसके अनुयायी बहुत बढ़ेंगे।
तब तक सुन्दर मद्दिकोया। बिना महामद पार न होया।	जब तक ईश्वरीय पुस्तक पृथ्वी पर है, बिना
तबसे मानहु जन्तु भिखारी। समस्थ नात एहि व्रतधारी।	महामद का अनुसरण किए कोई सफल ना होगा आम लोग, भिखारी और जीव-जंतु महामद का नाम लेने से ईश्वर को मानने वाले बनेंगे।
हर सुन्दर निर्माण न होई तुलसी वचन सत्य सच होई	तुलसी दास सत्य कहते हैं कि उसके मोहम्मद (स.) बाद

संग्राम पुराण, स्कन्द १२, कांड ६: पद्यानुवाद, गोस्वामी तुलसीदास
(हज़रत मुहम्मद (स) और भातीय धर्म ग्रंथ, डॉ.एम.ए.श्रीवास्तव, पेज न. १८)

४.उपनिषदों में भी हज़रत मोहम्मद (स.) के बारे में भविष्यवाणीयाँ हैं। नागेन्द्रनाथ बसू द्वारा संपादित विष्वकोष के द्वितीय खण्ड में उपनिषदों के वे श्लोक दिए गए हैं जिस में इस्लाम और पैगम्बर का ज़िकर (उल्लेख) है। इन में से कुछ प्रमुख श्लोक और उनके अर्थ इस प्रकार हैं:

अस्माल्लां इल्ले मित्रावरूणा दिव्यानि धत्त।
इल्लल्ले वरूणा राजा पुनदुर्दः।
हयामित्रो इल्लां इल्लल्ले इल्लां वरूणो मित्रस्तेजस्कामः ।।१।।
होतारमिन्द्रो होतारमिन्द्र महासुरिन्द्राः।
अल्लो ज्येष्ठं श्रेष्ठं परमं पूर्ण ब्रह्माणं अल्लाम् ।।२।।
अल्लो रसूल महामद रकबरस्य अल्लो अल्लाम् ।।३।।
(अल्लोपनिषद १,२,३)

अर्थात, "इस देवता का नाम अल्लाह है। वह एक है। मित्रा और वरूण आदि उसकी विशेषताएँ हैं। वास्तव में अल्लाह वरूण है जो तमाम सृष्टि का बादशाह है। मित्रो! उस अल्लाह को अपना पूज्य समजो। वह वरूण है और एक दोस्त की तरह वह तमाम लोगों के काम सँवारता है। अल्लाह सबसे बड़ा, सबसे बेहतर, सबसे ज़्यादा पवित्र है। मुहम्मद (स.) अल्लाह के श्रेष्ठतर रसुल हैं। अल्लाह आदि, अंत और सारे

संसार का पालनहार है। तमाम अच्छे नाम अल्लाह के लिए ही हैं। वास्तव में अल्लाह ही ने सुरज, चाँद और सितारे पैदा किए हैं।"

आदल्ला बूक मेककम

अल्लबूक निखादम ।।४।।	इस श्लोक का अनुवाद नहीं हो सका।
अला यज्ञन हुत हुत्वा अल्ला सुर्य्य चंद्र सर्व नक्षत्रा ।।५।।	अल्लाह की युगों युगों से पूजा हो रही है, सूरज, चाँद और तारे सब अल्लाह की रचना है।
अल्लो ऋषीणां सर्व दिव्यां इन्द्रायपूर्व माया परमन्तरिक्षा ।।६।।	अल्लाह संतों का रक्षक है, वह सबसे महान है, अल्लाह सब वस्तुओं से पहले है और सारे ब्रह्माण्ड से अधिक विलक्षण है।
अल्लः पृथिव्या अन्तरिक्ष्ञं विश्वरूपम् ।।७।।	अल्लाह का (उसकी शक्तिओं का) दर्शन पृथ्वी, आकाश और सौर्य मंडल की सभी वस्तुओं को होता है।
इल्लांकबर इल्लांकबर इल्लां इल्लल्लेति इल्लल्ला ।।८।।	अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, उस जैसा कोई नहीं।
ओम अल्ला इल्लल्ला अनदि	ऊँ अर्थात अल्लाह। हम उसका आरंभ और उसका अंत नहीं पता कर सकते। सारी बुराइयों से रक्षा करने के लिए हम ऐसे अल्लाह से प्रार्थना करते हैं।
दे स्वरूपाय अथर्वण श्यामा हुह्री जनान पशून सिद्धान जलवरान् अदृश्टं कुरू कुरू फट	ऐ अल्लाह! बुरे, गुनाहगार, और लागों को गुमराह करने वाले धार्मिक लोगों(पुरोहितों) का नाश कर, और पानी के नुकसान पहुँचाने वाले किटाणुओं (V i r o u s & Bacterious) से हमारी रक्षा कर।
असुरसंहारिणी हुं हीं अल्लो रसुल महमदरकबरस्य अल्लो	अल्लाह दानव शक्ति का नाश करने वाला है, मुहम्मद (स.), अल्लाह के पैगंबर हैं।
अल्लाम इल्लल्लेति इल्लल्ला	अल्लाह तो अल्लाह ही है, उस जैसा कोई नहीं। (अल्लोपनिषद ४-१०)

गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित "कल्याण" पत्रिका के विषेशांक "उपनिषद् अंक" में २२० उपनिषदों का वर्णन है। इन २२० उपनिषदों में अल्लोपनिषद १५ वे स्थान पर है। डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय ने भी अल्लोपनिषद का वर्णन अपनी पुस्तक "वैदिक साहित्य-एक विवेचना" में किया है, जो प्रदीप प्रकाशन से १६८६ में प्रकाशित हुई।

• हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में भविष्यवाणीयां केवल हिन्दू धर्म के ग्रन्थों में ही नहीं है बल्कि हर धर्म में हैं। अन्य धर्मों के ग्रन्थों की भविष्यवाणीयां इस प्रकार हैं:

यहूदी धर्म में भविष्यवाणी:

• में उनके लिए उनके भाईयों के बीच में से (मूसा की तरह) एक नबी को उत्पन्न करूँगा; और मैं अपना वचन उसके मुंह में डालूँगा; और जिस बात की उसे मैं आज्ञा दुंगा, वही वह उनको (मनुष्य-जाती को) कह सुनाएगा।

(Old Testament, Deuteronomy 18:18)

ईसाई धर्म में भविष्यवाणी:

येशु मसीह पवित्र बाइबिल में कहते हैं;

- मैं तो तुम्हें पाप से प्रायश्चित करने (Baptism) के लिए पानी से बपतिस्मा देता हुँ। परंन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझसे शक्तिषाली है, मैं उसकी जूती उठाने योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग (by force) से बप्तिसमा देगा।(St. Matthew 3:11)
- मूल हिब्रु बाइबिल (Old Testament), के सुलेमान (Solomon) की किताब (अध्याय५, श्लोक १६) कहते है:

  हिक्को मुमिताकीम वे कुल्लो मुहम्मदीम जेहदूदेह व जेहरई बयना जेरूसलेम

  (Old Testament, book Solomon, Ch. No.5, Verse No.16)

  अर्थात "उसके बोल कितने मीठे हैं, वह बहूत प्यारा है। ऐ जेरूसलेम की बेटिओं, हज़रत मुहम्मद मेरा प्यारा और मेरा दोस्त है" (हिब्रु भाषा में नाम के साथ इम आदर के लिए लगाया जाता है, इसलिए यहॉं पर नाम मुहम्मदिम आया है।)

बौध्द धर्म में भविष्यवाणी:

- दिव्य पुराण में है कि गौतम बुध ईश्वर के २३ वें अवतार हैं। बुध ने अपने भक्त नंदा से कहा 'हे नंदा!, इस दुनिया में मैं पहला बुद्ध नहीं हूँ और ना ही मैं आखरी हूँ। आने वाले समय में, इस दुनिया में एक और बुद्ध आएगा, जो सच्चाई और दानता सिखाएगा। शुद्ध और पवित्र शिक्षाएं देगा। उसका दिल निर्मल होगा। वह ज्ञानी होगा। वह लोगों का नेतृत्व करेगा और सभी लोग उससे मार्गदर्शन लेंगे। वह सत्य सिखाएगा। वह दुनिया को जीवन का सरस रास्ता देगा, जो शुद्ध और पूर्ण होगा। हे नंदा, उसका नाम मैत्रेय होगा।'

  (Gospel of Buddha by Carus, page 217)
- डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय अपनी किताबें (दो पुस्तकें जिनका पहले उल्लेख हुआ है) सिद्ध कर चुके है कि इन पवित्र धार्मिक पुस्तकों में सभी भविष्यवाणियॉं हज़रत मुहम्मद के लिए ही हैं।

• यह सब लिखने का उद्देश क्या है?

यदि हम विदेश जाएँ जहॉं पर हर एक नया और अपरिचित हो, ऐसे में हमें यदि मालूम हो के उन्ही में से एक व्यक्ति हमारे देश का है तो उसके विषय में बिना कुछ जाने ही दोस्ती, सहानभुति और आकर्षण का एहसास होता है। क्योंकि उस व्यक्ति और हमारे बीच समानता है, और वह है मातृभूमि।

- यह समानता का विचार दो अपरिचितों के बीच की दूरी को कम करता है। ऐसा ही उस समय भी होता है जब हम अपने और दूसरे धर्मों के बीच समान बातों को जानें। अब हमने जाना के हिन्दू धर्म के पवित्र नराशंस/कल्कि अवतार और इस्लाम के हज़रत मुहम्मद (स.) एक ही हैं। यह समानता का एहसास हिन्दु-मुस्लिम के बीच के द्वेष को कम कर देगा। यह जानकारी हमें आम लोगों के बीच फैलाना चाहिए। जिससे उनके बीच भेद भाव कम हो और मानव जीवन में शांति आए और संसार के लोग समृद्ध जीवन व्यतित करें।

▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼

पुस्तक का सारांश
Summery of the Book

१. ईश्वर एक है। निराकार है। हमें बस उसकी ही भक्ति व उपासना करनी चाहीए।

२. लोगों को धर्म का ज्ञान देने ईश्वर ने हर देश और हर युग में पैगम्बर भेजे, जिन की कुल संख्या लगभाग १,२४,००० है। उन में से कुछ नाम इस तरह हैं।

१. हज़रत आदम (अ.स.)
(जिन्हें ब्रम्हा भी कहा गया।)
२. हज़रत नूह (अ.स.)(जिन्हें मनु भी कहा गया।)
३. हज़रत इब्राहीम (अ.स.)
(जिन्हें अबिराम और ब्रम्हा भी कहा गया।)
४. हज़रत इस्माईल (अ.स.)
(जिन्हें अथर्ववेद में अथर्वा कहा गया।)
५. हज़रत इस्हाक (अ.स.)
(जिन्हें अथर्ववेद में अंगरिका कहा गया।)
६. हज़रत मुहम्मद (स.)
(जिन्हें वेद और पुराणों में नराशंस, कल्कि अवतार, महामे ऋषी, महामद, अदम इत्यादि कहा गया।)
७. हज़रत ईसा (अ.स.)
८. हज़रत मूसा (अ.स)
(भविष्य पुराण में हज़रत ईसा (अ.स.) और हज़रत मूसा (अ.स.) का विवरण है।

इन सब पैगम्बरों का उल्लेख बाइबल, कुरआन वेद और पुराणों में है। इस लिए हमें इन सब को सच मानना चाहिए और इन का आदर करना चाहिए।

३. हमारा जनम एक बार हुआ है। अब जो हमारी मृत्यु होगी वह भी एक बार ही होगी। फिर दूसरा जन्म नहीं होगा। हाँ मरने के बाद परलोक में ईश्वर हमें फिर ज़िंदा करेगा।

४. मरने के बाद इन्सान के कर्मों के अनुसार कयामत तक आराम या तकलीफ होगी।

५. कयामत में कर्मों का हिसाब किताब होगा। एक ईश्वर को माना और अच्छे कर्म किए तो स्वर्ग मिलेगा। एक ईश्वर को माना और बुरे कर्म किए तो कुछ समय के लिए नरक की सजा होगी मगर सज़ा पूरी होने पर स्वर्ग मिलेगा।

६. अगर एक ईश्वर के साथ और बहुत सारे पैगम्बर, वली-अल्लाह, महापुरूष या देवी देवता को ईश्वर माना या ईश्वर कि तरह धन और मुक्ती देने वाला माना और उन की पूजा की, और अच्छे कर्म भी किए तो इसी संसार में उसका फल मिलेगा। मरने के बाद एक ईश्वर को ना मानने वालों के लिए सिर्फ नरक ही हैं।

७. सभी धार्मिक ग्रंथो का आदर करना चाहिए।

८. हज़रत मोहम्मद (स.) आखरी नबी या पैगम्बर या अवतार है। उनके बाद अब कोई पैगम्बर या अवतार नहीं आऐगा। हज़रत इसा और हज़रत मेहदी अगर धरती पर आए तो भी हज़रत मुहम्मद (स.) को ही मानने वाले होंगे।

९. पवित्र कुरान में ईश्वर ने कहा है कि मैं ने (ईश्वर ने) जो धर्म की शिक्षा हज़रत मोहम्मद को दी है वही उस ने हज़रत इब्राहीम और सभी पैगम्बरों को दिया था। तो इस्लाम कोई नया धर्म नहीं है।

१०. हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा है कि ईश्वर ने मुझे सर्व श्रेष्ठ आचरण धरती के सभी लोगों को सिखाने के लिए भेजा है। इस लिए वह जो हज़रत मुहम्मद (स.) को पैग़म्बर मानते हैं उनके आचरण भी सर्व श्रेष्ठ होने चाहिऐं। (हदीस मोत्ता)

११. ईश्वर ने कहा है कि यह संसार मेरा परिवार है इसलिए ईश्वर की उपासना का एक तरीका उस के परिवार की सेवा करना भी है। (हदीस)

▼▼▼▼▼▼▼

पवित्र वेद और पवित्र क़ुरआन के एकसमान श्लोक

(ईश्वर कि कृपा के श्लोक)

<table>
<tr><th>पवित्र वेदों के श्लोक</th><th>पवित्र क़ुरआन के श्लोक</th></tr>
<tr><td>• न भोजा मम्रुनं न्यर्थमीयुनं रष्यिन्ति न व्यथन्ते ह भोजाः।
इदं यिव्दश्चं भुवनं स्वश्चैतत्सर्व दक्षिणैभ्यो द्दाति।
(ऋग्वेद १०:१६७:८)

दानशील लोग अमर हो जाते हैं, वे न तो बर्बाद होतें हैं और न दुःख, क्लेश, भय से पीड़ित होते हैं। दान इन दाताओं को इस विश्व एवं स्वर्ग लोक की सुविधाएं प्रदान करता है।</td><td>• अल्लजी-न युन्फिक़ू-न अम्वालहुम् बिल्लयलि वन्नहारि सिर्रवं-व अलानि-यतन् फ लहुम् अजूरूहुम् अिन-द रब्बिहिम् व ला खवफुन् अलयहिम् व ला हुम् यहजनून (क़ुरआन २:२७४)

जो लोग अपने माल रात-दिन खुले और छिपे ख़र्च करते हैं उनका बदला उनके रब के पास है और उनके लिए किसी ख़ौफ और रंज की बात नहीं।</td></tr>
<tr><td>• सइद् भोगो यो गृहवे ददात्यन्न कामाय चरते कृशाय।
अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम।। (ऋग्वेद १०:११७:३)

जो निर्धनों और अभाव से पीड़ितों की सहायता के लिए दान करता है उसका भला होता है, उसके शत्रु भी उसके मित्र बन जाते हैं।</td><td>• वज़्ज़रा-इ वल काज़िमीनल-गयज वलआफ़ि-न अनिन्नासि वल्लाहु युहिब्बुल-मुहसिनीन
(क़ुरआन ३:१३४)

जो प्रत्येक दशा में अपने माल ख़र्च करते हैं चाहे बुरे हाल में हों या अच्छे हाल में, जो ग़ुस्से को पी जाते हैं और दूसरों के क़ुसूर को माफ़ कर देते हैं ऐसे नेक लोग अल्लाह को बहुत प्रिय है</td></tr>
<tr><td>• यह एक इद् विद्यतेवसुं मर्ताय दाशुषे
(ऋग्वेद १:८४:७)
जो परमेश्वर एक है वही दानशील मनुष्य को बहुत प्रकार जीविका देती है।</td><td>• व अन्फिक़ू खयरल्-लिअन्फ़ुसिकुम्
(क़ुरआन ६४:१६)
अपने माल ख़र्च करो, यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है।

• इन् तुक्रिज़ुल्ला-ह कर्-जन् ह-स-नंय्युज़ाअिफ़हु लकुम् व यग्फिर् लकुम् (क़ुरआन ६४:१७)

अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो तो वह तुम्हें कई गुना बढ़ाकर देगा और तुम्हारे क़ुसूरों को माफ़ करेगा ।</td></tr>
</table>

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• पवमान ऋतं बृहच्छुं ज्योतिरजीजनत्। (ऋग्वेद ९:६६:२४)	• किताबुन् अन्जल्नाहु इलय-क लितुख्रिजन्ना-स मिनज्जुलुमाति इलन्नूरि (कुरआन १४:१)
पावक विधान ने अति उज्जवल ज्योति को जन्म दिया और काले अंधकार को नष्ट किया।	ऐ मुहम्मद! यह एक किताब है जिसको हमने तुम्हारी ओर अवतरित किया है ताकि तुम लोगों को अँधेरों से निकालकर प्रकाश में लाओ,उनके रब की मेहरबानी से, उस ईश्वर के मार्ग पर जो प्रभुत्वशाली और अपने-आप में प्रशंसनीय है
• स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व (यजुर्वेद.३:१५) तू ही कर्म कर और तू ही उसका फल भोग।	• अल्ला तंजिरू वाजिरतु वविज्-र उखरा (कुरआन ५३:३८) वहाँ कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।

पापियों को चेतावनी

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति (ऋग्वेद १:१६४:३६) जो उस ब्रहम को नहीं जानता वह वेद से क्या करेगा।	• युज़िल्लु बिही कसीरंव-व यह्दी बीही कसीरन् - वमा युज़िल्लु बिही इल्लल्-फ़ासिक़िन इस प्रकार अल्लाह एक ही बात से बहुतों को गुमराही में डाल देता है और बहुतों को सीधा मार्ग दिखा देता है। और उससे गुमराही में वह उन्हीं को डालता है जो फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) हैं। (कुरआन २:२६)
• उत त्व पश्यन्त ददर्श वाचमुत त्वः श्रृण्वन्न श्रुणोत्ये नाम। (ऋग्वेद १०:७१:४) बुद्धि हीन लोग ग्रंथ देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सुनते।	• वलहुम् अअ्-युनुल-ला-युब्सिरू-न बिहा व लहुमूआजानुल्-ला-यस्मअू-नबिहा-उलाइ-क-कँल् अन्आमि बल हुम अजल्लु (कुरआन ७:१७६) उनके पास दिल है मगर वे उनसे सोचते नहीं। उनके पास आँखे हैं मगर वे उनसे देखते नहीं। उनके पास कान हैं मगर वे उनसे सुनते नहीं। वे जानवरों के समान हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा गए-गुज़रे, ये वे लोग हैं जो ग़फ़लत में खोए गए हैं।
• मा चिदन्यव्दि शसंत सखायो मा रिषण्य। (ऋग्वेद ०८:०१:०१) हे मित्रों परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य की उपासना न करो तो तुम्हारी हिंसा न होगी।	• अल्ला तअ-बुद् इल्लल्ला-ह इन्नी अखाफु अलयकुम्-ब- यवमिन् अलीम (कुरआन ११:२६) कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो नहीं तो मुझे आशंका है कि तुमपर एक दिन दर्दनाक अज़ाब आएगा।''
• अन्धंतमः प्र विशन्ति येअसंभूतिमुपासते। ततो भुय अइव ते तमो य अ उ अम्भूत्यां रताः।। (यर्जुरवेद ४०:०६) जो असंभूति(अर्थात प्रकृति रूप जड पदार्थ) की उपासना करते हैं वे घोर अंधकार (अन्धन्तम नामक नरक) में प्रविष्ट होते हैं। और जो सम्भूति (जड पदार्थ व प्रकृति से भिन्न सृष्टि) में स्मरण करते हैं वे उससे भी अधिक अन्धकारमें पड़ते हैं।	• कुलू अ-तअ-बुदू-न मिन् दुनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लकुम् जर्रंव-व ला नफअन् वल्लाहु हुवस्समीअुल-अलीम। (कुरआन ५:७६) इनसे कहो, क्या तुम अल्लाह को छोड़कर उसकी इबादत करते हो जो न तुम्हारे नुक़सान का अधिकार रखता है न नफ़ा का? हालाँकि सबकी सुनने और सब कुछ जाननेवाला तो अल्लाह ही है।

पापीयों को किस प्रकार दंड होगा

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• असुर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसा वृताः तॉंस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः (यर्जुरवेद ४०:३) जो मनुष्य जीते हुए अपनी आत्मा का हनन करते हैं, वे मरने के पीछे अंधकारमय असुरों के लोक को जाते हैं।	• वल्लजीना क-फ-रू बिआयातिना हुम अस्हाबुल मशूअमा। अलैहिम नारूम मुअ् सदा (कुरआन ९०:१९-२०) और जिन्होंने हमारी आयतों को मानने से इनकार किया वे बाएँ बाजूवाले हैं, उनपर आग छाई हुई होगी।
• य आधाय चकमानाय पित्वो अन्नवान्त्सन् सफितायो पजरग्भुषे। स्थिरंमनः कृण्णुते सेवते पुरोतो चितूस मर्डितार न विन्दते।। (ऋग्वेद १०:११७:२) जो दुर्बल, अन्न के चाहने वाले, दरिद्रता से पीड़ित को, अन्न होते हुए भी सहायता नहीं देता उसको कष्ट आने पर कोई सुख नहीं मिलता।	• फ़-जालिकल्लजी यदुअ-अुल-यतीम व ला यहुज्जु अला तआमिलू-मिस्किन फवयलुल-लिल्मुसल्लीन (कुरआन ८९:१६:२०) और जब वह उसको आज़माइश में डालता है और उसकी रोज़ी उसपर तंग कर देता है तो वह कहता है मेरे रब ने मुझे अपमानित कर दिया। हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम अनाथ से आदर का व्यवहार नहीं करते, और मुहताज को खाना खिलाने पर एक-दूसरे को नहीं उकसाते, और मीरास का सारा माल समेटकर खा जाते हो, और धन के प्रेम में बुरी तर जकड़े हुए हो।
• ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृतः (ऋग्वेद ९:७३:६) सत्य के मार्ग को दुष्कर्मी पार नहीं कर पाते।	• व इंय्यरौ सबीलर्रुश्दि ला यत्तकखिजूहु सबीलन् (कुरआन ७:१४६) मैं अपनी निशानियों से उन लोगों की निगाहें फेर दूँगा जो नाहक़ ज़मीन में बड़े बनते हैं, वे चाहे कोई निशानी देख लें कभी उसपर ईमान नहीं लाएँगे, अगर सीधा मार्ग उनके सामने आए तो उसे अपनाएँगे नहीं और अगर टेढ़ा मार्ग दिखाई दे तो उसपर चल पड़ेंगे, इसलिए कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे बेपरवाही करते रहे।
• केवलागो भवति केवलादी (ऋग्वेद १०:११७:६) जो अपनी कमाई अकेला खाता है वह पाप खाता है।	• लन्तनालुलूबिर्र-र हूत्ता तुन्फिकू मिम्मा तुहिब्बून (कुरआन ३:९२) तुम नेकी को पहुँच नहीं सकते जब तक कि अपनी वे चीज़ें (अल्लाह के मार्ग में) ख़र्च न करो जो तुम्हें प्रिय हैं।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• माधमन्त्रं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य। नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाधो भवति केवलादी। (ऋग्वेद १०:११७:६) मूर्ख बिना परिश्रम अन्न (धन आदि) कमाता है। सत्य कहता हूं कि वह उसका विनाश ही है। न तो वह सन्तों को खिलाता है और न मित्र को। अकेला खानेवाला केवल पाप का भक्षण करता है।	• फक्कुर-क-बतिन, औइत्आमुन फी यौमिन ज़ी मस्ग़बा, यतीमन् ज़ा म मत्रबा। सुम्मा काना मिनल् लज़ीना आ-म-नू व-त-वासौ बिस्सब्री व त-वासौ बिल मर्हमा, उलाइका अस्हाबुल मै मना (कुरआन ९०:१३-१८) किसी गरदन को ग़ुलामी से छुड़ाना, या फ़ाक़े के दिन किसी निकटवर्ती अनाथ या धूल-धूसरित मुहताज को खाना खिलाना।

ईश्वर कौन हैं? (उसकी महानता का वर्णन)

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• न तस्य प्रतिमा अस्ति (यर्जुरवेद १०:७१:४) उस परमेश्वर की कोई प्रतिमा नहीं हैं।	• लय-स कमिस्लिही शयउन (कुरआन ४२:११) संसार की कोई चीज़ उसके सदृश नहीं
• इंन्द्रं मित्रं वरूमग्निमाहु रथो दिव्यः स सुपर्णो गरूत्मान्। एकं सव्दिपा बहुधा वदन्त्यग्नि यमं मातरिश्चानमाहुः।। (ऋग्वेद११:११४:५) वह ईश्वर ही इन्द्र, मित्र, वरूण एवं आकाश में गुरूमतान है वही अग्नि, यम और मातरिश्वा है। विव्दान जन एक ब्रम्ह को ही अनेक नामों से पुकारते हैं।	•अल्मलिकुल्-कुद्दुसुरसलामुल-मुअमिनुल्-मुह्यमिनुल्-अजीजुल-जब्बारूल-मु-त-क कब्बिरू सुब्हानल्लाहि अम्मा युशरिकून हुवल्लाहुल -खालिकुल-बारिउल्-मुसव्विरू लहुल अस्माउल-हुस्ना (कुरआन ५६:२४) वह अल्लाह ही है जो सृष्टि की योजना बनानेवाला और उसको लागू करनेवाला और उसके अनुसार रूप बनानेवाला है। उसके लिए उत्तम नाम हैं। हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है उसकी तसबीह (गुणगान) कर रही है, और वह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।
• विश्वस्य मिषतो वशी (ऋग्वेद १०:१६०:२) यह सब प्राणियों को वश में रखता हैं।	• व हुवल्काहिरू फ़ौ-क् अ़िबादिही (कुरआन ६:१८) उसे अपने सेवकों पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है
• पतिर्बभूथासमो जनानमेको विश्यवस्य भवनस्य राजा। (ऋग्वेद ०६:३६:०४) वह मणुष्यों का स्वामी है जिसके समान कोई नहीं, सब लोगों का एकमात्र शासक हैं।	• जालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्मुल्कु ला इला-ह इल्ला हु-व (कुरआन ३७:५) वह जो ज़मीन और आसमानों का और तमाम उन चीज़ों का मालिक है जो ज़मीन और आसमान में हैं, और सारा पूर्वदिशाओं का मालिक।
• एकं सव्दिप्रा बहुधा वदन्त्यग्नि यमं मातरिश्वानमाहुः। (ऋग्वेद ०१:१६४:४६) वही अग्नि, यम और मातरिश्वा है, उस एक ब्रम्ह को विव्दान अनेक नामों से पुकारते हैं।	• कुलिद्उल्ला-ह अविद्उर् रह्मा-न अय्यम्-मा तद्ऊ फ्-लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना (कुरआन १७:११०) ऐ नबी, इनसे कहो, ''अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर, जिस नाम से भी पुकारो उसके लिए सब अच्छे ही नाम हैं ।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र क़ुरआन के श्लोक
• यदंग दाशुशेत्वमग्ने भद्रं करिष्यसि त्वेत तत सत्यमंगिरः(ऋग्वेद०१:०१:०६) हे परमेश्वर आप सदाचारी को अच्छा फल देते हैं यह आपकी सद्प्रवृत्ति है।	• निअ्-म-तम्-मिन् अिन्दिना कजालि-क नन्ज़ी मन् श-कर। (कुरआन १६:६७) जो व्यक्ति भी अच्छा कर्म करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, शर्त यह है कि हो वह मोमिन (ईमानवाला) उसे हम दुनिया में पवित्र जीवन-यापन कराएँगे और (परलोक में) ऐसे लोगों को उनके बदले उनके उत्तम कर्मों के अनुसार प्रदान करेंगे।
• त्वंनो अन्तम उत त्राता (ऋग्वेद०५:२४:०१) तू हमसे अत्यन्त समीप और रक्षक है।	• व नह्यु अक्-रबु इलयहि मिन् हबलिल् -वरीद (कुरआन ५०:१६) हमने इनसान को पैदा किया है और उसके दिल में उभरनेवाले वसवसों तक को हम जानते हैं। हम उसकी गरदन की रग से भी ज़्यादा उससे क़रीब हैं।
• यो मारयति प्राणयति यस्मान प्राणन्ति भुवानानि विश्वा। (अथर्ववेद१३:०३:०३) जो परमेश्वर मारता है और प्राण प्रदान करता है और जिस की कृपा से सभी जीव जीवित रहते हैं।	• अल्लाहुल्लजीख़-ल-क़कुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम् (कुरआन ३०:४०) अल्लाह ही है जिसने तुमको पैदा किया, फिर तुम्हें आजीविका दी, फिरवह तुम्हें मौत देता है, फिर वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा।
• तमेव विद्वान् नबिभाया मृत्योः (अथर्ववेद.१०:८:४४) उस आत्मा ही को जान लेने पर मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता।	• अला इन्ना औलिया अल्लाहि, ला खौफुन अलैहिम वला हुम यहूजनून (कुरआन १०.६२) सुनो! जो अल्लाह के दोस्त हैं, जो ईमान लाए और जिन्होंने ख़ुदा से डरने की नीति अपनाई, उनके लिए किसी डर और रंज का अवसर नहीं है।
• अदब्धानि वरूणस्य व्रतानि (ऋग्वेद०१:२४:१०) ईश्वर के विधान नहीं बदलते। • न किरस्य प्रभिनन्ति व्रतानी (अथर्ववेद१८:०१:०५) ईश्वर के नियम कोई नहीं बदल सकता।	• ला तब्दी-ल लिकलिमातिल्लाहि (कुरआन १०:६४) अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं। • व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला (कुरआन ४८:२३) यह अल्लाह की रीति (सुन्नत) है जो पहले से चली आ रही है और तुम अल्लाह की रीति में कोई परिवर्तन न पाओगे।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• इसे चित् तव मन्यवे वे पेते भियसा मही यदिन्द्र वज्रिन्नोजसा वृत्रं मरूत्वां अवधोरर्चन्ननु स्वराज्यम।। (अथर्ववेद०१:८०:११) हे परमेश्वर ये लोक तेरे प्रताप से कांपते है। तू अपनी प्रताड़ना से दुष्कर्मी को मारता है और सत्कर्मी के लिए अपने राज्य में सत्कार करता हुआ सुख प्रदान करता हैं।	• व लिल्लाहि माफ़िस्समावाती व माफ़िलअर्जिलि-यज्जि-यल्लजी-न असाउ बिमा अमिलू व यज्ज़ि-यल्लजी-न अह-सनू बिल्हुस्ना (कुरआन ५३:३१) और ज़मीन और आसमानों की हर चीज़ का मालिक अल्लाहही है—ताकि अल्लाह बुराई करनेवालों को उनके कर्म का बदला दे और उन लोगों को अच्छा प्रतिदान प्रदान करे जिन्होंने अच्छी नीति अपनाई है।
• यो देवष्वधि देव एक आसीत्। (ऋग्वेद१०:१२१:०८) जो समस्त देवों का एक देव है।	• उल्लाईकल्लजी-न यद्उ-न यब्तगून इला रब्बिहिमुल-वसी-ल त। (कुरआन १७:५७) जिनको ये लोग पुकारते हैं वे तो ख़ुद अपने रब के पास पहुँच प्राप्त करने का वसीला ढूँढ रहे हैं कि कौन उससे अधिक निकट हो जाए और वे उसकी दयालुता के उम्मीदवार और उसके अज़ाब से डरे हुए हैं। वास्तविकता यह है कि तेरे रब का अज़ाब है ही डरने के योग्य।
• नाब्रह्मा यज्ञ ऋधग्जोषति त्वे। (ऋग्वेद१०:१०५:०८) ब्रम्ह तत्व से हीन यज्ञ तुझे (हे परमेष्वर) तनिक भी	• फवयलुलू-लिल्मुसल्लीन अललज़ीना-हुम् अन् सलातिहिम् साहून अल्लजी-न हुम् युराऊ-न। (कुरआन १०७:४,५,६) फिर तबाही है उन नमाज़ पढ़नेवालों के लिए जो अपनी नमाज़ से ग़फ़लत बरतते हैं, जो दिखावे का काम करते हैं, और साधारण ज़रूरत की चीज़ें (लोगों को) देने से कतराते हैं।
• न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः। नोत स्ववृष्टिं अस्य युध्यत एको अन्यच्च् चकृषे विश्वमानुषक।। (ऋग्वेद०१:५२:१४) न पृथ्वी और आकाश उस परमेश्वर की व्यापकता की सीमा को पा सकते हैं और न अन्य ग्रह, और न आकाश से बरसने वाली वर्षा। उस एक के सिवाय कोई दूसरा इस जगत पर सामर्थ्य नहीं रखता।	• वलायुहीतू-नबिशैइम्मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्अर्ज। (कुरआन २:२५५) आसमानों और ज़मीन पर छाया हुआ है और उनकी देख-रेख उसके लिए कोई थका देनेवाला काम नहीं है। बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• स एक एक एकवृदेक एव। (अथर्ववेद०१:५२:१४) वह आप एक अकेला वर्तमान, एक ही है।	• कुल हुवल्लाहु अ-हद अल्लाहुस्समद (कुरआन ११२:१-२) "कह दो, वह अल्लाह है, यकता। अल्लाह निस्पृह एवं सर्वाधार है। "
• यस्यैमाः प्रदिशः (ऋग्वेद१०:१२१:०४) यह सब दिशाएं उसकी हैं।	• व लिल्लाहिल्-मशरिकु वलमगरिबु। (कुरआन २:११५) पूरब और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। जिस ओर भी तुम रुख़ करोगे, उसी ओर अल्लाह का रुख़ है। अल्लाह सर्वव्यापी और सब सुछ जाननेवाला है।
• तस्याम् सर्वा वक्षत्रा वशे चन्द्रमसा सह (ऋग्वेद१०:१२१:०४) चंद्रमा सहित यह सब नक्षत्र उसी के वश में हैं।	• व श्श्मूस वल क-म-र वन्नुजू-म मुसख़्खरातिम् -बिअम्रिही (कुरआन ७:५४) जिसने सूरज और चाँद और तारे पैदा किए, सब उसके आदेश के अधीन हैं। सावधान रहो! उसी की सृष्टि है और उसी का आदेश है।
• ऋग्वेद कहता है, 'ऐ विश्वास रखनेवालों! उसके सिवाय किसीकि भी उपासना मत करो। वही एकमेव ईश्वर हैं।' (ऋग्वेद ८:१:१) अथर्ववेद कहता है, 'ईश्वर एक है।' (अथर्ववेद १०:६:२६)	और बुहत-सा ग़नीमत कामाल उन्हें प्रदान कर दिया जिसे वे (जल्द ही) प्राप्त करेंगे। अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है। (पवित्र कुराण ४८:१६)

ईश्वर को हर चीज़ का ज्ञान है।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र क़ुरआन के श्लोक
• यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। (ऋग्वेद१०:८२:०३) जो हमारा पालक एवं उत्पन्न करने वाला है जो विधाता है वही जगत के सब स्थानों और लोगों को जानता है।	• अम्मय्यब्दउल्-खलक-सुम-म युऔदुहू व मय्यर्ज़ुकुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि। (कुरआन २७:६४) और वह कौन है जो प्रथम बार पैदा करता और फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है? और कौन तुमको आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा भी (इन कामों में हिस्सेदार) है? कहो कि लाओ अपना प्रमाण अगर तुम सच्चे हो। जो कुछ बन्दों के सामने है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उनसे ओझल है, उसे भी वह जानता है। (कुरआन २:२५५) • कुल ला यअ-लमु मन् फिस्समावाति वल्अर्जिल्गयब इल्लल्लाहु। (कुरआन २७:६५) इनसे कहो, अल्लाह के सिवा आसमानों और ज़मीन में कोई ग़ैब (परीक्षा) का ज्ञान नहीं रखता।
• र्व तद् राजा वरूणो किचष्टे यदन्तरा रोदसी यत् परस्तात (अथर्ववेद०४:१६:०५) जो आकाश और पृथ्वी के बीच है या जो कुछ उससे परे है उसे ईश्वर देखता है।	• यअ्-लमु मा यलिजु फ़िलअर्जि व मा यख़रूजु मिन्हा व मा यन्जिलु मिनस्समाइ व मा यअ-रूजु फ़ीहा। (कुरआन ५७:४) वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छह दिनों में पैदा किया और फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। उसके ज्ञान में है जो कुछ ज़मीन में जाता हैऔर जो कुछ उससे निकलता है और जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है। वह तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम हो। जो काम भी तुम करते हो उसे वह देख रहा है।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्ताते सविता धरात्तात (ऋग्वेद१०:३४:१४) संसार का सृष्टा, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे सब जगह है। विशुवतशुचक्षुरूत विश्वतोमुखो (ऋग्वेद१०:८१:०३) परमेश्वर के नेत्र हर ओर हैं, उसका मुख हर तरफ है।	• फ अयनमा तुवल्लू फ़-सम्-म वज्हुल्लाहि इन्नला-ह वासिअुन अलीम। (कुरआन २:११५) पूरब और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। जिस ओर भी तुम रुख़ करोगे, उसी ओर अल्लाह का रुख़ है। अल्लाह सर्वव्यापी और सब सुछ जाननेवाला है।
• वेद वातस्य वर्त्तनिमुरोर्ऋष्वस्य बृहतः। वेक्ष ये अध्यासते।।(ऋग्वेद०१:२५:०६) यह सब ओर फैले हुए वायु के गुणवान रास्तों को जानता है ओर उन सब चीजों को जानता है जो उस वायु पर आश्रित हैं।	• व हुवल्लजी अर्स-लरीया-ह बुश्रम्-बय-न यदय रह्मतिही। (कुरआन २५:४८) और वही है जो अपनी दयालुता के आगे-आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी बनाकर बेजता है।
• यो विश्वामि वि पश्यति भवना संच पश्चति। (ऋग्वेद१०:१८७:०४) वह ईश्वर सारे जगत को भली प्रकार जानता है।	• वल्लाहु यअ्-लमु मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि वल्लाहु बिकुल्लि शयइम्न् अलीम। (कुरआन ४६:१६) अल्लाह ज़मीन और आसमानों की प्रत्येक चीज़ को जानता है और हर चीज़ का ज्ञान रखता है।
• यस्तिष्ठति वरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतंकम। व्दौ संनिष यन्मन्त्रयेते राजातद् वेद वरूणस्तृतीयः।। (अथर्ववेद ४:१६: २) जो खड़ा होता है, चलता है, जो धोखा देता है, जो छिपता फिरता है, जो दुसरे को कष्ट पहुंचाता है, जो दो मनुष्य खुफिया बात करते है, तीसरा ईश्वर इन सबको जानता है।	• यअ-लमु सिर्रकुम् व जह-रकुम् व यअ--लमु मा तक्सिबून। (कुरआन ६:३) वही एक अल्लाह आसमानों में भी है और ज़मीन में भी, तुम्हारे खुले और छिपे सब हाल जानता है और जो बुराई या भलाई तुम कमाते हो उससे ख़ूब परिचित है।
• वेद नाव समुद्रियः (अथर्ववेद १:२५:७) वह समुद्र की नौकाओं को जानता है।	• अ-लम् त-र अन्नल्फ़ुल-क तज्री फ़िल्बहरि बिनिअ-मतिल्लाहि। (कुरआन ३१:३१) क्या तुम देखते नहीं हो कि नौका समुद्र में अल्लाह के अनुग्रह से चलती है

सृष्टी का निर्माण

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• जनं मनुजातं। (ऋग्वेद १:४५:१) सब मनु की संतान हैं।	• या अय्युहन्नासु इन्ना ख़-लक़्नाकुम् मिन् ज-करिंव-व उन्सा (कुरआन ४६:१३) लोगो, हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया।
• प्रजा पतिर्जनयति प्रजा इमाः (अथर्ववेद ७:१६:१) परमेश्वर इन सब सृष्टियों को उत्पन्न करता है।	• व ख़-ल-क़ कुल्-ल शयइन (कुरआन २५:२) जिसने हर चीज़ को पैदा किया
• सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णा दस्कम्भने सविता द्यामदृहत्। (ऋग्वेद १०:१४४:१) परमेश्वर ने अपने यंत्रो से पृथ्वी को नियन्त्रित किया और सहारे के बिना, आकाश को अधर में स्थापित किया। (बिना आधार के आकाश स्थापित किया।)	• ख-ल-कस्समावाति बिगयरि अ-मदिन् तरौनहा व अल्का फिल् अर्ज़िरवासि-य अन् तमी-द बिकुम (कुरआन ३१:१०) उसने आसमानों को पैदा किया बिना स्तंभों के जो तुम्हें नज़र आएँ। उसने ज़मीन में पहाड़ जमा दिए ताकि वह तुम्हें लेकर ढुलक न जाए।
• व्दिता विव्रे सनजा सनीडे अयास्यः स्तवमानेभिरर्कैः। भगो न मेने परमे व्योमन्नधारयद रोदसी सुदंसाः ।। (ऋग्वेद १:१६२:७) ऋषियों के द्वारा परमेश्वर ने परस्पर जुड़े हुए प्राचीन आकाश और पृथ्वी को पृथक-पृथक किया। फिर उत्तम कर्म वाले ने सुर्य के समान उन दोनों को स्थित किया।	• अ-व लम य-रल्लजी-न क-फ़रू अन्नस्-समावाति वलअर्-ज कानता रत्-कन् फ़-फ़तक्ना्हुमा (कुरआन २१:३०) क्या वे लोग जिन्होंने (नबी की बात मानने से) इनकार कर दिया है विचार नहीं करते कि ये सब आसमान और ज़मीन परस्पर मिले हुए थे, फिर हमने इन्हें अलग किया, और पानी से हर ज़िन्दा चीज़ पैदा की? क्या वे (हमारे इस रचनाकार्य की कुशलता को) नहीं मानते?
• ब्रम्हा भूमिर्विहिता ब्रम्ह द्यौरूत्तरा हिता। ब्रम्हे दमृर्ध्व तिर्यक् चान्तरिक्ष व्यचो हितम।। (ऋग्वेद १०:२:२५) ब्रम्ह व्दारा ही इस पृथ्वी की रचना की गई और ब्रम्ह द्वारा ही लोक (आकाश) ऊंचा धरा गया और ब्रम्ह ही ने ऊपर सब ओर विस्तृत अंतरिक्ष की रचना की है।	• वल-इन्-स-अल्तहुम् मन् ख-ल-कस्समावाति वल -अर्-ज व सख्स-रश्शम्-स वलक-म-र ल-यकूलुन्नल्लाहु फ-अन्ना युअ-फकून (कुरआन २६:६१) अगर तुम इन लोगों से पूछो कि ज़मीन और आसमानों को किसने पैदा किया है और चाँद और सूरज को किसने वशीभूत कर रखा है तो ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह ने, फिर ये किधर से धोखा खा रहे हैं?

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• अहोरात्राणि विदघद् विश्वस्य मिषतो वशी। (ऋग्वेद १०:१९०:२) समस्त सृष्टी पर सामर्थ्य रखने वाले स्वामी ने दिन और रात का भेद स्थापित किया।	• अ-लमृत-र अन्नल्ला-ह यूलिज़ुल्लय-लफ़िन्नहारी व यूलिजुन्नहा-रफ़िल्लयलि व सखूखरश्शम्-स वल्क्-म-र कुल्लंय्यजरी इला अ-जलिम्-मुसम्मंव् (कुरआन ३१:२९) क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है और दिन को रात में? उसने सूरज और चाँद को वशीभूत कर रखा है, सब एक नियत समय तक चले जा रहे हैं, और (क्या तुम नहीं जानते कि) जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है?

मानवजाती को ईश्वर का आदेश

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• ऋतस्य पथा नमसा विवासेत (ऋग्वेद१०:३१:०२) मनुष्य सत्य के मार्ग पर विनम्रता पूर्वक चले।	• इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन् का न- मुख़्तालन फ़ख़ूरा (कुरआन ४:३६) यक़ीन जानो, अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो डीगें मारनेवाला हो और अपनी बड़ाई पर गर्व करे।
• सुगा ऋतस्य पन्थाः (ऋग्वेद०८:३१:१३) सत्य का मार्ग आसान है।	• मा अन्ज़ल्ला अलैकल-कुर्आ-न लितश्का (कुरआन २०:२) हमने यह क़ुरआन तुमपर इसलिए अवतरित नहीं किया है कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ।
• दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्या नृते प्रजापतिः। अश्रद्धा मनृतो अदधाच्छ्द्धॉं सत्ये प्रतापतिः। (यजुर्वेद१६:७७) परमेश्वर ने सत्य और मिथ्या के रूप को अपनी ज्ञान दृष्टि से अलग अलग कर दिया और आदेश दिया कि सत्य में आस्था लाओं और मिथ्या को ठुकरा दो।	• कत्तबय्यनर्रुश्दु मिनल्गय्यि-फ-मंय्यकफ़ुर बित्तागूति व युअ्मिम-बिल्लाहि फ्-कदिस्तम्-स-क बिल्-अुर्वतिल्-वुस्का (कुरआन २:२५६) दीन के मामले में कोई ज़ोर-जबरदस्ती नहीं। सही बात ग़लत विचारों से अलग छाँटकर रख दी गई है। अब जिस किसी ने बढ़े हुए फ़सादी का इनकार करके अल्लाह को माना, उसने एक ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं और अल्लाह (जिसका सहारा उसने लिया है) सब कुछ सुननेवाला और जाननेवाला है।
• नू नव्यसे नीवयसे सूक्ताय साधया पथः। प्रत्नवद रोचया रूचः।। (ऋग्वेद६:६:८) तू दिन-प्रतिदिन नए और उससे भी नूतनंतर सुभाषित के लिए रास्ता बना और उस रास्ते को ऐसा प्रकाश का बना जैसे तुझसे पहले ऋषि बनाते आए हैं।	• वल् तकुम मिन्कुम उम्मतुन् यदअूना इलल् खैरि। वयअमुरूना बिल मअरूफि व यन हवूना अनिल मुन्करी व अूलाइका हुमुल मुफ़्लिहून(कुरआन ३:१०४) तुम में कुछ लोग तो ऐसे अवश्य ही रहने चाहिएँ जो नेकी की ओर बुलाएँ, भलाई का आदेश दें, और बुराइयों से रोकते रहें। जो लोग ये काम करेंगे वही सफल होंगे।
• न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः (यजुर्वेद४:३३:११) बिना परिश्रम किए देवताओं की मैत्री नहीं मिलती।	• अम् हसिब्तुम् अन् तद्खुलल-जन्न-त व लम्मा यअ् लमिल्लाहुल्लजी-न जाहदू मिन्कुम व यअ-ल-मस्साबिरीन (कुरआन ३:१४३) तुम तो मौत की तमन्नाएँ कर रहे थे! मगर यह उस समय की बात थी जब मौत सामने न आई थी, लो अब वह तुम्हारे सामने आ गई और तुमने उसे आँखों से देख लिया।

सामाजीक नियम

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• मा भ्रातरं व्दिक्षन्मा स्वसारमृत स्वसा। सम्यग्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया। (अथर्ववेद३:३०:३) भाई, भाई से और बहन, बहन से व्देष न करें। एक मन और गति वाले होकर मंगलमयी बात करें।	• या आय्युहल्लजिना आमनू ला यस्खर् कवमुम्-मिन्-कवमिन् असा अंय्यकूनू खयरूकुम मिन्हूम् व ला निसाउम्-मिन् निसाइन् असा अंय्यकूनू खयरूकुम मिन्हून-न व ला तल्मिजू अन्फुस कुम व ला न तनाबजू बिल्-अल्काबि बिअ-स-लिस्मुल-फुसूक बअ-दल-ईमानि व मल्लन् यतुब फ-उलाइ-क हुमुज्जालिमून (कुरआन ४९:११) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, न मर्द दूसरे मर्दों की हँसी उड़ाएँ, हो सकता है कि वे उनसे अच्छे हों, और न औरतें दूसरी औरतों की हँसी उड़ाएँ, हो सकता है कि वे उनसे अच्छी हों। आपस में एक दूसरे पर व्यंग्य न करो और न एक दूसरे को बुरी उपाधि से याद करो। ईमान लाने के बाद दुराचार में नाम पैदा करना बहुत बुरी बात है। जो लोग इस नीति से बाज़ न आएँ वे ज़ालिम हैं।
• अन्वार भेथामनुसरं भथामेतं लोकं श्रद्‌दधानाः सचन्ते। (अथर्ववेद६:१२२:३) श्रद्धा वाले लोग परलोक का ध्यान रखते हुए सत्‌कर्मों को निरन्तर मिलकर करते रहें।	• अ-रज़ीतुम् बिल्-हयातिद्दुन्या मिनल् आख़िरति फ़-मा मताउल् हयातिद् दुन्या फ़िल् आख़िरति इल्ला क़लील (कुरआन ९:३८) क्या तुमने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया? ऐसा है तो तुम्हें मालूम हो कि दुनिया का ज़िन्दगी की यह सब सामग्री परलोक (आख़िरत) में बहुत थोड़ी निकलेगी।
• सहृदय सांमनस्यनविव्देषं कृणोमि वः। अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।। (अथर्ववेद३:३०:१) मैं तुम्हारे लिए हार्दिक एकता, एकमनता और व्देष रहित भाव निर्धारित करता हूँ, परस्पर प्रेम रखो जैसे; गौ अपने बछड़े से प्रेम करती है।	• व-ला तस्तविल्-ह-स-नतु व लस्सय्यिअतु इद्फअ-बिल्लती हि-य अहसनु फ-इजल्लजी बय-न-क व बयनहू अदावतून क-अन्नहु वलिय्युन हमीम (कुरआन ४१:३४) और ऐ नबी! भलाई और बुराई समान नहीं हैं। तुम बुराई को उस नेकी से दूर करो जो बेहतरीन हो। तुम देखोगे कि तुम्हारे साथ जिसका बैर पड़ा हुआ था, वह जिगरी दोस्त बन गया है।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः। अन्यौ अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान् वः संमनस्कृणोमि।।। (अथर्ववेद३:३०:१) तुम बड़ो का मान रखने वाले, उत्तम चित्त वाले, मित्रता पूर्वक एक जुट होकर चलते हुए छिन्न भिन्न न हो, परस्पर सुन्दर वचन कहते हुए आओ। मैं तुम्हें एक व गति वाले करता हुँ।	• व बिल वालिदैनि एह्सानन् व जिल् कुर्बा वल यतामा वल् मसाकीनि। व कूलु लिन्नासि हुस्ना (कुरआन २:८३) माँ-बाप के साथ, नातेदारों के साथ, अनाथों और दीन-दुखियों के साथ अच्छा व्यवहार करना, लोगों से भली बात कहना,
• समानं मन्त्रमभि मन्त्रेये वः (अथर्ववेद-१०:१६१:३) मैं तुम सबको समान मन्त्र से अभिमन्त्रित करता हूँ।	• ष-र-आ लकुम मिनद्दीन मा वस्सा बिहि नुहंव वल्लजी औहैना इलैका वमा वस्सैना बिहि इब्राहीमा व मूसा व ईसा। अन अकीमुद्दीना वला त-त-फर्रकू फीह्। (कुरआन ४२:१३) उसने तुम्हारे लिए धर्म की वही पद्धति नियत की है जिसका आदेश उसने नूह को दिया था और जिसे (ऐ मुहम्मद) अब तुम्हारी ओर हमने प्रकाशना (वही) के द्वारा भेजी है और जिसका आदेश हम इब्राहीम और मूसा और ईसा को दे चुके हैं, इस ताकीद के साथ कि क़ायम करो इस दीन (धर्म) को और इसमें अलग-अलग न हो जाओ।

नारीजाती को ईश्वर का आदेश

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र क़ुरआन के श्लोक
• अनुब्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु संमनाः। (अथर्ववेद-३:३०:२) पुत्र पिता का अनुगत हो और माता के साथ एक मन वाला हो।	• बिल्-वालिदयनि इहसानन् इम्मा यब्लुगन्-न अिन्दकल्-कि-ब-रअ-हदुहुमा अव किलाहुमा फला तकुल्लहुमा उफ्फिंव-व ला तन्हरहुमा व कुल्लहुमा कवलन् करीमा। (कुरआन १७:२३) तेरे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि : तुम लोग किसी की बन्दगी न करो, मगर सिर्फ़ उसकी। माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो, अगर तुम्हारे पास उनमें से कोई एक या दोनों बूढ़े होकर रहें तो उन्हें उफ़ (धिक) तक न कहो, न उन्हें झिड़ककर जवाब दो, बल्कि उनसे आदर के साथ बात करो।
• जाया पत्ये मधुर्तीं वाचं वदतु शन्तिवाम्। (अथर्ववेद-३:३०:२) पत्नि पती से मीठी मधुर वाणी बोलने वाली हो।	• व मिन् आयतिहि अन् ख-ल्-लकुम मिन् अन्फुसिकुम अज्-वाजला-लतस्कुन् इलयहा व ज-अ-ल बयनकुम म-वद्-द-तंव व रह-म-तन् (कुरआन ३०:२१) और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही सहजाति से बीवियाँ बनाई ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो और तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा कर दी।
• अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर। मा ते काशप्लकौ दृशन स्त्री हि ब्रम्हा बभूविथ।। (ऋग्वेद-८:३३:१८) जब स्त्री ही पुरूष बन गई हो अर्थात जब पुरूश के समान घर से निकले तो नीचे देख उपर नहीं। दोनों पावों को समेट कर चल कि तेरे निम्नांग नजर न आएं।	• वकुल्लिल्-मुअमिनाति यग्-जुजु-न मिन् अब्सारिहीन-न व यह-फझन फुरूजहुन-न वला युब्दी-न ज़ी-न-तहुन (कुरआन २४:३१) और ऐ नबा! ईमानवाली औरतों से कह दो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें, और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें और अपना बनाव-शृंगार न दिखाएँ सिवाय उसके जो ख़ुद ही ज़ाहिर हो जाए और अपने सीनों (वक्षस्थलों) पर अपनी ओढ़नियों के आँचल डाले रहें।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र क़ुरआन के श्लोक
• उदीर्ष्व नायैभि जीवलोक गतासुमेतमुप शेष एहि। हस्त ग्रास्भस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूय। (अथर्ववेद-१८:३:२) हे विधवा नारी! जीवित समाज की ओर उठकर चल। इस मृतक के सहारे तू पड़ी है। आ अब अपना हाथ वीर्यदाता नए पति की संतान को यथावत प्राप्त हो।	• फ इजा ब-लग़्-न अ-ज-लहुन-न फ-ला जुना-ह अलयकुम् फीमा फ-अल-न फी अन्फ़ुसिहिन्-न बिल्मअरूफि (क़ुरआन २:२३४) तुममें से जो लोग मर जाएँ, उनके पीछे अगर उनकी पत्नियाँ ज़िन्दा हों, तो वे अपने आपको चार महीने, दस दिन रोके रखें। फिर जब उनकी अवधि (इद्दत)पूरी हो जाए, तो उन्हें अधिकार है अपने विषय में सामान्य रीति से जो चाहें, करें।
• वेदाहमेतं पुरूष महान्तमादित्यवर्ण तमसः परस्तात्। (यर्जुरवेद-३१:१८) अहमद वेद ब्रम्हज्ञान है, महानतम पुरूष है सूर्यरूप दीप्तिमान, अंधकार को परास्त करने वाला है।	• व मुबश्शिरन बि रसूलिन याति मिम बअ्दी इस्महू अहमद (क़ुरआन ६१.६ और याद करो मरयम के बेटे ईसा की वह बात जो उसने कही थी कि "ऐ इस्राईल के बेटो, मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ, पुष्टि करनेवाला हूँ उस तौरात की जो मुझसे पहले आई हुई मौजूद है, और ख़ुशख़बरी देनेवाला हूँ एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, जिसका नाम अहमद होगा।'
	• या अय्युहन्नबियु इन्ना अर्सनलनाक शाहिदंव-व मुबश्शिरंव्- व नज़ीरा व दाअियन् इलल्लाही बिइज्निही व सिराजम्-मुनीरा (क़ुरआन ३३:४५:४६) नबी! हमने तुम्हें भेजा है गवाह बनाकर, ख़ुशख़बरी देनेवाला और डरानेवाला बनाकर, अल्लाह की अनुमति से उसकी ओर निमंत्रण देनेवाला बना कर। व युखरिजुहुम् मिनज्जुलुमाति इलन्नूरि बिइज़्निहि (क़ुरआन ५:१५) अल्लाह उन लोगों को जो उसकी प्रसन्नता के इच्छुक हैं सलामती की राहें बताता है और अपनी अनुमति से उनको अंधेरों से निकालकर उजाले की ओर लाता है ।
• इदं जरा उप श्रुत नराशंस स्तविष्यते। (अथर्ववेद-२०:१२७:१) नराशंस की सब लागों की ओर से प्रशंसा की जाएगी।	• व रफाना लका जिक रका। (क़ुरआन ६४:४) और तुम्हारे लिए तुम्हारी ध्वनि ऊंची कर दी।

Books written by Mr. Q.S. Khan

Sr. No.	Name of Books with their links to download (free of cost)	Book Type
Management Books		
1.	**Law of Success for both the worlds** http://www.scribd.com/doc/37987436/Law-of-Success-for-both-the-Worlds-English	Printed and E-Book
2.	**Yashachi Gurukilli** (Marathi translation by Sushil S. Limay) http://www.scribd.com/doc/19486457/Yashachi-GurukilliComplete-Marathi	
3.	**Safalta ke Sutra** (Hindi Translation by Dr. Vimla Malhotra) Not uploaded yet	E-Book
4.	**How to proper Islamic way** Vol. 1:- http://www.scribd.com/doc/37932859/How-to-prosper-Islamic-Way-Vol-1 Vol. 2:- http://www.scribd.com/doc/46098862/How-to-Prosper-Islamic-Way-Vol-2	Printed and E-Book
Engineering E-Books: (Books will be re-printed in 2012)		
5.	**Vol.1-Introduction to Hydraulic Presses and press body.** http://www.scribd.com/doc/17599574/Volume1-Introduction-to-Hydraulic-Presses	E-Book
6.	**Vol.2-Design and Manufacturing of Hydraulic cylinders.** http://www.scribd.com/doc/17375627/Volume2-Design-and-Manufacturing-of-Hydraulic-Cylinders	E-Book
7.	**Vol.3-Study of Hydraulic Valves, Pumps and Accumulators.** http://www.scribd.com/doc/17527393/Volume3-Study-of-Hydraulic-Valves-Pumps-and-Accumulators	E-Book
8.	**Vol.4-Study of Hydraulic Accessories** http://www.scribd.com/doc/17599472/Volume4-Study-to-Hydraulic-Accessories	E-Book
9.	**Vol.5-Study of Hydraulic Circuit** Not uploaded yet	E-Book
10.	**Vol.6-Study of Hydraulic Seals, Fluid Conductor, and Hydraulic Oil.** http://www.scribd.com/doc/17742753/Volume6-Hydraulic-Seals-Fluid-Conductor-and-Hydraulic-Oil	E-Book
11.	**Vol.7-Essential knowledge required for Design and Manufacturing of Hydraulic Presses.** http://www.scribd.com/doc/18996385/Volume7-Essential-Knowledge-Required-for-Design-and-Manufacturing-of-Hydraulic-Presses	E-Book

Religious Books:		
	12. Hajj. Journey Problems and their easy Solutions. http://www.scribd.com/doc/8966044/Hajj-Guide-Book-English-PDF	Printed and E-Book
13.	**Safar-e-Haj ki Mushkilat aor unka mumkin Hal (Urdu)** http://www.scribd.com/doc/7949973/Hajj-Guide-Book-Urdu	Printed and E-Book
14.	**Safar-e-Haj ki Mushkilat aor unka mumkin Hal (Hindi)** Transliteration by Khalid Shaikh http://www.scribd.com/doc/15223840/Hajj-Guide-Book-Hindi	Printed and E-Book
15.	**Safar-e-Haj ki Mushkilat aor unka mumkin Hal (Gujarati)** Transliteration by Jamal Qureshi http://www.scribd.com/doc/8965793/Hajj-Guide-Book-Gujarati	E-Book
16.	**Safar-e-Haj ki Mushkilat aor unka mumkin Hal (Bengali)** Translated by Shaikh Qasim http://www.scribd.com/doc/8997495/Hajj-Guide-Book-Bengali	E-Book
17.	**Teachings of Vedas and Quran** http://www.scribd.com/doc/18753559/Teachings-of-Vedas-and-Quran	Printed and E-Book
18.	**Pavitra Ved aur Islam Dharm (Hindi)** Very soon it will be uploaded	Printed and E-Book
19.	**Kya har Mah Chand dekhna Zaroori hai? (Urdu)** http://www.scribd.com/doc/40483163/Kya-Har-Maah-Chaand-Dekhna-Zaroori-Hai	E-Book
20.	**Holy Quran in Roman Urdu** http://www.scribd.com/doc/31660372/Holy-Quran-in-Roman-Urdu-Surah-Baqara-The-Cow	E-Book
21.	**How the Universe was created?** http://www.scribd.com/doc/65050005/How-the-Universe-Was-Created	E-Book
22.	**Agni Kaun? Paigambar ya parmeshwar? (Hindi)** http://www.scribd.com/doc/65049788/Agni-Kaun	E-Book
23.	**Who is Agni? Prophet or Parmeshwar?** http://www.scribd.com/doc/65762146/Who-is-Agni-Prophet-or-Parmeshwar	E-Book

1. E-books could be downloaded free of cost from www.scribd.com or www.freeeducation.co.in
2. Books “Law of success for both the worlds” and “Yashachi Gurukilli” are available all over India in cross world book stores at cost of Rs. 150/- and Rs. 140/- respectively.
3. Outside India “Law of success for both the worlds” could be purchased online from amazone.com at 28 U.S Dollar.
4. All the seven volumes of engineering book will be printed as single handbook with title, "Design and manufacturing of hydraulic press" and will cost Rs. 1000/- only
5. Visit **www.freeeducation.co.in** to read and free download many more books.

Books Written By Mr. Q.S. Khan

Management Books
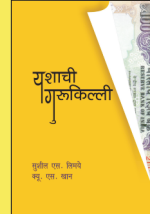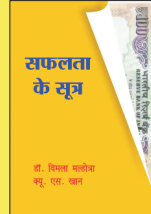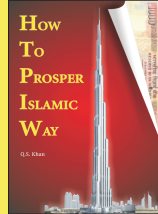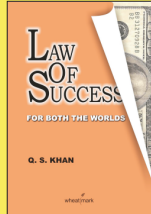
Hindi Translation of "Law of success for both the worlds" By Dr. Vimla Malhotra

Marathi Translation of "Law of success for both the worlds" By Mr. Sushil S. Limye

Engineering Books
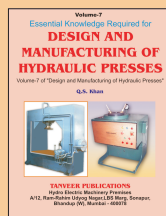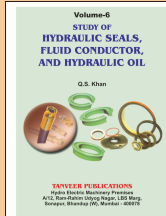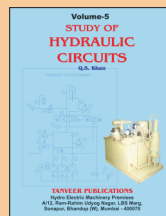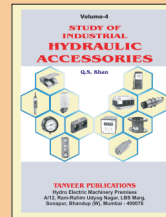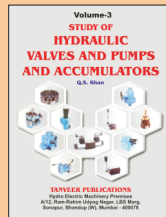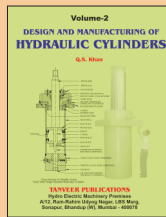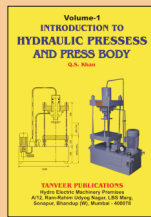
Religious Books
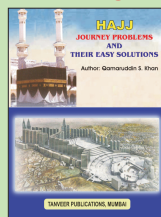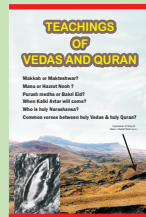
TANVEER PUBLICATION

Hydro Electric Machinery Premises, A/13, Ram-Rahim Udyog Nagar, Bus stop Lane, L.B.S. Road,Sonapur, Bhandup (w) Mumbai - 400078.

Email: hydelect@vsnl.com / hydelect@mtnl.net.in

Website: www.tanveerpublication.com, www.freeeducation.co.in